04 - गांधी के विरुद्ध आरोपों का उत्तर देश को देना है

05 - अपने-अपने महात्मा : साध्य साधन की शुचिता, सत्य और अहिंसा

A Daily News Magazine
भोपाल
गुरुवार, 02 अक्टूबर, 2025

06 - भव्य आतिशबाजी के साथ किला मैदान पर होगा रावण दहन

07 - स्वयंसेवकों के परिश्रम, त्याग, समर्पण और सेवा की कमाई है यह सिक्का

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 35, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ : राष्ट्र साधना के 100 वर्ष

नरेन्द्र मोदी
(प्रधानमंत्री, भारत सरकार)

100 वर्ष पूर्व विजयादशमी के महापर्व पर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना हुई थी। ये हजारों वर्षों से चली आ रही उस परंपरा का पुर्नस्थापन था,जिसमें राष्ट्र चेतना समय-समय पर उस युग की चुनौतियों का सामना करने के लिए,नए-नए अवतारों में प्रकट होती है। इस युग में संघ उसी अनादि राष्ट्र चेतना का पुण्य अवतार है। ये हमारी पीढ़ी के स्वयंसेवकों का सौभाग्य है कि हमें संघ के शताब्दी वर्ष जैसा महान अवसर देखने मिल रहा है। मैं इस अवसर पर राष्ट्रसेवा के संकल्प को समर्पित कोटि-कोटि स्वयंसेवकों को शुभकामनाएं देता हूं। मैं संघ के संस्थापक, हम सभी के आदर्शज्परम पूज्य डॉ. हेडगेवार जी के चरणों में श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। संघ की 100 वर्षों की इस गौरवमयी यात्रा की स्मृति में भारत सरकार ने विशेष डाक टिकट और स्मृति सिक्के भी जारी किए हैं।

जिस तरह विशाल नदियों के किनारे मानव सभ्यताएं पनपती हैं, उसी तरह संघ के किनारे भी सैकड़ों जीवन पुष्पित-पल्लवित हुए हैं। जैसे एक नदी जिन रास्तों से बहती हैं, उन क्षेत्रों को अपने जल से समृद्ध करती हैं, वैसे ही संघ ने इस देश के हर क्षेत्र, समाज के हर आयाम को स्पर्श किया है। जिस तरह एक नदी कई धाराओं में खुद को प्रकट करती है, संघ की यात्रा भी ऐसी ही है। संघ के अलग-अलग संगठन भी जीवन के हर पक्ष से जुड़कर राष्ट्र की सेवा करते हैं। शिक्षा, कृषि, समाज कल्याण, आदिवासी कल्याण,महिला सशक्तिकरण, समाज जीवन के ऐसे कई क्षेत्रों में संघ निरंतर कार्य करता रहा है। विविध क्षेत्र में काम करने वाले हर संगठन का उद्देश्य एक ही है, भाव एक ही है....राष्ट्र प्रथम

अपने गठन के बाद से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ राष्ट्र निर्माण का विराट उद्देश्य लेकर चला। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए संघ ने व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण रास्ता चुना और इस चलने के लिए जो कार्यपद्धति चुनी वो थी नित्य-नियमित चलने वाली शाखाएं। संघ शाखा का मैदान, एक ऐसी प्रेरणा भूमि है, जहां से स्वयंसेवक की अहम् से वयं की यात्रा शुरू होती है। संघ की शाखाएंव्यक्ति निर्माण की यज्ञवेदी हैं।

राष्ट्र निर्माण का महान उद्देश्य, व्यक्ति निर्माण का स्पष्ट पथ और शाखा जैसी सरल, जीवंत कार्यपद्धति यही संघ की सौ वर्षों की यात्रा का आधार बने। इन्हीं स्तंभों पर खड़े होकर संघ ने लाखों स्वयंसेवकों को गढ़ा, जो विभिन्न क्षेत्रों में देश को आगे बढ़ा रहे हैं।

संघ जब से अस्तित्व में आया, संघ के लिए देश की प्राथमिकता ही उसकी अपनी प्राथमिकता रही। आज़ादी की लड़ाई के समय परम पूज्य डॉ. हेडगेवार जी समेत अनेक कार्यकर्ताओं ने स्वतंत्रता आंदोलन में हिस्सा लिया, डॉ. साहब

कई बार जेल तक गए। आजादी की लड़ाई में कितने ही स्वतंत्रता सेनानियों को संघ संरक्षण देता रहा, उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करता रहा। आजादी के बाद भी संघ निरंतर राष्ट्र साधना में लगा रहा। इस यात्रा में संघ के खिलाफ साजिशें भी हुईं, संघ को कुचलने का प्रयास भी हुआ। ऋषितुल्य परम पूज्य गुरु जी को झूठे केस में फंसाया गया। लेकिन संघ के स्वयंसेवकों ने कभी कटुता को स्थान नहीं दिया। क्योंकि वो जानते है, हम समाज से अलग नहीं हैं, समाज हमसे ही तो बना है। समाज के साथ एकात्मता और संवैधानिक संस्थाओं के प्रति आस्था ने संघ के स्वयंसेवकों को हर संकट में स्थित प्रज्ञ रखा है, समाज के प्रति संवेदनशील बनाए रखा है।

प्रारंभ से संघ, राष्ट्रभक्ति और सेवा का पर्याय रहा है। जब विभाजन की पीड़ा ने लाखों परिवारों को बेघर कर दिया, तब स्वयंसेवकों ने शरणार्थियों की सेवा की। हर आपदा में संघ के स्वयंसेवक अपने सीमित संसाधनों के साथ सबसे आगे खड़े रहते रहे। यह केवल राहत नहीं थी, यह राष्ट्र की आत्मा को संबल देने का कार्य था। खुद कष्ट उठाकर दूसरों के दुख हरना...ये हर स्वयंसेवक की पहचान है। आज भी प्राकृतिक आपदा में हर जगह स्वयंसेवक सबसे पहले पहुंचने वालों में से एक रहते हैं।

अपनी 100 वर्षों की इस यात्रा में, संघ ने समाज के अलग-अलग वर्गों में आत्मबोध जगाया, स्वाभिमान जगाया। संघ देश के उन क्षेत्रों में भी कार्य करता रहा है..जो दुर्गम हैंज्जहाँ पहुँचना सबसे कठिन है। संघ...दशकों से आदिवासी परंपराओं, आदिवासी रीति-रिवाज, आदिवासी मूल्यों को सहेजने-संवारने में अपना सहयोग देता रहा है...अपना कर्तव्य निभा रहा है। आज सेवा भारती...विद्या भारती, एकल विद्यालय... वनवासी कल्याण आश्रम...आदिवासी समाज के सशक्तिकरण का स्तंभ बनकर उभरे हैं।

समाज में सदियों से घर कर चुकी जो बीमारियाँ हैं, जो ऊंच-नीच की भावना है, जो कुप्रथाएं हैं, ये हिन्दू समाज की बहुत बड़ी चुनौती रही हैं। ये एक ऐसी गंभीर चिंता है, जिस पर संघ लगातार काम करता रहा है। डॉ. साहब से लेकर आज तक, संघ की हर महान विभूति ने, हर सर-संघचालक ने भेदभाव और छुआछूत के खिलाफ लड़ाई लड़ी है। परम पूज्य गुरु जी ने निरंतर न हिन्दू पतितो भवेत्' की भावना को आगे बढ़ाया। पूज्य बाला साहब देवरस जी कहते थे- छुआछूत अगर पाप नहीं, तो दुनिया में कोई पाप नहीं ! सरसंघचालक रहते हुए पूज्य रज्जू भैया जी और पूज्य सुदर्शन जी ने भी इसी भावना को आगे बढ़ाया। वर्तमान सरसंघचालक आदरणीय मोहन भागवत जी ने भी समरसता के लिए समाज के सामने एक कुआं, एक मंदिर और एक श्मशान का स्पष्ट लक्ष्य रखा है।

जब 100 साल पहले संघ अस्तित्व में आया था तो उस समय की आवश्यकताएं, उस समय के संघर्ष कुछ और थे। लेकिन आज 100 वर्षों बाद जब भारत विकसित होने की तरफ बढ़ रहा है तब आज के समय की चुनौतियां अलग हैं, संघर्ष अलग हैं। दूसरे देशों पर आर्थिक निर्भरता, हमारी एकता को तोड़ने की साजिशें, डेमोग्राफी में बदलाव के षड्यंत्र, हमारी सरकार इन चुनौतियों से तेजी से निपट रही है। मुझे ये खुशी है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने भी इन चुनौतियों से निपटने के लिए ठोस रोडमैप भी बनाया है।संघ के पंच परिवर्तन, स्व बोध, सामाजिक समरसता, कुटुम्ब प्रबोधन, नागरिक शिष्टाचार और पर्यावरण ये संकल्प हर स्वयंसेवक के लिए देश के समक्ष उपस्थित चुनौतियों को परास्त करने की बहुत बड़ी प्रेरणा हैं।

स्व बोध की भावना का उद्देश्य गुलामी की मानसिकता से मुक्त होकर अपनी विरासत पर गर्व और स्वदेशी के मूल संकल्प को आगे बढ़ाना है। सामाजिक समरसता के जरिए वंचित को वरीयता देकर सामाजिक न्याय की स्थापना का प्रण है। आज हमारी सामाजिक समरसता को घुसपैठियों के कारण डेमोग्राफी में आ रहे बदलाव से भी बड़ी चुनौती मिल रही है। देश ने भी इससे निपटने के लिए डेमोग्राफी मिशन की घोषणा की है। हमें कुटुम्ब प्रबोधन यानी परिवार संस्कृति और मूल्यों को भी मजबूत बनाना है। नागरिक शिष्टाचार के जरिए नागरिक कर्तव्य का बोध हर देशवासी में भरना है। इन सबके साथ अपने पर्यावरण की रक्षा करते हुये आने वाली पीढ़ियों के भविष्य को सुरक्षित करना है।

अपने इन संकल्पों को लेकर संघ अब अगली शताब्दी की यात्रा शुरू कर रहा है। 2047 के विकसित भारत में संघ का हर योगदान, देश की ऊर्जा बढ़ाएगा, देश को प्रेरित करेगा। पुनः प्रत्येक स्वयंसेवक को बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

संघ के पास है डेमोग्राफी में बदलाव रोकने का रोडमैप

- आरएसएस के शताब्दी समारोह में पीएम मोदी का संबोधन
- पीएम बोले-घुसपैठियों से चुनौती मिल रही, सतर्क रहना है

नई दिल्ली (एजेंसी)। पीएम मोदी ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी समारोह में बुधवार को कहा, संघ के स्वयंसेवकों ने कभी कटुता नहीं दिखाई। चाहे प्रतिबंध लगे, या साजिश हुई हो। सभी का मंत्र रहा है कि जो अच्छा है, जो कम अच्छा, सब हमारा है। उन्होंने इस मौके पर आरएसएस के योगदान को दर्शाने वाला स्मारक डाक टिकट और सिक्का भी जारी किया। उन्होंने कहा कि संघ के स्वयंसेवक जो लगातार देश सेवा में जुटे हैं। समाज को सशक्त कर रहे हैं, इसकी भी झलक इस डाक टिकट में है। मैं इसके लिए देश को बधाई देता हूं। डाक टिकट पर राष्ट्र सेवा के 100 वर्ष (1925-2025) लिखा है। सिक्के पर एक तरफ 100, सत्यमेव जयते और भारत/इंडिया लिखा है। दूसरी तरफ, भारत माता और संघ कार्यकर्ताओं की आकृति उकेरी गई है। साथ में लिखा है राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के 100 वर्ष।

पहली बार मुद्रा पर भारत माता की तस्वीर

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की गौरवशाली 100 वर्षों की यात्रा के उपलक्ष्य में, भारत सरकार ने एक विशेष डाक टिकट और एक

स्मारक सिक्का जारी किया है। 100 रुपये के इस सिक्के पर एक ओर राष्ट्रीय प्रतीक चिह्न अंकित है और दूसरी ओर सिंह के साथ वरद मुद्रा में भारत माता की भव्य छवि अंकित है, जबकि स्वयंसेवकों को भक्ति और समर्पण भाव से उनके समक्ष नतमस्तक दिखाया गया है।

संघ और स्वयं सेवकों का एक ही उद्देश्य राष्ट्र प्रथम

समाज के कई क्षेत्रों में संघ लगातार काम कर रहा है। संघ की एक धारा, बंटती तो गई, लेकिन उनमें कभी विरोधाभास पैदा नहीं हुआ, क्योंकि हर धारा का उद्देश्य, भाव एक ही है, राष्ट्र प्रथम। अपने गठन के बाद से ही आरएसएस विराट उद्देश्य लेकर चला राष्ट्र निर्माण, इसके लिए जो रास्ता चुना। व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण, जो पद्धति चुनी वह थी शाखा। दूसरे देशों पर आर्थिक निर्भरता, डेमोग्राफी में बदलाव के षड्यंत्र जैसी चुनौतियों से हमारी सरकार तेजी से निपट रही है। स्वयंसेवक होने के नाते मुझे खुशी है कि संघ ने इसके लिए ठोस रोडमैप भी बनाया है। घुसपैठियों से बड़ी चुनौती मिल रही है। हमें इससे सतर्क रहना है। आरएसएस दशहरा से अपना शताब्दी वर्ष कार्यक्रम शुरू कर रहा है। इसके तहत 2 अक्टूबर 2025 से 20 अक्टूबर 2026 तक देशभर में सात बड़े कार्यक्रम आयोजित होंगे। इसके अलावा संघ प्रमुख मोहन भागवत अमेरिका और यूरोप के कुछ देशों में कार्यक्रमों में शामिल हो सकते हैं।

एसटीआर को मिले नए टूरिस्ट व्हीकल वन्य जीव सप्ताह का शुभारंभ

सीएम बोले- उज्जैन और जबलपुर में बनेंगे जू, चीता-हाथी मित्र जैसे कई प्रोजेक्ट पर काम चल रहा

भोपाल (नप्र)। भोपाल के वन विहार नेशनल पार्क से बुधवार को राज्य स्तरीय वन्यप्राणी सप्ताह का शुभारंभ हुआ। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि उज्जैन और जबलपुर में नए जू बन रहे हैं। वहीं, लेपर्ड, मगरमच्छ, हाथी, घड़ियाल और सभी वन्य जीव संरक्षण में हम नंबर-1 हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि वन विभाग जल, थल और नभ में ईको सिस्टम बनाने पर काम कर रहा है। प्रदेश में चीता मित्र, हाथी मित्र जैसे कई प्रोजेक्ट्स पर काम हो रहा है। डॉ. यादव ने गिद्धों के संरक्षण के लिए वन विभाग द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। साढ़े 18 करोड़ रुपए की राशि लाभांश के रूप में वितरित की गई।

एमपी में चीता फल-फूल रहा है : मुख्यमंत्री- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में हम सब ने देखा कि बदलते दौर का मध्यप्रदेश में एशिया से गायब होने वाले चीते का परिवार 2022 से फल-फूल रहा है। मुख्यमंत्री ने गिद्धों के संरक्षण को लेकर भोपाल द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की। साथ ही वन विभाग को खुद के संसाधनों के बलबूते पर्यावरण के प्रति संवेदनशील भावना जताने के लिए हर्ष जताया। 636 इको विकास समितियों को वन विकास निगम के द्वारा यह जो धनराशि का वितरण हुआ। उन्होंने कहा, प्रदेश में 11 राष्ट्रीय उद्यान, 26 वन्यजीव अभ्यारण्य, 9 टाइगर रिजर्व और 1 कंजर्वेशन रिजर्व है। प्रदेश का 30 प्रतिशत हिस्सा वन आच्छादित है। चीता मित्र, हाथी मित्र, तात्ती कंजर्वेशन रिजर्व जैव विविधता संरक्षण की दिशा में ऐसे कई उल्लेखनीय प्रयास चल रहे हैं। प्रतिवर्ष हमारे यहां 27 लाख से अधिक भारतीय और विदेशी पर्यटक वाइल्ड लाइफ देखने आ रहे हैं। प्रयास है कि जितने भी हमारे टाइगर रिजर्व है, उनके आसपास रेस्क्यू सेंटर बने। ताकि जंगल के आसपास का जानवर घायल हो जाए तो उसका उपचार हो सके। हम गर्व से कह सकते हैं कि मध्यप्रदेश एक ऐसा राज्य है, जहां सभी प्रकार की वन संपदा के साथ वन्य जीवों के संरक्षण को प्राथमिकता दी जा रही है। इससे पहले उन्होंने गोल्फ ई-कार्ट और सफारी व्हीकल्स को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। सप्ताह 1 से 7 अक्टूबर तक चलेगा। वन्य विहार में पेट्रोल और डीजल वाहनों की एंट्री बंद कर दी गई है। सिर्फ ई-वाहनों को ही एंट्री दी जाएगी।

सतपुड़ा टाइगर रिजर्व के वाहनों का भी लोकार्पण

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने राज्य स्तरीय वन्यजीव सप्ताह के शुभारंभ अवसर पर सतपुड़ा टाइगर रिजर्व के पर्यटक वाहनों का लोकार्पण किया। वहीं, वन विहार में वन्यजीव संबंधित पुस्तक और पोस्टर का विमोचन किया। वहीं, वन्य प्राणी संरक्षण पुरस्कार भी दिए।

नर्मदा-तवा में छोड़े जाएंगे मगरमच्छ

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हम बहुत जल्द प्रदेश में नर्मदा की धारा और तवा नदी में मगरमच्छ छोड़ने जा रहे हैं। सभी क्षेत्रों में जीवों का संरक्षण कर रहे हैं।

सुप्रभात

फिर हमें संदेश देने
आ गया पावन दशहरा
संकटों का तम घनेरा
हो न आकुल मन ये तेरा
संकटों के तम छटेंगें
होगा फिर सुंदर सवेरा
धैर्य का तू ले सहारा
द्वेष हो कितना भी गहरा
हो न कलुषित मन यह तेरा
फिर से टूटे दिल मिलेंगें
होगा जब प्रेमी चितेरा
फिर हमें संदेश देने
आ गया पावन दशहरा

बन शमी का पात प्यारा
सत्य हो कितना प्रताड़ित
रूप उसका और निखरे
हो नहीं सकता पराजित
धर्म ने हर बार टेरा
फिर हमें संदेश देने
आ गया पावन दशहरा

-सत्यनारायण सिंह

असत्य पर सत्य की विजय का पर्व दशहरा आज

- दिन में शस्त्र पूजन और रात में जलेगा बुराई का प्रतीक रावण

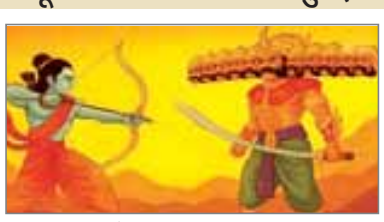

नई दिल्ली (एजेंसी)। आज 2 अक्टूबर को दशहरा का पर्व मनाया जाएगा। इसे विजयदशमी के नाम से भी जाना जाता है जो बुराई पर अच्छाई की जीत का पर्व है। इसी दिन मां दुर्गा ने महिषासुर नामक राक्षस का वध किया था। सदियों से दशहरा के दिन रावण जलाया जाता है। इस दिन सदियों से रावण दहन किया जाता है और शस्त्र पूजन का भी विधान होता है। हर वर्ष आश्विन माह की शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि के दिन यह त्योहार

मनाया जाता है। दशहरा के दिन पूरे देशभर में शाम के समय रावण दहन किया जाता है। कल 2 अक्टूबर को दोपहर के 2 बजकर 9 मिनट से लेकर 2 बजकर 56 मिनट तक दशहरा पूजन के लिए सबसे उत्तम मुहूर्त रहेगा। इस दौरान शस्त्र पूजन करना सबसे शुभ होगा। मान्यता है कि विजय मुहूर्त में व्यक्ति जो भी नया या शुभ काम करेगा उससे कई गुना फल की प्राप्ति होगी। कहा जाता है कि इस दिन दसों दिशाएं खुली रहती हैं। ऐसे में इस मुहूर्त में आप कोई नया काम या नया सामान खरीद सकते हैं। इससे जातक को कई गुना तरक्की प्राप्त हो सकती है।

केंद्रीय कर्मचारियों का महंगाई भत्ता 3 प्रतिशत बढ़ा

- 49 लाख कर्मचारी, 68 लाख पेंशनर्स को फायदा
- 1 जुलाई से होगा लागू, 3 महीने का एरियर मिलेगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार ने बुधवार को केंद्रीय कर्मचारियों और पेंशनभोगियों के लिए महंगाई भत्ता में 3 प्रतिशत की बढ़ोतरी को मंजूरी दे दी। यह फैसला दशहरा और दीवाली जैसे त्योहारों से ठीक पहले आया है। इस बढ़ोतरी से लगभग 48 लाख कर्मचारियों और 68 लाख पेंशनभोगियों को लाभ होगा। इसके साथ ही, डीए दर 55 फीसदी से

बढ़कर 58 फीसदी हो गई है। यह बढ़ोतरी 1 जुलाई, 2025 से लागू होगी। यह वृद्धि 1 जुलाई 2025 से प्रभावी होगी। जुलाई, अगस्त और सितंबर के बकाया अक्टूबर की सैलरी के साथ, दीवाली से पहले दिए जाएंगे। यह बढ़ोतरी सभी केंद्रीय सरकारी कर्मचारियों, पेंशनर्स और पारिवारिक पेंशनर्स को मिलेगी, जो 7वें वेतन आयोग के तहत आते हैं।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 30 °c | न्यूनतम 25°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ गुरुवार, 02 अक्टूबर 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

खरगे बीमार, अस्पताल में कराया गया भर्ती

● डॉक्टरों ने दी सलाह- पेसमेकर लगाना होगा

बेंगलुरु (एजेंसी)। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे को एक तय प्रक्रिया के लिए यहां एक अस्पताल में भर्ती कराया गया है और उन्हें पेसमेकर लगाने की सलाह दी गई है। उनके बेटे और कर्नाटक के मंत्री प्रियंक खरगे ने बुधवार को यह जानकारी दी। प्रियंक ने कहा कि उनके पिता की हालत स्थिर है और वह बेहतर महसूस कर रहे हैं। प्रियंक ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि कांग्रेस अध्यक्ष खरगे को पेसमेकर लगाने की सलाह दी गई थी और उन्हें तय प्रक्रिया के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। उनकी हालत स्थिर है और वह बेहतर महसूस कर रहे हैं। आपकी चिंता और शुभकामनाओं के लिए आप सभी का आभारी हूं। पार्टी सूत्रों के अनुसार, 83 वर्षीय खरगे को मंगलवार को शहर के एम एस रमैया अस्पताल में भर्ती कराया गया था। मुख्यमंत्री सिद्धरमैया ने बुधवार को अस्पताल में खरगे से मुलाकात की। खरगे राज्यसभा में विपक्ष के नेता भी हैं। सिद्धरमैया ने खरगे से मिलने के बाद संवाददाताओं से कहा, उन्हें (खरगे को) थोड़ी बेचैनी थी, इसलिए वह जांच के लिए अस्पताल आए। वह ठीक हैं और बातचीत रहे हैं। उन्हें कल छुट्टी दे दी जाएगी।

यूपीआई फ्री ही रहेगा कोई चार्ज नहीं लगेगा

● आरबीआई ने लोन लिमिट बढ़ाकर 25 लाख तक की

नई दिल्ली (एजेंसी)। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने बुधवार (1 अक्टूबर) को कई बड़े फैसले लिए, जिनसे कंपनियों और आम लोगों के लिए बैंक लोन लेना आसान और सस्ता हो जाएगा। साथ ही यूपीआई चार्ज को लेकर लोगों की चिंता को भी दूर किया है। आरबीआई गवर्नर संजय मल्होत्रा ने मॉनेटरी पॉलिसी कमेटी की मीटिंग बाद सभी फैसलों की घोषणा की। आरबीआई ने अब बैंकों को भारतीय कंपनियों को अधिग्रहण (किसी कंपनी को खरीदने) के लिए लोन देने की इजाजत दे दी है। स्टेट बैंक ऑफ इंडिया ने इसकी मांग की थी। जिसके बाद आरबीआई एक ऐसा स्ट्रक्चर तैयार करेगा, जिससे बैंक आसानी से ऐसे लोन दे सकें। इसका मतलब है कि अब कंपनियां दूसरी कंपनियों को खरीदने के लिए आसानी से फंड जुटा सकेंगी। आरबीआई ने इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स के लिए लोन को और सस्ता करने का फैसला किया है। नॉन-बैंकिंग फाइनेंशियल कंपनियों को अच्छी क्वालिटी के इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स के लिए दिए जाने वाले लोन पर रिस्क वेट कम किया जाएगा। इससे ऐसे प्रोजेक्ट्स के लिए फंडिंग आसान और सस्ती होगी। 2016 में आरबीआई ने एक नियम बनाया था, जिसके तहत 10,000 करोड़ से ज्यादा एक्सपोजर वाले बड़े कर्जदारों को लोन देना मुश्किल था।

संघ शताब्दी वर्ष

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ : राष्ट्र निर्माण के नए क्षितिज की यात्रा

- डॉ. मोहन यादव
लेखक मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री हैं।

व्यक्ति, समाज और राष्ट्र निर्माण का ध्येय लेकर चले राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने आज अपनी स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण कर लिए हैं। संसार के सबसे विशाल और अनूठे संगठन की यह यात्रा त्याग, तपस्या, निःस्वार्थ सेवा और अनुशासन का प्रतीक है। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की यह यात्राकई चुनौतियों और विषम परिस्थितियों में सेवा, समर्पण और संकल्प के ध्येय पथ पर आगे बढ़ी है। यह आद्य सरसंघचालक परमपूज्य डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार का संकल्प और प्रत्येक स्वयंसेवक का समर्पण है कि आज पूरे विश्व में संघ का ध्वज लहरा रहा है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना देश की असाधारण परिस्थितियों में हुई। भारत और भारत के स्वत्व के लिये जितना संकट अंग्रेजी राज से था उससे कहीं अधिक भारत विरोधी वे शक्तियां सक्रिय थीं जो भारत के पूर्ण रूपांतरण का कुचक्र रच रहीं थीं। इसे मालाबार, चटगांव, करांची और ढ़ाका की हिंसा से समझा जा सकता है। हिन्दुओं के सामूहिक नरसंहार, स्त्रियों के अपहरण पर भी देश में चुप्पी रही। एक ओर समाज, संस्कृति और राष्ट्र के दमन का कुचक्र चल रहा था दूसरी ओर भारतीय समाज अनेक आंतरिक विसंगतियों में उलझ गया था। जहां समाज विखंडन और अस्पृश्यता जैसा लोक व्यवहार प्रभावी था वहीं भारतीय समाज में आत्मगौरव कहीं खो रहा था। दासत्व की जंजीरों को ही अपनी नियति समझ लेने वाला विचार भी प्रभावी होने लगा था।

बालपन से ही राष्ट्र और सांस्कृतिक गौरव के प्रति समर्पित विशिष्ट प्रतिभा के धनी डॉ. हेडगेवार जी के मन को यह सभी घटनाएं उद्वेलित कर रही थीं। डॉ. हेडगेवार जी स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी सेनानी थे। वे असहयोग आंदोलन में जेल यात्रा भी गये थे। भारत को दासत्व से मुक्ति संघर्ष में सहभागिता के साथ उन्होंने भारत में सांस्कृतिक और राष्ट्रभाव जागरण अभियान चलाने का भी संकल्प लिया। उन्होंने अनुभव किया कि जब तक प्रत्येक भारतीय के हृदय में स्वत्व का भाव जागृत नहीं होगा तब तक भारत पुनः अपने गौरव को प्राप्त नहीं कर सकता। डॉक्टर जी ने तत्कालीन सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति समर्पित विभूतियों से चर्चा की और संघ की स्थापना केलिये विजयादशमी की तिथि का चयन किया।

वर्ष 1925 में विजयादशमी को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अस्तित्व में आया। इस तिथि के निर्धारण में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना का ध्येय स्पष्ट है। विजयादशमी की तिथि और यह उत्सव स्वार्थरहित संघर्ष, सत्य की स्थापना, धर्म की रक्षा और मानवीय मूल्यों के पुनर्जागरण का संदेश देती है। यही संदेश राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की पूरी शताब्दी यात्रा में निहित है।

संघ की इस शताब्दी यात्रा की दो बड़ी विशेषताएं रहीं। एक तो संघ की ध्येय निष्ठा, संसार में केवल राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एक मात्र ऐसा संगठन है जो अपने ध्येय पर अडिग है और निरंतर विस्तार पा रहा है। दूसरी विशेषता संघ पर होने वाले आक्रमणों की है। संघ पर वैचारिक, राजनैतिक हमलों के साथ स्वयंसेवकों पर प्राण घातक हमले हुए। लेकिन संघ की ध्येय यात्रा पर कोई बाधा नहीं डाल पाया। स्वतंत्रता के बाद तीन बार तो संघ पर प्रतिबंध लगे। गांधी जी की हत्या में झूठा फंसाकर स्वयं सेवकों को प्रताड़ित किया गया।आपातकाल में प्रतिबंध और प्रताड़ना भी संघ के स्वयंसेवकों ने झेली। वर्ष 1992 में अयोध्या घटना के बाद भी संघ पर प्रतिबंध लगा। कश्मीर, केरल, पश्चिम बंगाल आदि प्रांतों में आज भी संघ प्रचारकों पर हमले हो रहे हैं। लेकिन संघ कभी रुका नहीं, थका नहीं और न कोई स्वयंसेवक विचलित हुआ।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की इस शताब्दी यात्रा में मध्यप्रदेश की गौरव नगरी उज्जैन का भी अपना योगदान है। मध्यप्रदेश में संघ कार्य का विस्तार दो दिशाओं से हुआ। एक नागपुर से महाकौशल की ओर तथा दूसरा नागपुर से मालवा की ओर। मालवा क्षेत्र की गौरव नगरी उज्जैन वह स्थान है जहां संघ कार्य 1930 से 1940 के दशक में ही अंकुरित हो गया था। भोपाल से लेकर नीमच तक और इंदौर से लेकर मध्यभारत तक के विस्तार में उज्जैन की भूमिका महत्वपूर्ण रही। इसे वर्ष 1936 में डॉ. हेडगेवार जी के आह्वान पर हैदराबाद आंदोलन में उज्जैन के स्वयं सेवकों की सहभागिता और बाद में जूनागढ़, दादरा नगर हवेली और गोवा मुक्ति आंदोलन में उज्जैन नगर की सहभागिता इतिहास के पन्नों में है। दादरा नगर हवेली और गोवा मुक्ति आंदोलन में उज्जैन के स्वयंसेवकों का बलिदान भी हुआ। यह हम सभी के लिए गौरव की बात है कि संघ के स्वयं सेवकों ने स्वाधीनता आंदोलन, विभाजन की पीड़ा में शराणार्थियों की सेवा, आंतरिक अशांति और प्रत्येक युद्ध में राष्ट्र रक्षा के लिए पूर्ण समर्पण के साथ कार्य किया है।

कई बार मैं सोचकर गर्व अनुभव करता हूं कि मैं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के माध्यम से एक ऐसी संकल्प यात्रा का सहभागी बना जो भारत राष्ट्र के परम वैभव का लक्ष्य लेकर आगे बढ़ रही है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की इस शताब्दी यात्रा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें प्रचारकों के रूप में असंख्य विभूतियां आगे आईं, लेकिन किसी ने भी न अपने नाम की चिंता की न अस्तित्व और न ही जीवन की। वे सब राष्ट्र निर्माण कार्य की नींव में समा गये। संघ ने अपनी इस शताब्दी वर्ष यात्रा में समाज और राष्ट्र जीवन के आयाम को स्पर्श किया है। इस कार्य में शाखा से लेकर द्वार तक और फिर खेत पर जाकर भी संपर्क किया है। इसीलिए संघ कार्य आज इतना व्यापक हो पाया है। संघ कार्य केवल संगठनात्मक विस्तार नहीं है, यह साधना है- व्यक्तित्व निर्माण, समाज निर्माण और राष्ट्र निर्माण की। इसीलिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपनी शताब्दी समारोह को उत्सव के रूप में नहीं मना रहा। यह आयोजन राष्ट्र के परम वैभव और विश्व में भारत की सांस्कृतिक पुनर्प्रतिष्ठा के लिएसंकल्प दिवस के रूप में है।

भारतीय समाज में सकारात्मक परिवर्तन को गति देने और समाज में अनुशासन तथा देशभक्ति के भाव को बढ़ाने के उद्देश्य से माननीय सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने समाज में पंच परिवर्तन का आह्वान किया है। इस पंच परिवर्तन में पांच आयाम स्व का बोध अर्थात स्वदेशी, नागरिक कर्तव्य, पर्यावरण, सामाजिक समरसता और कुटुम्ब प्रबोधन शामिल हैं। इसमें स्व के बोध से नागरिक अपने कर्तव्यों के प्रति सजग होंगे। नागरिक कर्तव्य बोध अर्थात कानून के पालन से राष्ट्र समृद्ध व उन्नत होगा। सामाजिक समरसता व सद्भाव से ऊंच-नीच जाति भेद समाप्त होंगे। पर्यावरण से सृष्टि का संरक्षण होगा तथा कुटुम्ब प्रबोधन से परिवार समृद्ध होंगे और बच्चों में संस्कार बढ़ेंगे। पंच परिवर्तन को समाज में लागू करने के लिए हम सभी भारतीय नागरिकों को मिलकर प्रयास करने होंगे।

इसी संदेश की झलक प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के संबोधन में है। मोदी जी ने संघ की शताब्दी यात्रा पर विशेष डाक टिकट और स्मृति सिक्के जारी किए हैं। 100 रुपये के सिक्के पर एक ओर राष्ट्रीय चिह्न है और दूसरी ओर सिंह के साथ वरद् मुद्रा में भारत माता की भव्य छवि और समर्पण भाव से उसे नमन करते स्वयंसेवक दिखाई देते हैं।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ 100 वर्ष से बिना थके, बिना रुके, राष्ट्र सेवा के कार्य में लगा हुआ है। यह समर्पित यात्रा हमें राष्ट्र कार्य के लिए प्रेरित करती है। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के शताब्दी वर्ष के अवसर पर भारत ने अमृतकाल के युग में प्रवेश कर लिया है। माननीय सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने समाज निर्माण के जो सूत्र दिये हैं इससे प्रेरित होकर निर्माण के विविध आयाम विकसित होने की संभावना है। इसे आत्मसात कर हम अपने प्रदेश और अपने राष्ट्र को विश्व पटल पर स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

आज विजयादशमी की शुभकामनाओं के साथ मैं प्रदेश की साढ़े आठ करोड़ जनता से राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की राष्ट्र चेतना से राष्ट्रनिर्माण में सहभागी बनने की अपेक्षा करता हूँ।

बरेली बवाल के 2 और आरोपियों का एनकाउंटर

● पैर में गोली मारी, इमरान मसूद हाउस अरेस्ट, पुलिस ने वीडियो जारी किए

बरेली/सहारनपुर (एजेंसी)। बरेली बवाल को लेकर पुलिस एक्शन मोड में है। बुधवार को दो और आरोपियों का एनकाउंटर कर दिया। पुलिस ने पैर में गोली मारकर इदरीश और इकबाल को गिरफ्तार किया। उनके पास से पुलिस से लूटी गई सरकारी एंटी रायट गन, अवैध तमंचे, कारतूस, दो मोबाइल और एक मोटरसाइकिल बरामद हुई है। आरोपी हथियार बेचने मीरगंज जा रहे थे। तभी पुलिस से उनकी मुठभेड़ हो गई। इससे पहले मंगलवार को भी एक आरोपी को मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार किया गया था। इस बीच पुलिस ने बवाल वाले दिन यानी 26 सितंबर का ड्रोन वीडियो भी जारी किया है। वीडियो में बेकाबू भीड़ को रोकने की कोशिश करती पुलिस और फिर लाठीचार्ज के बाद मची भगदड़ दिख रही है। वहीं, सहारनपुर से बरेली आ रहे कांग्रेस सांसद इमरान मसूद को पुलिस ने हाउस अरेस्ट कर लिया। अमरोहा में पूर्व कांग्रेसी सांसद कुंवर दानिश अली को भी उनके आवास पर हाउस अरेस्ट किया गया। मसूद ने कहा- मुसलमानों को टारगेट करके उन पर एक्शन लिया जा रहा है। बरेली में जुमे पर (26 सितंबर) आई लव मोहम्मद विवाद को लेकर बवाल हुआ था। मौलाना तौकीर रजा ने मुस्लिमों से शहर के इस्लामिया ग्राउंड में प्रदर्शन करने की अपील की थी। जुमे की नमाज के बाद भीड़ सड़क पर उतर आई और जबरन ग्राउंड में जाने की जिद पर अड़ गई। पुलिस के मुताबिक, भीड़ को रोका गया। इसी दौरान भीड़ ने तोड़फोड़ और पथराव शुरू कर दिया। पुलिस ने हालात पर काबू पाने के लिए लाठीचार्ज किया। अभी तक कुल 78 लोगों को गिरफ्तार किया है। इनमें मौलाना तौकीर रजा, डॉ. नफीस और नदीम भी शामिल हैं। बवाल को लेकर सीएम योगी भी काफी सख्त हैं। बरेली बवाल को लेकर आईएमसी राष्ट्रीय महासचिव डॉ. नफीस को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। जुमा की नमाज के बाद हुए बवाल में नफीस की अहम भूमिका थी।

7 बच्चों की मौत, सबकी हो गई किडनी फेल

● एमपी से राजस्थान तक 'कफ सिरप' का आतंक

भोपाल/जयपुर (एजेंसी)। मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा में 22 दिनों के भीतर 6 बच्चों की मौत और राजस्थान में एक बच्चे की जान जाने से हड़कंप मच गया है। डॉक्टरों का कहना है कि इन सभी बच्चों की किडनी फेल हो गई थी। आशंका जताई जा रही है कि कफ सिरप की वजह से इन बच्चों की जान गई है, क्योंकि शुरुआत में सभी को सर्दी, जुकाम और बुखार जैसी शिकायतें थीं। इन्होंने कुछ ब्रैंड की कफ सिरप का इस्तेमाल किया था। वहीं, मध्य प्रदेश के उपमुख्यमंत्री ने कफ सिरप की बात को निराधार बताया है। एक अधिकारी ने बताया कि 4 सितंबर से 26 सितंबर के बीच किडनी संबंधी दिक्कतों की वजह से छिंदवाड़ा जिले में 6 बच्चों की मौत हो गई। पीड़ित परिवारों का कहना है कि बच्चों को शुरुआत में सर्दी, खांसी और बुखार था। इसके बाद उनकी किडनी प्रभावित हुई और स्थिति बिगड़ गई। चीफ मेडिकल और हेल्थ ऑफीसर डॉ. नरेश गुन्नाडे ने कहा कि केंद्र और राज्य सरकार की टीमों को किडनी फेल होने की वजहों का पता लगाने के लिए बुलाया गया है।

स्वास्थ्य विभाग प्रभावित बच्चों की कर रहा पहचान

इस बीच जिला कलेक्टर शीलेंद्र सिंह ने कहा कि प्रशासन पूरी तरह अलर्ट है और स्वास्थ्य विभाग जमीन पर प्रभावित बच्चों की पहचान और लक्षण के आधार पर इलाज में जुटा है। उन्होंने कहा कि भोपाल और दिल्ली से एक्सपर्ट्स की टीमें आई हैं। इनकी मदद से जांच की जा रही है। उन्होंने कहा कि मेडिकल कॉलेज, जिला अस्पताल और शिशु रोग विशेषज्ञों के साथ मीटिंग की गई। पुणे से मिली रिपोर्ट के मुताबिक वेक्टर ब्रोन वायरल इन्फेक्शन के लक्षण नहीं मिले हैं। इसलिए आशंका है कि कुछ दवाओं के मिश्रण वाली समस्या हो सकती है।

राजस्थान में भी कफ सिरप बैन, एमपी में असमंजस

मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा में जहां छह बच्चों की मौत हो गई है तो राजस्थान के सीकर में भी एक बच्चे की मौत को कफ सिरप से जोड़ा जा रहा है। राजस्थान मेडिकल कॉर्पोरेशन ने 19 बैच के सिरप को बिक्री और इस्तेमाल से बैन कर दिया है। अभिभावकों, डॉक्टरों और मेडिकल ऑपरेटर्स को सतर्क करने के लिए अडवाइजरी जारी की गई है। मध्य प्रदेश के डिप्टी सीएम राजेंद्र शुक्ल ने कहा कि स्वास्थ्य अमला इस पूरे मामले में नजर बनाए हुए है। उन्होंने कफ सिरप की बात को निराधार बताया और कहा कि जिन बच्चों की मौत हुई है उनकी जांच रिपोर्ट भेजी गई है, जांच रिपोर्ट के बाद ही मौत की वजह स्पष्ट हो पाएगी।

राजस्थान में फिर भारी बारिश जयपुर में रावण के पुतले बहे

● मानसून सीजन खत्म, देश में 1500 मौतें, अक्टूबर में 15 फीसदी ज्यादा बारिश संभव

नई दिल्ली (एजेंसी)। देशभर से मानसून मंगलवार को खत्म हो गया, लेकिन बारिश का दौर जारी है। राजस्थान में बुधवार को तेज बारिश का अलर्ट है। कल जयपुर, सीकर सहित कई जिलों में झमाझम बारिश हुई। जयपुर में 2 घंटे की बारिश से सड़कें तालाब बन गईं। जयपुर के इलाकों में 2 से 3 फीट पानी भर गया। दशहरा पर रावण दहन के लिए तैयार पुतले भी पानी में बहते दिखे। कोटा में 221 फीट ऊंचा रावण का पुतला भीग गया। दावा है कि यह दुनिया का सबसे ऊंचा रावण का पुतला है। मौसम विभाग ने राजस्थान में दशहरे के दिन, 2 अक्टूबर को भी तेज बरसात की आशंका जताई है। भारतीय मौसम विभाग ने बताया कि इस साल देश में मानसून सीजन (जून से सितंबर तक) में सामान्य से 8 फीसदी ज्यादा बारिश हुई है। भारत में चार महीने के दौरान 868.6 एमएम बारिश होती है। इस साल 937.2 एमएम वर्षा दर्ज की गई। मौसम से जुड़ी घटनाओं में 1520 लोगों की मौत हुई। कुल मौतों में से 935 बाढ़ और भारी बारिश से हुई, जबकि 570 लोग बिजली गिरने और आंधी-तूफान में मारे गए। मध्य प्रदेश में सबसे ज्यादा 290 मौतें दर्ज की गईं। आईएमडी ने बताया कि बारिश का दौर अक्टूबर से दिसंबर तक जारी रहेगा। अक्टूबर में सामान्य से 15 फीसदी ज्यादा बारिश हो सकती है। तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, केरल और कर्नाटक में भी मानसून के बाद सामान्य से ज्यादा बारिश हो सकती है।

यूपी में पिता ने 2 बेटियों और पत्नी संग लगाई आग, मौत

गांव के दो लड़कों की भी की हत्या, घर से मिलीं 6 लाशें

बहराइच (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के बहराइच में एक घर से 6 लोगों की लाशें मिली हैं। किसान ने पहले घर पर गांव के दो लड़कों की हत्या की। फिर अपनी दो बेटियों और पत्नी के साथ खुद को कमरे में बंद कर आग लगा दी। घर को आग लगाने से पहले वह मवेशियों को भी अंदर ले आया था। घटना रामगांव इलाके के निंदुरपुरवा गांव में सुबह 9 बजे के आसपास हुई। आग की लपटें देखकर आसपास के लोग मौके की ओर भागे। देखते ही देखते वहां भीड़ जमा हो गई। चीख-पुकार मच गई। पुलिस और फायर ब्रिगेड को सूचना दी गई। मौके पर पहुंचे दमकल के अमले ने तुरंत ही आग पर काबू किया। पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा। घटना के बाद मौके पर डीआईजी अमित पाठक समेत बहराइच के डीएम अक्षय त्रिपाठी, एसपी राम नयन सिंह पहुंचे।

● **लड़कों का गला रेता, अंगुलियां काटीं-** पुलिस जब मौके पर पहुंची तो घर से धुआं निकल रहा था। पुलिस ने दरवाजा तोड़ा और आग बुझाई। इसके बाद अंदर देखा तो जमीन पर लड़कों की लाशें पड़ी थीं। दोनों का गला कटा था। हाथ की तीन अंगुलिया कटी थीं। गर्दन को किसी धारदार हथियार से रेता गया था। विजय, उसकी पत्नी और दोनों बच्चियों की लाश कमरे की दो अलग-अलग टांड़ पर पड़ी थी। सभी शव जले हुए थे।

● **लहसुन की बुवाई को लेकर हुआ विवाद-** गांव वालों ने बताया कि विजय ने लड़कों को लहसुन की बुवाई के लिए बुलवाया था। उसने 10 रुपए प्रति किलो लहसुन गाड़ने का लालच बच्चों को दिया था। बच्चे झांसे में आ गए। उसके बाद घर में विवाद हो गया और उसने दोनों का गला रेत दिया।

अब रूस और सऊदी के आगे भी नहीं झुकेगा भारत!

नई दिल्ली (एजेंसी)। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की टैरिफ को लेकर की गई मनमानी के सामने भारत बिल्कुल नहीं झुका। इससे पूरी दुनिया को सख्त संदेश गया गया है। वो दिन दूर नहीं जब भारत प्राकृतिक गैस के क्षेत्र में भी आत्मनिर्भर हो जाएगा और भारत को सऊदी और रूस के आगे भी झुकने की जरूरत नहीं पड़ेगी। दरअसल ऑयल इंडिया लि. (ओआईएल) ने अंडमान द्वीप समूह के पास प्राकृतिक गैस भंडार की खोज की है। एक बयान में, ओआईएल ने कहा कि अपतटीय अंडमान ब्लॉक एएन-ओएसएचपी-2018/1 में खोदे गए दूसरे अन्वेषण कुएं विजयपुरम-2 में प्राकृतिक गैस की उपस्थिति की सूचना मिली है। बयान में कहा गया, शुरुआती जांच के दौरान, जब कुएं से गैस रुक-रुक कर बाहर निकल रही थी, तो उसके नमूनों की जांच की गई। इस जांच से यह पुष्टि हो गई है कि वहां प्राकृतिक गैस मौजूद है। यह गैस कैसे और कहां से आई है, यह जानने के लिए आगे और गैस आइसोटोप अध्ययन किए जा रहे हैं। देश के अंडमान बेसिन में प्राकृतिक गैस के बड़े भंडार की पुष्टि भारत के ऊर्जा के क्षेत्र में एक बड़ी सफलता है। यह खोज भारत के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

हकीकत बनने के करीब पांचवीं पीढ़ी का स्टील्थ जेट

● गौतम अडानी सहित कुल सात कंपनियों ने लगाई बोली

नई दिल्ली (एजेंसी)। रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन के साथ साझेदारी कर भारत के स्वदेशी पांचवीं पीढ़ी के स्टील्थ फाइटर जेट यानी एडवांस्ड मीडियम कॉम्बैट एयरक्राफ्ट के डिजाइन और प्रोटोटाइप डेवलपमेंट के लिए सात प्रमुख भारतीय कंपनियों ने बोली लगाई है। इनमें लार्सन एंड टुब्रो, हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड, टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स लिमिटेड, और अडानी डिफेंस जैसी कंपनियां शामिल हैं। रक्षा मंत्रालय के अधिकारियों ने बताया कि इन बोलियों का मूल्यांकन पूर्व ब्रह्मोस एयरोस्पेस प्रमुख ए. शिवथानु पिल्लई की अध्यक्षता वाली एक समिति द्वारा किया जाएगा। समिति अपनी रिपोर्ट रक्षा मंत्रालय को सौंपेगी, जो अंतिम चयन करेगा। रिपोर्ट के मुताबिक, सात कंपनियों में से दो को शॉर्टलिस्ट किया जाएगा, जिन्हें एचएएल के पांच प्रोटोटाइप मॉडल विकसित करने के लिए 15,000 करोड़ रुपये का कॉन्ट्रैक्ट दिया जाएगा। इन मॉडलों को उच्चतम मानकों के अनुसार तैयार किया जाएगा।

दुर्गा पंडालों में यज्ञ अनुष्ठान कन्या भोज के बाद हुए भंडारे

भोपाल (नप्र)। बुधवार को नवरात्रि की नवमी तिथि पर हवन-पूजन

के कार्यक्रम हुए। श्रद्धालुओं ने विधि-विधान से पूजा-अर्चना कर अपने नौ दिवसीय व्रत अनुष्ठान का समापन किया। इसके साथ ही दशहरा के चल समारोह की तैयारियां भी शुरू हो गई थी। 22 सितंबर से शुरु हुए नवरात्र पर्व के अंतिम दिन दुर्गा पंडालों में यज्ञ अनुष्ठान आयोजित किए गए। पंडित सुरेंद्र मोहन द्विवेदी ने बताया कि नवमी तिथि के साथ ही 10 दिवसीय नवरात्र महोत्सव का समापन हो गया। नौ दिनों से व्रत रख रहे श्रद्धालुओं ने यज्ञ, अनुष्ठान और जवारे देखकर अपना उपवास तोड़ा।

दसवीं की छात्रा ने फांसी लगाई

मां की बीमारी से डिप्रेशन में थी, घर में अकेली थी तब उन्ही की साड़ी से फंदा बना लिया

भोपाल (नप्र)। भोपाल के अशोका गार्डन इलाके में रहने वाली दसवीं कक्षा की छात्रा नंदनी साहू (16) ने बुधवार की सुबह घर में ही फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। घटना के समय किशोरी घर में अकेली थी। उसकी मां आरती में शामिल होने गई थीं, जबकि पिता नगर निगम में ड्राइवर हैं और ड्यूटी पर गए हुए थे।

पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। एसआई एसएस वर्मा के अनुसार, प्रारंभिक जांच में पता चला है कि किशोरी अपनी मां की बीमारी को लेकर काफी चिंतित और डिप्रेशन में थी। मां का मानसिक संतुलन पिछले कुछ महीनों से बिगड़ा हुआ था, जिसका परिवार इलाज करा रहा था। किशोरी अक्सर पिता से पूछती थी कि मां कब ठीक होंगी।

बुधवार सुबह, जब मां आरती में गई थी, तभी नंदनी ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। फंदा बनाने के लिए उसने मां की साड़ी का इस्तेमाल किया। पुलिस को घटना स्थल से कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है। एसआई ने बताया कि मामले की हर एंगल पर जांच की जा रही है।

इंजीनियर युवती ने की खुदकुशी

मां-पिता से बोलती थी- सपने में राम-सीता, हनुमानजी आते हैं, उनके पास जाना है

भोपाल (नप्र)। भोपाल के कोलार इलाके में रहने वाली इंजीनियर युवती ने फांसी लगाकर सुसाइड कर लिया। उसके पास से कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है। वह माता-पिता से कहती थी कि सपने में राम-सीता और हनुमानजी आते हैं। उसे उनके पास जाना है। घटना मंगलवार रात की है। बुधवार को पोस्टमॉर्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया है। मामले में पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस की शुरुआती जांच में युवती के मानसिक बीमार होने की पुष्टि हुई है।

इंदौर में जॉब करती थी युवती

एएसआई संतोष सिंह के मुताबिक कीर्ति द्विवेदी (27) नेता जी हिल्स कोलार में माता-पिता के साथ रहती थी। बीटेक करने के बाद उसकी जॉब लग गई थी। इंदौर की एक कंपनी में जॉब करने के साथ वहीं रहती थी। कंपनी की पॉलिसी के मुताबिक युवती 20 दिन इंदौर और 20 दिन भोपाल में रहकर वर्क फ्रॉम होम करती थी।

मार्च महीने से दिमागी संतुलन बिगड़ा

एएसआई ने बताया कि परिजनों ने बयानों में इस बात की पुष्टि की है कि इसी साल मार्च महीने से अचानक युवती का मानसिक संतुलन बिगड़ गया था। परिजन उसका इलाज भी करा रहे थे। युवती बहकी-बहकी बातें करती थी। कहती थी, मुझे देवी और देवता दिखते हैं। राम-सीता और हनुमान दिखते हैं। देवता मुझे बुलाते हैं, मैं उनके पास जाना चाहती हूं।

पिता वल्लभ भवन में पदस्थ हैं

कीर्ति के पिता वल्लभ भवन में स्वास्थ्य विभाग में पदस्थ हैं। बड़ी बहन भी इंदौर में रहकर नौकरी करती है। घटना के समय कीर्ति अपने कमरे में थी, सामने के रूम में उसका भाई रहता है, जो घर में मौजूद था। जबकि मां आरती में शामिल होने पड़ोस में गई थी। लौटने पर वे बेटी के कमरे में पहुंची, तब कमरा अंदर से लॉक मिला। आवाजें देने पर भी गेट नहीं खुला, इसके बाद गेट तोड़ा गया।

असत्य पर सत्य की विजय का पर्व है विजयादशमी : उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने प्रदेशवासियों को विजयादशमी (दशहरा), महात्मा गांधी जयंती और भारत रत्न श्री लालबहादुर शास्त्री जी की जयंती पर हार्दिक शुभकामनाएँ दी हैं। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि विजयादशमी का पर्व असत्य पर सत्य, अन्याय पर न्याय और अधर्म पर धर्म की विजय का प्रतीक है। यह पर्व हमें जीवन में नैतिकता, सदाचार और सत्यनिष्ठा को अपनाने की प्रेरणा देता है। उन्होंने कामना की कि यह पर्व सभी के जीवन में नई ऊर्जा, उत्साह और सुख-समृद्धि लेकर आए।

गांधी जी का सत्य, अहिंसा और सादगी का संदेश आज भी कर रहा है पथ-प्रदर्शन-उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयंती पर श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए कहा कि गांधी जी का सत्य, अहिंसा और सादगी का संदेश आज भी समाज का पथ-प्रदर्शन कर रहा है। स्वच्छता, ग्रामोदय और आत्मनिर्भरता के उनके विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं।

'जय जवान, जय किसान' का नारा आत्मनिर्भरता और राष्ट्र निर्माण का सूत्र-उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न लालबहादुर शास्त्री जी की जयंती पर उन्हें नमन करते हुए कहा कि शास्त्री जी का 'जय जवान, जय किसान' का नारा आज भी देश को आत्मनिर्भरता और राष्ट्र निर्माण की दिशा में प्रेरित करता है। उनका सादा जीवन और उच्च विचार हम सबके लिए अनुकरणीय हैं।

वृद्धजन की नि :स्वार्थ सेवा और सम्मान के लिए सभी हों संकल्पित : मुख्यमंत्री

भोपाल(नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस पर वृद्धजन की नि:स्वार्थ सेवा और सम्मान के लिए सभी प्रदेशवासियों से संकल्पित होने का आहवान किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने देवतुल्य वृद्धजन को नमन करते हुए कहा कि वृद्धजन किसी भी संस्कृति, राष्ट्र, समाज और परिवार के सशक्त आधार होते हैं, उनके विराट अनुभव, ज्ञान और संस्कार से युवा पीढ़ी को निरंतर प्रेरणा लेते रहना चाहिए।

15 लाख 75 हजार वृद्धजन को प्रतिमाह उपलब्ध कराई जा रही है पेंशन-मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राज्य सरकार वृद्धजन के मान-सम्मान के लिए प्रतिबद्ध है।

राज्यपाल ने किया कन्या-पूजन, विजयादशमी की दी बधाई

कन्याओं को उपहार प्रदान किए और प्रदेश की सुख-समृद्धि की प्रार्थना की

भोपाल (नप्र)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल महानवरात्रि पर्व पर राजभवन परिसर स्थित मंदिर में कन्या पूजन कार्यक्रम में शामिल हुए। उन्होंने कन्याओं को तिलक लगाकर मिष्ठान और उपहार भेंट किए। राज्यपाल श्री पटेल ने माँ दुर्गा की विधिवत पूजा-अर्चना की। प्रदेश और देश के विकास और निवासियों के सुख-समृद्धि की प्रार्थना की।

इस अवसर पर राज्यपाल के विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी श्री अरविंद पुरोहित, नियंत्रक हाउसहोल्ड श्रीमती शिल्पी दिवाकर सहित अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे।

राज्यपाल ने विजयादशमी पर प्रदेशवासियों को दी शुभकामनाएं

राज्यपाल मंगुभाई पटेल ने विजयादशमी पर्व पर प्रदेशवासियों को बधाई और शुभकामनाएं दी हैं। उन्होंने शुभकामना संदेश में कहा है कि विजयादशमी हर्ष, उल्लास तथा विजय का पर्व है। यह अन्याय पर न्याय, अधर्म पर धर्म और असत्य पर सत्य की विजय का प्रतीक है। राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि भारतीय संस्कृति वीरता की पूजक और शौर्य की उपासक है। विजयादशमी त्यौहार भगवान श्रीराम की मर्यादा, आदर्श और त्याग से हम सबको जीवन में धैर्य, संयम और सदाचार का पालन कर चुनौतियों पर विजय प्राप्त करने की प्रेरणा देता है। राज्यपाल ने इस अवसर पर प्रदेशवासियों की सुख-समृद्धि और प्रदेश की खुशहाली की कामना की है।

लागू हुआ रेलवे का नया नियम

अब आधार प्रमाणीकरण से ही मिलेगा शुरुआती 15 मिनट में कन्फर्म टिकट

भोपाल (नप्र)। आम यात्रियों को कन्फर्म टिकट आसानी से मिल सके और दलालों की मनमानी पर रोक लगे, इसके लिए भारतीय रेलवे खानपान एवं पर्यटन निगम (आईआरसीटीसी) ने नया नियम लागू किया है। अब आज (1 अक्टूबर 2025) से ट्रेनों के सामान्य आरक्षण खुलने के पहले 15 मिनट तक केवल आधार-प्रमाणित उपयोगकर्ता ही ऑनलाइन टिकट बुक कर सकेंगे। यह सुविधा आईआरसीटीसी की वेबसाइट और मोबाइल ऐप दोनों पर लागू होगी। रेलवे अधिकारियों के अनुसार, इससे टिकट बुकिंग में पारदर्शिता आएगी और आम यात्रियों को शुरुआती समय में कन्फर्म टिकट मिलने का अधिक मौका मिलेगा। वहीं, टिकट के अवैध कारोबार और बिचौलियों पर भी लगाम लगेगी।

पीआरएस काउंटर पर कोई बदलाव नहीं

रेलवे ने स्पष्ट किया है कि कम्प्यूटरीकृत पीआरएस काउंटर से होने वाली सामान्य आरक्षण टिकट बुकिंग की प्रक्रिया में किसी तरह का बदलाव नहीं किया गया है। वहीं, पहले दिन टिकट खुलने के शुरुआती 10 मिनट तक रेलवे के अधिकृत एजेंटों को टिकट बुक करने की जो पाबंदी है, वह भी पहले की तरह जारी रहेगी।

पश्चिम मध्य रेलवे भोपाल मंडल के सीनियर डीसीएम सौरभ कटारिया ने बताया कि इस सकारात्मक पहल का मकसद आम यात्रियों को सीधा लाभ पहुंचाना है। उन्होंने यात्रियों से अपील की है कि अपनी आईआरसीटीसी आईडी को आधार से प्रमाणित कर लें, ताकि वे इस सुविधा का लाभ उठाकर शुरुआती 15 मिनट में ही कन्फर्म टिकट हासिल कर सकें।

प्रदेश में अगले 4 दिन बारिश का अलर्ट

पन्ना में बिजली गिरने से एक की मौत, अक्टूबर में एमपी में बरसात, गर्मी-सर्दी का ट्रेंड

भोपाल (नप्र)। मानसून की विदाई के बीच मध्यप्रदेश में अगले 4 दिन हल्की बारिश होने का अनुमान है। दशहरे के दिन भी बारिश का अलर्ट है। हालांकि, बुधवार को भोपाल में सुबह से धूप खिली हुई थी।

वहीं, अब तक 12 जिलों से मानसून की विदाई हो चुकी है। 10 अक्टूबर तक पूरे प्रदेश से मानसून लौट जाएगा। इस बार सितंबर में भी बारिश का कोटा पूरा हो गया। औसत 45.2 इंच पानी गिरा, जो सामान्य बारिश 37.3 इंच के मुकाबले 7.8 इंच अधिक है।

अब बात अक्टूबर महीने की। मौसम विभाग के अनुसार, मध्यप्रदेश में अक्टूबर में बारिश, गर्मी और ठंड का ट्रेंड रहा है। इस बार भी ऐसा ही मौसम रहेगा। ग्वालियर में पारा रिकॉर्ड 39 डिग्री तक पहुंच चुका है तो भोपाल, इंदौर, उज्जैन-जबलपुर में गुलाबी ठंड की दस्तक के साथ बारिश भी हुई है।

भोपाल-ग्वालियर समेत 10 जिलों में बारिश- इससे पहले मंगलवार को भोपाल, ग्वालियर-जबलपुर समेत 10 जिलों में बारिश हुई। बैतूल में डेढ़ इंच पानी गिर गया। बालाघाट के मलाजखंड में सवा इंच, दतिया में आधा इंच से ज्यादा और ग्वालियर में आधा इंच बारिश हुई। भोपाल, जबलपुर, सागर, डिंडौरी, मुरैना में भी बूंदाबांदी हुई।

पन्ना में आकाशीय बिजली गिरने से चरवाहे रूप सिंह यादव (40) की मौत हो गई। वह बारिश से बचने के लिए एक पेड़ के नीचे छिपा था। भाई बुध सिंह यादव ने बताया कि रूप सिंह एक हाथ से दिव्यांग था। उसने शादी नहीं की थी। भैंसों को चराकर अपना भरण-पोषण करता था। चार भाइयों में दूसरे नंबर का था।

दिन में गर्मी और रात में ठंड- मौसम वैज्ञानिकों ने बताया कि अक्टूबर का महीना चेंज ओवर पीरियड रहता है। इस महीने मानसून विदाई पर रहता है। इससे आसमान साफ हो जाता है। इस कारण दिन में गर्मी और रात में ठंड पड़ती है। उत्तर भारत में वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ) एक्टिव होने से बारिश होती है।

12 जिलों से विदा हो चुका मानसून

अब तक प्रदेश के 12 जिलों से मानसून विदा हो चुका है। इनमें ग्वालियर, श्योपुर, मुरैना, भिंड, दतिया, शिवपुरी, गुना, आगर-मालवा, नीमच, मंदसौर और रतलाम शामिल हैं। राजगढ़ और अशोकनगर के कुछ हिस्से से मानसून विदा हुआ है। मौसम विभाग की मानें तो मानसून की वापसी के लिए अभी परिस्थिति अनुकूल नहीं है।

बता दें कि इस साल मानसून ने मध्यप्रदेश में 16 जून को दस्तक दी थी। समय से एक दिन बाद मानसून प्रदेश में एंटर हुआ था। मौसम विभाग के अनुसार, 6 अक्टूबर तक प्रदेश के सभी जिलों से मानसून विदा हो जाता है, लेकिन नया सिस्टम बनने से विदाई की तारीख आगे भी बढ़ सकती है।

गुना में सबसे ज्यादा बारिश

इस बार गुना में सबसे ज्यादा पानी गिरा है। यहां 65.6 इंच बारिश दर्ज की जा चुकी है। मंडला-रायसेन में 62 इंच से अधिक और श्योपुर-अशोकनगर में 56 इंच से ज्यादा बारिश हो चुकी है। वहीं, शाजापुर, खरगोन, खंडवा, बड़वानी और धार सबसे कम बारिश वाले टॉप-5 जिलों में शामिल हैं। शाजापुर में 28.9 इंच, खरगोन में 29.6 इंच, खंडवा में 32 इंच, बड़वानी में 33.5 इंच और धार में 33.6 इंच पानी गिर चुका है।

इंदौर संभाग की तस्वीर भी सुधरी

इस मानसूनी सीजन में शुरुआत से ही इंदौर और उज्जैन संभाग की स्थिति ठीक नहीं रही। एक समय तो इंदौर में प्रदेश की सबसे कम बारिश हुई थी। ऐसे में अटकलें थीं कि क्या इस बार इंदौर में सामान्य बारिश भी होगी? लेकिन सितंबर महीने में तेज बारिश की वजह से इंदौर में सामान्य बारिश का कोटा पूरा हो गया। दूसरी ओर, उज्जैन जिले में अब भी कोटा पूरा नहीं हुआ है। सबसे कम बारिश वाले जिलों में शाजापुर पहले नंबर पर है।

भोपाल एम्स में लगेगा 30 करोड़ का एडवांस रोबोटिक सिस्टम

नॉर्दर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड के साथ हुआ करार, यह प्रदेश का पहला अस्पताल जहां मशीन करेगी सर्जरी

भोपाल (नप्र)। एम्स भोपाल प्रदेश का पहला सरकारी अस्पताल होगा, जहां सर्जन मशीन के जरिए सर्जरी करेंगे। एडवांस रोबोटिक सिस्टम मॉडर्न तकनीक को एम्स में स्थापित करने के लिए आर्थिक सहायता नॉर्दर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) के तहत देगा। दोनों संस्थान के बीच एमओयू किया गया है। यह सेटअप राइज (रोबोटिक एसिसटेड इंटरवेंशन फॉर सर्जिकल एक्सीलेंस) प्रोजेक्ट के तहत तैयार किया जाएगा।

प्रोजेक्ट राइज का उद्देश्य पहले से अधिक सुरक्षित और सटीक उपचार देना है। मध्यप्रदेश के उपमुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ल वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से एमओयू का हिस्सा बने। उन्होंने कहा कि यह पहल प्रदेश के नागरिकों को उन्नत स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने में मील का पत्थर साबित होगी। एम्स के निदेशक डॉ. माधवा नंदकर और एनसीएल के सीएसआर विभाग के महाप्रबंधक राजीव रंजन मौजूद रहे। इनके साथ डॉ. रेहान उल हक (डीन-रिसर्च), डॉ. (मेजर) मयंक दीक्षित (उप-चिकित्सा अधीक्षक), यूरोलॉजी विभाग से डॉ. देवाशीष कौशल व डॉ. केतन मेहरा और सीटीवीएस विभाग से डॉ. विक्रम बट्टी भी उपस्थित रहे।

पहला सरकारी अस्पताल होगा एम्स

एम्स के वरिष्ठ चिकित्सक ने कहा, भोपाल का एम्स के यूरोलॉजी विभाग में जल्द ही दा विंची रोबोटिक आर्म सिस्टम स्थापित किया जाएगा। यह एम्स भोपाल को मध्य भारत का पहला सरकारी अस्पताल बनाएगा, जहां रोबोट की मदद से जटिल ऑपरेशन किए जाएंगे।

तीन हिस्सों में काम करेगा रोबोट

इस सिस्टम में एक कंसोल सिस्टम और दो रोबोटिक आर्म शामिल होंगे। डॉक्टर अपने कंसोल से कमांड देंगे और ऑपरेशन थिएटर में मौजूद रोबोटिक आर्म उन आदेशों के मुताबिक सर्जरी करेगा। खास बात यह है कि एक मोबाइल रोबोटिक आर्म भी होगा, जिसे दुनिया के किसी भी हिस्से में ले जाकर ऑपरेशन किया जा सकेगा। इस तरह भोपाल का डॉक्टर विदेश में बैठे मरीज का भी ऑपरेशन कर पाएगा।

एम्स में मौजूद प्रशिक्षित डॉक्टर

यूरोलॉजी विभाग के डॉक्टर केतन मेहरा ऑस्ट्रिया से रोबोटिक सर्जरी का कोर्स पूरा कर लौटे हैं। शुरुआत यूरोलॉजी विभाग से होगी और धीरे-धीरे अन्य विभागों में भी इसका इस्तेमाल होगा। इस तकनीक से प्रोस्टेट कैंसर, पेशाब की थैली का कैंसर, किडनी का कैंसर जैसे जटिल ऑपरेशन आसानी से किए जा सकेंगे।

10 गुना ज्यादा संवेदनशील

इस रोबोटिक आर्म का कैमरा सामान्य आंख से दस गुना ज्यादा संवेदनशील है। हाई डेफिनिशन इमेजिंग सिस्टम डॉक्टर को शरीर के सबसे बारीक हिस्से तक देखने की सुविधा देता है। थ्रीडी विजन के कारण डॉक्टर उन जगहों को भी स्पष्ट देख पाएंगे, जहां मानव आंख से देखना मुश्किल है।

यह मिलेगा फायदा

- सर्जरी छोटे छेद से होगी, बड़े कट की जरूरत नहीं पड़ेगी।
- मरीज का खून कम बहेगा और रिकवरी तेजी से होगी।
- डॉक्टर अत्यधिक जटिल हिस्सों तक पहुंचकर ऑपरेशन कर पाएंगे।
- मरीजों के लिए यह तकनीक अधिक सुरक्षित और कारगर साबित होगी।

मांग भी तेजी से बढ़ रही

एम्स भोपाल के डिप्टी डायरेक्टर संदेश जैन ने कहा कि वर्तमान में बीमारियों की जटिलता बढ़ रही है, ऐसे में रोबोटिक सर्जरी की मांग भी तेजी से बढ़ रही है। यह तकनीक पारंपरिक सर्जरी की तुलना में ज्यादा प्रभावी और सुरक्षित है।

बचा सकते थे बच्चों की जान पहला केस 24 अगस्त को पहली मौत 7 सितंबर को..

छिंदवाड़ा में 15 दिन में किडनी फेल होने से एक-एक कर 6 बच्चों की मौत हो गई। इनकी किडनी के स्याब के सैंपल लिए गए। इसकी जांच में डायएथिलीन ग्लायकॉल दूषित पाया गया। प्रारंभिक कारण में मासूमों की किडनी फेल होने की वजह इसी को बताया गया है। इसके अतिरिक्त 5 से 6 बच्चों का इलाज नागपुर के अलग-अलग अस्पतालों और कुछ का छिंदवाड़ा के सरकारी अस्पतालों में इलाज जारी है। इनमें भी दो-तीन बच्चों की स्थिति नाजुक बनी हुई है। छिंदवाड़ा मेडिकल कॉलेज डॉ पवन नांदुलकर शिशु रोग विशेषज्ञ ने बताया कि नागपुर में भर्ती बच्चों की किडनी बायोप्सी हुई थी। जांच में सामने आया कि एक कफ सिरप 80 फीसदी बच्चों में कॉमन है। प्रारंभिक जांच में कफ सीरफ में गड़बड़ी की ही बात सामने आ रही है।जांच के लिए बनाई गई एक्सपर्ट कमेटी के विशेषज्ञों की सलाह के बाद छिंदवाड़ा कलेक्टर ने मंगलवार को मार्केट में कोल्ड्रिफ और नेक्सट्रॉस डीएस कफ सिरप बेचने पर प्रतिबंध लगा दिया है। पेरेंट्स, डॉक्टर और मेडिकल संचालकों के लिए एडवाइजरी भी जारी की है। इसमें कहा गया है कि बच्चों को इन दवाओं से दूर रखा जाए। 20 सितंबर के बाद छिंदवाड़ा के अलग-अलग हिस्सों में सर्दी-खांसी और बुखार के बाद कई बच्चों की यूरिन (पेशाब) बंद हो गई थी। जिला प्रशासन ने दवाओं के सैंपल जब्त कर जांच के लिए भेज दिए हैं। ऐसे पता चला कि कफ सीरप खराब कर रहा किडनी ? इस रिपोर्ट के मिलने के बाद ने जिले के अधिकारियों के साथ मीटिंग की। इसमें सीईओ जिला पंचायत, सीएमएचओ, मेडिकल कॉलेज डीन, डॉक्टर्स, ड्रग्स इंस्पेक्टर और बाकी अधिकारी मौजूद थे। इस बैठक में कोल्ड्रिफ और नेक्सट्रॉस डीएस कफ सीरप की बिक्री पर प्रतिबंध लगाया गया है। पता चला कि किडनी फेल होने की वजह से मौत हुई है। इंडियन काउंसिल फॉर मेडिकल रिसर्च दिल्ली की टीम को सूचित किया गया। टीम ने यहां कई स्तर पर जांच की। हमने भी बच्चों के ब्लड सैंपल पुणे के वायरोलॉजी इंस्टीट्यूट भेजे। जिन गांव के बच्चों की मौत हुई, वहां के पानी की भी जांच कराई गई। इस जांच में ऐसा कोई इन्फेक्शन नहीं मिला।

काश! ये समय पर दवा को रोक देते- सीएमएचओ डॉ. नरेश गुन्नाडे के मुताबिक- पहला संदिग्ध मामला 24 अगस्त को सामने आया था। पहली मौत 7 सितंबर को हुई थी। शुरुआती लक्षणों में बच्चों को तेज बुखार और पेशाब करने में कठिनाई हो रही थी। छिंदवाड़ा मेडिकल कॉलेज के शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. पवन नांदुलकर कहते हैं- जिन बच्चों को ये समस्या हो रही थी, उन्हें नागपुर रेफर किया गया था।वहां इलाज चला, लेकिन उन्हें बचाया नहीं जा सका। आयुक्त स्वास्थ्य विभाग तरुण राठी ने कहा कि सीएमएचओ से बात कर बताता हूं घटना क्या है? देर रात तक दोबारा फोन नहीं उठाया।

वायरल इन्फेक्शन नहीं था, खून जांच भी सही- बच्चों के ब्लड सैंपल पुणे के वायरोलॉजी इंस्टीट्यूट जांच के लिए भेजे गए। रिपोर्ट में ऐसा कोई वायरल इन्फेक्शन नहीं मिला, जिससे किडनी खराब हो। न ही इस बात की पुष्टि हुई कि ये बीमारी संक्रामक है। जिन गांवों में बच्चों के किडनी फेल होने के केस आए, जहां बच्चों की मौत हुई, वहां के पानी की जांच कराई गई। लेकिन ये भी सामान्य निकला। बीते हफ्ते भर में 3500 से ज्यादा छोटे बच्चों के खून की सीआरपी जांच हुई, ताकि इन्फेक्शन का पता लगाया जा सके। लेकिन इसमें अधिकांश रिपोर्ट ठीक थी।

एंबुलेंस नहीं मिली, ई-रिक्शा से घर लाए मरीज की मौत

बेटी का आरोप- आयुष्मान कार्ड होने के बावजूद सरकारी अस्पताल में भर्ती करने से मना किया

खजुराहो (नप्र)। छतरपुर जिले की लचर स्वास्थ्य व्यवस्था की एक और दर्दनाक तस्वीर सामने आई है। एंबुलेंस नहीं मिलने के कारण जिस हलकन अहिरवार नामक मरीज को परिजन ऑक्सीजन सिलेंडर के साथ तेज धूप में ई-रिक्शा में अस्पताल से घर लाए थे, उनकी मौत हो गई है। यह घटना खजुराहो रोड पर हुई थी और इसका वीडियो सामने आया है, जिसने प्रशासन पर सवाल खड़े किए थे।दिहाड़ी मजदूरी करने वाले इस गरीब परिवार ने अब तक इलाज पर करीब 1.50 लाख रुपए खर्च कर दिए थे।

ऑक्सीजन का संघर्ष: परिवार ने 5 हजार रुपए में दो ऑक्सीजन सिलेंडर खरीदे, जिन्हें रोजाना 300 और 250 खर्च कर भरवाना पड़ता था। रिक्शा और रेगुलेटर पर भी 2400 खर्च हुए।

मजदूरी छूटी: पिता की देखभाल के चलते दो महीने से परिवार का कोई भी सदस्य काम पर नहीं जा पाया था।

योजनाओं का लाभ नहीं: बेटी ने आरोप लगाया कि आयुष्मान कार्ड से भी केवल कुछ दवाएं ही मिलीं, बाकी दवाएं मेडिकल स्टोर से खरीदनी पड़ीं। सरकार की योजनाओं का लाभ गरीबों तक नहीं पहुंच पाता और डॉक्टर ही खा जाते हैं, आयुष्मान कार्ड था, लेकिन उसका फायदा नहीं मिला।

चार अस्पतालों के चक्कर, आखिरकार घर पर तोड़ा दम- परिजनों ने बताया कि 25 सितंबर को हलकन अहिरवार की हालत बिगड़ने पर उन्हें जिला अस्पताल ले जाया गया। वहां दो दिन भर्ती रखने के बाद ग्वालियर रेफर कर दिया गया। ग्वालियर में भी 27 से 29 सितंबर तक भर्ती रहने के बाद डॉक्टरों ने इलाज से मना कर दिया। वापस लौटने पर प्राइवेट एंबुलेंस के 7 हजार रुपए लगे। 30 सितंबर को बमीठा के प्राइवेट अस्पताल ले जाने पर वहां से भी मना कर दिया गया और आखिरकार मरीज को घर लौटना पड़ा, जहां उनकी मौत हो गई।

एंबुलेंस के लिए लगातार फोन, फिर भी मदद नहीं- मृतक के भतीजे कैलाश अहिरवार ने बताया कि उन्होंने एंबुलेंस के लिए लगातार फोन किए, लेकिन कोई मदद नहीं मिली। उन्होंने आरोप लगाया कि अस्पताल में पहले ऑक्सीजन दी गई, लेकिन बाद में अस्पताल वालों ने ऑक्सीजन देने से मना कर दिया, जिसके बाद मजबूरन घर पर सिलेंडर खरीदकर लगाना पड़ा।

संपादकीय

संघ : सांस्कृतिक आंदोलन की सदी

देश के सबसे बड़े गैर सरकारी सांस्कृतिक सामाजिक संगठन राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (आरएसएस) के सौ साल पूर्ण होना और इन सौ सालों में संघ के काम का लगातार विस्तारित होते जाना अपने आप महत्वपूर्ण ऐतिहासिक और सांस्कृतिक घटना है। वर्ष 1925 की विजयादशमी पर हिंदुत्व की विचारधारा से प्रेरित इस संगठन की नींव रखी गई थी। तब शायद ही किसी ने सोचा होगा कि यह संगठन देश के बहुसंख्यक समाज में इतनी गहरी पैठ बना लेगा और आजादी के अमृत वर्ष में हिंदुत्व को केन्द्रीय विचार मानने वाली एक मजबूत सरकार देश पर राज करेगी। यूं संघ स्वयंसेवक रहे अटल बिहारी वाजपेयी पहले राष्ट्रवादी प्रधानमंत्री थे, लेकिन सही मायने में संघ की विचारधारा का प्रतिनिधित्व नरेन्द्र मोदी ही करते हैं, क्योंकि मोदी स्वयं आरएसएस के प्रचारक भी रहे हैं और उनकी कार्यशैली संघ सोच से ओतप्रोत रही है। यह सवाल अक्सर पूछा जाता है कि संघ की विचारधारा आखिर है क्या? इसका संक्षिप्त उत्तर यही है कि संघ के मुताबिक हिंदू धर्म और सनातन दर्शन ही भारत की आत्मा है। यही विचार भारत को एक रखने में सक्षम है। जिस दिन हिंदू कमजोर होगा, यह देश टुकड़ों में बंट जाएगा और विश्व की सबसे पुरातन और अखंडित सांस्कृतिक धारा का लोप होने लगेगा। ऐसा होना न तो हिंदुओंके लिए लाभकारी है और न ही विश्व शांति और समृद्धि की तलाश करने वाली बाकी दुनिया के हित में होगा। यूं संघ की हिंदुत्व की परिभाषा बहुत व्यापक है। यानी हिंदुस्तान का वासी है, वह हिंदू है और सनातन उसकी धर्मध्वजा। इसका अर्थ यह नहीं है कि संघ हिंदू धर्म के अन्य सम्प्रदायों का विरोधी है, वह समरसता की बात करता है न कि विभाजन की। यही कारण है कि संघ जातिवाद और छुआछूत को सिरे से खारिज करता है और हिंदु धर्म की विभिन्न जातियों और सम्प्रदायों में एकता की बात करता हूं। संघ का स्पष्ट मानना है कि हिंदू एक रहेगा तो यह देश भी एक रहेगा। हिंदूतर धर्मों का लक्ष्य देश को विभाजित करना है, जैसा कि भारत 1947 में देख चुका है। दुर्भाग्य से यह सचाई है कि हिंदू धर्म बदलते ही सबसे पहले हिंदुओं और हिंदुत्व का दुश्मन बन जाता है, जबकि सभी की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत एक सी है। बीते सालो में संघ पर लगातार हमले हुए। वैचारिक रूप से उसे अछूत मानने की कोशिश हुई। उसे विभाजनकारी और महात्मा गांधी का हत्यारा तक कहा गया। उस पर केन्द्र में बैठी सरकार ने तीन बार प्रतिबन्ध भी लगाया। लेकिन हर प्रतिबंध के बाद संघ और ताकतवर होकर उभरा। दरअसल संघ की असल ताकत केवल हिंदुत्व का नारा भर नहीं है, बल्कि वो कार्य है, जो सामाजिक क्षेत्र में संघ एक सदी करता चला आ रहा है और वो है हिंदू जागरण। हिंदुओंको अपनी अस्मिता और शक्ति का अहसास कराना तथा आपसी ऐक्य के साथ एक वैश्विक शक्ति के रूप में उभरना। इसके अलावा विश्व भर में हिंदुओं के हितों के लिए लड़ना भी संघ के प्रमुख उद्देश्यों में रहा है। आज संघ के जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में 4 सौ से अधिक प्रकल्प चल रहे हैं। देश भर में संघ की 63 हजार से अधिक शाखाएं है, जो संघ की बुनियादी इकाई है और स्वयंसेवक का प्रशिक्षण वहीं से शुरू होता है। संघ का दखल छोटे कारीगरों से लेकर विदेश नीति तक में है। यह सब संघ के स्वयंसेवकों और प्रचारकों की अनथक मेहनत से ही संभव हुआ है। आलोचक संघ को हिंदुत्ववादी, प्रतिगामी और फासीवादी संगठन कहते हैं। लेकिन हकीकत काफी अलग है। ध्येयनिष्ठ होने के बाद भी संघ की सोच और कार्यशैली में काफी लचीलापन है। तिरंगे और गांधी का स्वीकार इसका उदाहरण है।

नजरिया

रघु ठाकुर

लेखक समाजवादी विचारक हैं।

गांधी के विरुद्ध आरोपों का उत्तर देश को देना है

2 अक्टूबर गाँधी का जन्मदिवस है और सदा की तरह उनके जन्म दिवस के अवसर पर सरकारें उन्हें श्रद्धांजलि देने और कुछ गुणगान करने की औपचारिकतायें पूरी करेगी। देश में आज भी गाँधी आमजन के लिये सबसे बड़े ब्रांड हैं, इसलिये प्रचारतंत्र में भी महात्मा गाँधी के बारे में कुछ सरकारी या गैर सरकारी विज्ञापन, कुछ राजनेताओं, संस्थाओं के फोटो आदि छपेंगे। परन्तु गाँधी पर जो हमले विशेषतः हाल ही के वर्षों में शुरु हुये है वे भी कम चिंताजनक नहीं है। ऐसा नही कोई इसके पहले केन्द्र या सूबे की सरकारें गाँधी की अनुयायी रही हो। वे गाँधी की पूजक थी परन्तु गाँधी को मानने वाली नही थी। चूँकि गाँधी आजादी के आन्दोलन के और आजादी तथा भारत के बँटवारे के पहले तक कांग्रेस के बगैर पद के सर्वमान्य नेता थे, अतरू गाँधी के विरुद्ध कोई घोषित या अघोषित चरित्र हत्या का प्रयास उन सरकारों की ओर से नही हुआ। परन्तु अब वर्तमान सरकार की जो नियंत्रक संस्थायें है और जो उनके वैचारिक मार्ग दर्शक भी है, उनकी तरफ से गाँधी के विरुद्ध चरित्र हत्या का एक सुनियोजित अभियान चल रहा है। जाहिर तौर पर तो इन संस्थाओं के शीर्ष पदाधिकारी महात्मा गांधी को महान बताते है परन्तु यह आश्चर्यजनक है कि उनकी ही संस्थाओं के अन्य अनुयायी इस अभियान को आगे बढ़ाते है। उनके शीर्ष नेतृत्व और इन मैदानी योद्धाओं के बीच क्या कोई दुरभि संधि है? यह एक रहस्य है और खोज का विषय है। हिन्दु राष्ट्र और उसके पीछे छिपी हुई सवर्णवादी आंकाक्षायें एक चाल का नुवर्तित्व का दीर्घ कालिक अभ्यास और परम्परा व्यक्ति को मशीन के समान स्थिर बना देती है। वैसे भी हमारा भारतीय समाज शब्दों में उदार और कर्म में क्रूरता के पाखंड का अभ्यस्त रहा है। हम कण कण में भगवान भी मानते है पत्थर और जानवरों में भी भगवान देखते हैं उन्हें अपनी महान संस्कृति परम्परा निरुपित करते हैं और जाति आधार पर उसी इन्सान से जानवर से भी बदतर व्यवहार करते हैं। हमारा प्रिय कुत्ता पलंग पर साथ सो सकता है परन्तु इंसान हमारे वर्तन को छू भी नहीं सकता।

महात्मा गाँधी कहते थे कि उनका जीवन ही उनका संदेश है। याने वे जो विश्वास करते थे उसे न केवल साहस के साथ कहते थे बल्कि उस पर अमल भी करते थे। उनके कथन से कौन खुश होगा, कौन नाराज होगा लोग उन पर फूल फेकेंगे या पत्थर फेकेंगे यह उनकी चिंता का विषय नही रहा और इसलिये गांधी ने अपने जीवन काल में भी भीतर और बाहर अपने और पराये से भारी हमले सहे। गाँधी ने अपनी आजादी को अक्षुण्ण रखा और दूसरों की आजादी को उतना ही सम्मान दिया। गाँधी के लिये आजादी केवल अपनी आजादी नहीं थी बल्कि कई बार तो अपने से ज्यादा दूसरे की आजादी थी।

गांधी पर पिछले दिनों जो आरोपों के हमले हुये हैं और अगर कहा जाये तो जो झूठ अभियान शुरू किया गया, वह निम्न प्रकार का है-

1. देश को आजादी अहिंसा या चरखे से नहीं मिली बल्कि क्रांतिकारी आंदोलनों और हिंसा की वजह से मिली।

2. गांधी ने भगतसिंह, की फांसी को रोकने के लिए कुछ प्रयास नहीं किए बल्कि कुछ लोग तो यह भी लिख रहे हैं कि गांधी ने तत्कालीन गवर्नर जनरल को यह कहा था कि कराची में कांग्रेस का अधिवेशन होना है, इसलिए वे भगत सिंह को शीघ्र फांसी दे दें ताकि कांग्रेस के सम्मेलन के समय भगतसिंह के अनुयायिओं के द्वारा कोई अशांति न हो।

3. गांधी ने सुभाष बाबू को सम्मान नहीं दिया।

4. महात्मा गांधी ने कहा था कि भारत पाकिस्तान का बंटवारा उनकी लाश पर होगा परंतु वे अपने वायदे से मुकर गए।

5. आजादी का दस्तावेज तो 1935 में ही तैयार हो गया था और जिस पर गांधी ने हस्ताक्षर किए थे।

6. गांधी ने मुसलमानों को ज्यादा महत्व दिया और पाकिस्तान को 60 करोड़ रुपया दिलाने के लिए जो दबाव डाला वह हिंदू विरोधी था।

7. गांधी ने वल्लभ भाई पटेल को प्रधानमंत्री नहीं बनने दिया।

8. गोडसे ने गांधी की हत्या कर जिसे उनके शब्द में गांधी वध्य कहा जाता है अच्छा काम किया था कुछ लोग तो गोडसे को महात्मा सिद्ध करते हैं।

9. भारत के पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम से अप्रत्यक्ष तुलना कर यह कहा जाता है कि वे सच्चे महात्मा थे और इशारे इशारे में यह कहने का प्रयास होता है कि गांधी महात्मा नहीं थे।

10. गांधी राष्ट्रपिता नहीं है और कुछ लोग तो यह कहते हुए इतने उत्साहित या विकृत हो जाते हैं कि गांधी जैसा हड्डियों का ढांचे वाला राष्ट्रपिता कैसे हो सकता है।

ऐसे और भी अनेकों झूठे आरोप गांधी के ऊपर सोशल मीडिया के माध्यम से लगाए जा रहे हैं और अब इनका जवाब न कुछ अखबार छोड़कर गांधीवादी, न कांग्रेसी और वर्षानुवर्ष तक गांधी का नाम बेचकर जो सियासत की रोटी पकाने वाले रहे हैं उनके द्वारा पता नहीं क्यों दिया दिया जा रहा है।

अगर कांग्रेस के किसी वर्तमान नेता पर सही या गलत आरोप सोशल मीडिया में आते हैं तो सैकड़ों प्रतिवाद आते जाते हैं क्योंकि प्रतिवाद के लिए बाकायदा समूह और कम्पनियां बनी हुई हैं। यह और भी दुखद है कि जब समूची दुनिया गांधी में ही समाज का भविष्य और आदर्श खोज रही है भारत की युवा पीढ़ी को फिर से एक बार गांधी विरोधी बनाने का सुनियोजित अभियान चलाया जा रहा है जिस प्रकार की घृणा गांधी के खिलाफ 1946-47 में पैदा की गई थी जो कानों कानों अफवाह के माध्यम से पैदा की गई थी, लगभग उसी तर्ज पर गांधी को देश की युवा पीढ़ी में घृणास्पद बनाने का अभियान चला हुआ है। न कोई तथ्य, न कोई तिथी, न कोई प्रमाण परन्तु आरोपो की बरसात हो रही है। इस समय देश में शायद गांधी इस अर्थ में सबसे निरीह हैं कि उनके विरुद्ध कोई भी कुछ भी कह सकता है। अगर बाल ठाकरे के खिलाफ कोई प्रतिक्रिया कर दे तो मुंबई जलने लगेगी और सरकारे मुकदमा दर्ज करने रहे लगेगी, परन्तु गांधी के खिलाफ कितना भी गन्दा से गन्दा झूठ लिखा जाता रहे, पर कार्यवाही तो दूर ठीक से प्रतिवाद तक नहीं होगा।

देश की युवा पीढ़ी जो सोशल मीडिया को ही अपनी जानकारी का अंतिम माध्यम समझती है। वह गांधी के प्रति उपेक्षा और अपराधी जैसा भाव पाल रही है। जब-जब मैं नई पीढ़ी के युवकों से चर्चा करता हूँ तो ज्यादातर नौजवान दुष्प्रचार से प्रभावित नजर आते है। यहाँ तक कि आप पार्टी के एक ऐसे नेता जो पत्रकार भी रहे है ने गांधी के ऊपर विवाहेत्तर संबंधों का शर्मनाक आरोप लगाया है।

संघ पृष्ठ भूमि के एक बुद्धजीवी श्री शंकर शरण है जो किसी भी व्यक्ति के खिलाफ बातों को गलत ढंग से प्रस्तुत कर अपने निष्कर्ष निकालने में माहिर है। हाल में ही उन्होंने एक लेख में लिखा गांधी जी सुहरावर्दी जैसे हत्यारो को भाई कहकर मामला पटाना चाहते थे। अब जिहादियों को परिवार कहकर वही कोशिश हो रही है। इन्हें गांधी के बारे में यह भी समझ नही है कि गांधी अंहिसा और प्रेम के चरम बिन्दु पर थे जहाँ उनकी नजरो में उनका कोई शत्रु नहीं था और वे इंसान के मन को बदलने का सतत् प्रयास करते थे परन्तु तथ्य और सत्य से मुँह भी नही मोड़ते थे। अपने इसी लेख में श्री शंकरशरण ने लिखा कि श्री अरविन्द के बाद उभरे गांधी नेतृत्व ने इस सभ्यता संघर्ष को बाहर कर दिया। इनके द्वारा प्रयुक्त शब्द श्सभ्यता संघर्ष्य लगभग हटिंगटन को नकल जैसा है जिसने सभ्यताओं का संघर्ष पुस्तक लिखकर ईसाईयत और ईस्लाम के बीच स्थाई संघर्ष की नीति के रूप में प्रस्तुत किया था। गांधी सभ्यताओं के कटघरे में बँटे हुये नही थे बल्कि गांधी एक नई सभ्यता का निर्माण कर रहे थे और यही कारण है कि श्री अरविन्दो स्वतंत्रता सेनानी थे, आध्यतमिकता में महान थे, परन्तु समूचे देश को अपने साथ एक जुटकर अंग्रेजो के खिलाफखड़ा नही कर सके थे। यह महान कार्य गांधी ने ही किया। अगर गांधी सभ्यताओं के संघर्ष पर चले होते तो हम अभी भी चर्चिल के उत्ताराधिकारियों के गुलाम होते। आज अगर शंकशरण जैसे लोग आजादी के साथ अपने भ्रामक विचार और तथ्य रख पाते है तो यह गांधी की ही देन है। इनकी सभ्यता और शक्ति तब कहाँ थी जब हमलावर मुगल, आये और देश पर कब्जा कर लिया और जब अंग्रेज आये तो उन्होंने देश पर कब्जा कर लिया। यह स्पष्ट है कि बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ विदेशी पूंजी और वैश्वीकरण की ताकतें देश को मानसिक रूप से जाति और मजहबी आधार पर विभाजित रखना चाहती है तभी उनकी सत्ता कायम रहेगी और पूंजी वाद स्थायी रहेगा, सोशल मीडिया पर चर्चित जिन आरोपों को हमने ऊपर लिखा है उनके संदर्भ में मेरा प्रस्तुतीकरण निम्नानुसार है।

1. देश की आजादी में सभी का योगदान है पिस्तौल वालों का भी और चरखे वालों का भी। परन्तु पिस्तौल व चरखे के बीच बड़ा फर्क है, पिस्तौल वाले की कुर्बानी का जज्बा एक महान कर्म था। जिसने देश के युवा पीढ़ी को विदशी हुकूमत के खिलाफ आक्रोशित किया परन्तु संख्या के दृष्टि से वह देश का प्रतिनिधि आंदोलन नही बन सका। गांधी का चरखा व नमक देश के जन जन का आंदोलन बन गया। इसमें इनके बीच भिन्नता व दूरी खोजने के वजाह इन्हें एक सामूहिक व समूचे प्रयास के हिस्से के रुप में देखना चाहिये। किसी को भी नकारना नही चाहिये।

2. महात्मा गांधी ने भगत सिंह की फांसी रद्द करने के लिये वायसराय से बात की थी व समझाने का प्रयास किया था। वायसराय को यह खतरा महसूस हुआ कि गांधी कहीं अनशन या आंदोलन न शुरु कर दें। इसलिये गाँधी के आंदोलन के भय से भगत सिंह को निर्धारित समय से पूर्व फांसी दे दी। भगत सिंह के नकली प्रेमियों से यह भी पूछा जाना चाहिये कि अगर भगत सिंह की फांसी बच गई होती तो क्या भगत सिंह शहीदे आजम बन गये होते। भगत सिंह ने स्वतः गांधी के प्रति सम्मान का भाव रखा और कभी कोई आरोप नहीं लगाया।

3. नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने ही सबसे पहले गांधी को राष्ट्रपिता के नाम से सम्बोधित किया था उनके किसी भाषण या लेख में गांधी के प्रति एक भी असंतोष का शब्द नहीं है, बल्कि 9 अगस्त 1942 को गांधी जी ने जब भारत छोड़ो आंदोलन शुरु किया तब उसका समर्थन सुभाष बाबू ने जोरदार ढंग से किया था।

4. गांधी ने जब यह कहा था कि भारत पाकिस्तान का बँटवारा उनकी लाश पर होगा तब उन्होंने एक प्रकार से कांग्रेस नेतृत्व को एक कड़ा संदेश देने का प्रयास किया था कि वे बँटवारे का प्रस्ताव स्वीकार न करे। परन्तु जब भारत पाक का बँटवारा गांधी की राय के बगैर कांग्रेस नेतृत्व ने स्वीकार कर लिया जिसमें नेहरु के साथ स्वरूवल्लभ भाई पटेल शामिल थे तो गांधी आश्चर्यचकित रह गये थे। उनके द्वारा बनाया हुआ नेतृत्व ही उनके खिलाफथा और ऐसी परिस्थिति में तत्काल कोई बड़ा आंदोलन संगठित करना सम्भव नही था। गांधी ने कांग्रेस पार्टी की विशेष कार्य समिति बुलाकर कांग्रेस के इस निर्णय को बदलवाने का प्रयास किया था परन्तु वे अल्पमत में हो गये और उन्होंने उपयुक्त समय का इंतजार करना उचित समझा। यह देश का दुर्भाग्य है कि मुश्किल से 6 माह के अंदर महात्मा गांधी की हत्या हो गई और अब यह कहा जा सकता है कि भारत पाक का बँटवारा गांधी की लाश पर ही हुआ। कुछ लोग यह भी तर्क देते है कि गांधी के बयान के बाद जो हिन्दू वर्तमान पाकिस्तान से हिन्दुस्तान आना चाहते थे जबकि तथ्य यह है कि ब्रिटिश हुकूमत ने अंतिम वायसराय माऊंटबेटन के हिन्दुस्तान के विभाजन के लक्ष्य के साथ ही भेजा था, और 1946 के समाचार पत्रो में इस आशय की खबरे छपती रही थी। फिर उस समय अगर लोग अपना घर बार छोड़ कर वर्तमान भारत में आते तो कहाँ रहते। कोई अंग्रेज सरकार तो उन्हें बसाने वाली नहीं थी। ये बहादुर प्रचारक उनकी अपनी सरकारों से कश्मीरी पंडितों को वापिस कश्मीर में नही बसा पाये जबकि 6 साल वाजपेयी प्रधानमंत्री रहे और अब ग्यारह साल से श्री नरेन्द्र मोदी जी है। 1935 का प्रस्ताव ब्रिटिश हुकमत का था जिसे गांधी ने स्वीकार नही किया था और न गांधी के हस्ताक्षर है।

5. नेहरु और वल्लभभाई पटेल कांग्रेस पार्टी के द्वारा बँटवारे का प्रस्ताव स्वीकार करते समय से परस्पर काफी नजदीक थे और गांधी का विश्वास लगभग खो चुके थे। विभाजन की लकीर को मिटाने के लिये और अपनी कल्पना के भारत को बनाने के लिये गांधी कई प्रस्तावों पर चिंतन और कार्य कर रहे थे। कांग्रेस पार्टी को पुनः अपने अनुरुप बदलना या कांग्रेस का नेतृत्व बदलना या कांग्रेस को भंग करना, दिल्ली से लाहौर की यात्रा निकालकर बगैर अनुमति के पाकिस्तान जाकर विभाजन की रेखा को मिटाना आदि आदि। ये अलोचक मित्र भूल जाते है कि महात्मा गांधी ने आजादी के बाद कांग्रेस को भंग करने का प्रस्ताव दिया था।

6. गांधी ने पाकिस्तान को बँटवारे के निर्णय के अनुरुप 60 करोड़ रुपये देने का इसलिये आग्रह किया था कि एक तो वह लिखित समझौता था और दूसरे पाकिस्तान की जनता का मन भी बदले। परन्तु गांधी के हत्यारे ने गांधी को अपने इन प्रयोगों का अवसर नहीं दिया। ये आरोप लगाने वाले लोग जाहिर तौर पर तो गांधी को महान कहते हैं परंतु इनके जी जमीनी कार्यकर्ता गांधी की हत्या के पक्ष में तर्क देते हैं।

7. पूर्व राष्ट्रपति श्री कलाम एक भले इंसान थे जिन्हें राष्ट्रपति के पद पर चुनना अल्पमत वाली भाजपा सरकार की लाचारी थी और मुलायम सिंह का समर्थन देने के लिये एक बहाने की आवश्यकता थी कि कलाम साहब मुसलमान है। अगर गांधी के साथ तुलना का प्रयास कलाम साहब के जीवनकाल में किसी ने किया होता तो मेरी राय में कलाम साहब यह कहते कि सच्चे महात्मा और राष्ट्रपिता गांधी ही थे।

8. गांधी को राष्ट्रपिता की उपाधी नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने दी थी और इसलिये कि देश में सर्वमान्य के रूप में जिन्हें उनका समर्थक या विरोधी एक समान देखता था वह एक मात्र गांधी ही थे और गांधी जितने अपनों के थे, याने उनके समर्थकों के उससे ज्यादा गांधी अपने विरोधियों के प्रति ममता मय थे। कई बार तो वे अपनों पर कठोर होते थे और दूसरों पर प्रेम बरसाते थे। देश को एकजुट करने का उनका प्रेम ही सबसे बड़ा हथियार था।

मैं अपनी बात यह कहकर समाप्त करूँगा कि अंततः गांधी जीतेंगे और निंदा हारेगी। परंतु इसे नियति मानकर गांधी के मानने वालों को अपना कर्तव्य नहीं छोड़ना चाहिये। अब यह जरूरी है कि गांधी के विरोधियों से सोशल मीडिया से लेकर हर मंच पर खुला संवाद किया जाये और उनके भ्रमों का निराकरण कर उनके मस्तिष्क को विषहीन किया जाये। सरकारों से भी अब यह मांग करना चाहिये कि सोशल मीडिया पर गांधी के बारे में लिखे जा रहे झूठे और दुष्प्रचार को रोकने के लिये एक मोनिटरिंग सेल का गठन करें क्योंकि अब गांधी के विरूद्ध आरोपों का उत्तर गांधी को नहीं बल्कि देश को देना है।

गांधी जयंती

अनिल त्रिवेदी

लेखक अभिभाषक हैं।

गांधी महज सिद्धांत नहीं सरल व्यवहार है

पोरबन्दर में 2अक्टूबर 1869 को यानी आज से एक सौ पचपन साल पहले जो बालक जन्मा था। वह डेढ़ सौ से अधिक सालों बाद भी आज समूची मनुष्यता के लिये प्रेरक पुंज की तरह हमारे निजी और सार्वजनिक जीवन के सवालों में किसी न किसी रूप में मौजूद हैं। गांधी हम सबके लिये सवाल नहीं समाधान है। गांधीजी जीवन की जटिलता को विपन्न से लेकर सम्पन्न सभ्यताओं के लिये सरलतम समाधान सुझाते हैं।गांधी से पहले और बाद भी ईश्वर को लेकर कई मत-मतांतर हम सब के दिल दिमाग में रचे बसे है। साकार निराकार की बहस भी कायम है पर गांधीजी ने सिखाया सत्य ही ईश्वर है। अब सवाल यह है कि सत्य क्या है? तो गांधीजी ने न केवल समझाया वरन निजी और सार्वजनिक जीवन जीकर भी सिखाया कि सत्य सनातन सहज व्यवहार है। सत्य से परे मानव व्यवहार जीवन का संकुचन है।जैसे प्रकृति प्राणवायुमय हैं वैसे ही सत्य मनुष्य की जीवनी शक्ति है। शायद इसी समझ को लोगों को समझाने के लिये गांधी ने अपनी आत्मकथा को सत्य के प्रयोग कहा। सत्य और अहिंसा जीवन के प्राकृतिक वैभव है जैसे वनस्पति में पत्ते फूल और फल वृक्ष का वैभव है। इनके बिना वृक्ष ठूंठ कहलाता है वैसे ही सत्य और अहिंसा के बिना मानव महज हड्डियों का ढांचा है निष्प्राण हैं। सत्य और अहिंसा मानव समाज की सहजता का सनातन विचार हैं।

गांधीजी को बचपन में अंधेरे से भय लगता था। उस उम्र में प्रायः सभी के मन में अंधेरे का भय होता है। पर गांधीजी ने सबके मन से भय को दूर करने के लिये सत्याग्रह के रूप में सत्य और अहिंसा के साधन से मन में निर्भयता लाने का व्यवहारिक उपाय समूची दुनिया को समझाया। न डरेंगे न डरायेंगे। असत्य न बोलेंगे न सत्य को कभी छोड़ेंगे।साधारण से साधारण मनुष्य के मन में निर्भयता से ही मनुष्य जीवन को सत्यनिष्ठ बनाने और सत्यनिष्ठा ही व्यक्ति और समाज में निर्भयता लाने का सरलतम उपाय है यह सिद्धांत लोगों के दिल दिमाग में उतारा। जिससे भारत की आजादी की लड़ाई ने सारी मनुष्यता को नया और अनोखा रास्ता दिखाया। सादगी और सरलता जीवन जीने के सहज उपाय है जिसे हम सब बिना किसी जटिलता के अपने जीवन में आजीवन खुद ही निभा सकते हैं। गांधीजी ने जीवन की जरूरतों को कम से कम रखते हुए निजी और सार्वजनिक जीवन की मर्यादाओं को आत्मसात करके स्वराज्य के संकल्प को साकार बनाया। प्रामाणिकता को व्यापक अर्थ देते हुए हमारे शब्द, आचरण और समय की प्रामाणिकता हमारी जिन्दगी में हर समय होनी ही चाहिये तभी मनुष्य जीवन के साधन से जीवन का साध्य साकार हो पाता हैं।

गांधीजी न तो किसी काम को छोटा मानते थे और न ही मनुष्यों में किसी को छोटा बड़ा। शरीर श्रम नियमित दिनचर्या का अंग है श्रम करने से मन और तन दोनों तन्दुरूस्त बने रहते हैं यह गांधी का आरोग्यशास्त्र हैं।खाने को अस्वादव्रत से जोड़ कर गांधी ने जीने के लिये खाना ,न की खाने के लिये जीना को आरोग्य की कुंजी निरूपित किया। भोजन भवन और भूषा स्थानीय साधनों से निर्मित होने से टिकाऊ और प्राकृतिक स्वावलम्बन हर कोई सहजता से अपने निजी और सामाजिक जीवन में खुद ही ला सकता है।गांधीजी विकेन्द्रीकरण से स्वावलम्बी समाज की जरूरतों को स्थानीय प्रयासों से समन्वय के साथ पूरा कर ग्राम स्वराज्य का विस्तार करना ही प्राकृतिक विकास का क्रम समझते थे।जो जहां है उसकी रोजी रोटी की व्यवस्था यथासंभव स्थानीय साधनों से हो तो हमारा समाज सदैव सुरक्षित और खुशहाल बना रहेगा। विकेन्द्रित और स्वावलम्बी भारतीय समाज ही देश के सात लाख गांवों को आत्मविश्वास से परिपूर्ण व आत्मनिर्भरता के आर्थिक और सामाजिक ताने-बाने को सनातन रूप में कायम रखेगा। आर्थिक - राजनैतिक ताना-बाना भी गांव निर्भर होने से आत्मनिर्भरता और स्वावलम्बन का सतत प्रवाह हमारे लोकजीवन का अविभाज्य अंग बना रहेगा। गांधीजी गांवों की मजबूती से समूचे देश को सदैव सतर्क स्वावलम्बी और तेजस्वी बनाने के रास्ते पर चलने को ही देश की मजबूती का स्थायी कार्य समझते थे। गांधीजी कमजोर से कमजोर व्यक्ति की बेहतरी को केन्द्र में रखकर नीति और योजना बनाने की दृष्टि हम सबको दे गये। गांधीजी ने सरकार के लिये एक पैमाना दिया था कि जब भी हम कोई योजना बनाते हैं तो हमारा पैमाना यह होना चाहिये कि देश समाज के विपन्नतम नागरिक को उससे कोई लाभ हो रहा है या नहीं यही हमारा योजना लागू करने का पैमाना होना चाहिए।

गांधी ने सरल सहज जीवन के लिये जीवन की जरूरतों को कम से कम रखते हुए श्रमनिष्ठ जीवन को जीने का सरलतम रास्ता अपने निजी और सार्वजनिक जीवन में अपनाया। गांधीजी का मानना था हमारी धरती में प्राणीमात्र की आवश्यकताओं को पूरी करने की क्षमता हैं पर किसी एक के भी लोभ लालच को पूरा करने की क्षमता नहीं है। आवश्यकता की सीमा को समझना और लोभ लालच से दूर रहने की समझ विकसित करना सरल और आनंदमय शाश्वत जीवन की बुनियाद है। गांधीजी स्वयं तो आत्मविश्वास से परिपूर्ण तो थे ही साथ ही प्राणीमात्र पर पूरा विश्वास रख कर जीने के सनातन तरीके में विश्वास रखते थे।सेवा सादगी और सत्य निजी और सार्वजनिक जीवन का मूल है। गांधी जी ने सुधार से ज्यादा व्यवहार से ही सबको अपना साथी सहयोगी माना। एक बार साबरमती आश्रम में देर रात एक भाई आश्रम में संदेहात्मक रूप से चोरी करने की नियत से घुसे आश्रमवासियों ने उन्हें पकड़कर एक कमरे में बन्द कर दिया। सुबह की प्रार्थना के बाद आश्रमवासी उन भाई को गांधीजी के पास लेकर गये और कहा ये भाई रात को चोरी के इरादे से आश्रम में घुसे थे। गांधीजी ने आश्रमवासियों से पूछा इन भाई को सुबह का नाश्ता दिया कि नहीं? उन्हें लाने वाले आश्रमवासी हैरान हो गये और बोले बापू ये तो चोर है चोरी करने आये थे इन्हें क्यों नाश्ता? गांधीजी ने कहा ये भी आपके जैसे ही मनुष्य है आपने नाश्ता किया तो इन्हें भी सुबह का नाश्ता देना था। उन भाई की आंखों में आंसू आ गये और वे भावविभोर हो गये। उनका मन ऊर्जा से भर गया और वे गांधीजी के साथ आजादी की लड़ाई में पूरी तरह जुट गये। गांधीजी मनुष्य की ताकत को बढ़ाने वाले अनोखे संगठक थे।आजादी की लड़ाई में जो लोकसंग्रह गांधीजी ने किया वह मानव इतिहास की धरोहर हैं।उस कालखण्ड़ में देश के कोने कोने में गांधी की दृष्टि को समझ कर आजादी की लड़ाई में सत्यनिष्ठा से जुड़ने वाले लोग स्वयं स्फूर्त रूप से जुटने लगे। गांधीजी का आजादी के आन्दोलन में खड़ा किया लोक संग्रह आजादी के आन्दोलन की सबसे बड़ी लोकशक्ति बनी,जो सत्य और अहिंसा को आजादी पाने का साधन वैचारिक रूप से जानती और मानती थी। तभी तो गांधीजी की शहादत पर दुनिया के महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने कहा था आने वाली पीढ़ियां बहुत मुश्किल से विश्वास कर पायेंगी कि हाड़ मांस का ऐसा इंसान कभी इस दुनिया में हमारे बीच हुआ था।

गांधीजी स्वयं वकील थे पर गांधी ने अदालत में सच्चाई को पकड़ कर रखा कभी छोड़ा नहीं। सत्य से डिगे भी नहीं तभी तो हिन्द स्वराज्य में गांधीजी ने लिखा है कि मेरे सपनों का भारत मैं तब बना हुआ समझूंगा जब भारत के वकील और डॉक्टर कोई काम धन्धा न मिलने के कारण भूख से तड़पने लगे यानी मेरे सपनों का भारत वह भारत है जिसमें एक भी विवाद न हो और कोई भी बीमार न हों। पर आज गांधी के सपने को अपना सपना मानने वाला भारत हिलमिल कर एकजुट न होकर अंतहीन विवादों वाला भारत बनता जा रहा है। एक भी बीमार न हो के बजाय अंतहीन बीमारों का देश बनता जा रहा है। गांधी की सादगी सरलता सत्य और अहिंसा को हम आज जटिलतम सिद्धांत समझने लगे हैं। हमारे जीवन को हम जीने का सहज सरल व्यवहार बनाने के बजाय अपनी ही ताकत को समझे बिना उधार की कसरत से पहलवान बनने का सपना देखने लगे हैं।गांधी भारत के साधनों से ग्रामस्वराज्य लाने का रास्ता दिखा गये। पर हम बाहरी चकाचौंध के लोभ लालच में भारत की सनातन सादगी सत्य अहिंसा के साधन को नकार कर परावलम्बी विकास की दिशा के लोभ लालच में पड़ते जा रहे हैं। गांधी के जाने के सतहत्तर साल बाद भी हम न तो खुद पर विश्वास कर पा रहे हैं नहीं हमें एक दूसरे पर विश्वास है। ऐसी स्थिति के लिये ही गांधी ने कहा था पानी की एक बूंद की अकेले की अपनी कोई ताकत नहीं होती है पर जब वह बूंद समन्दर में मिल जाती है तो समुद्र की ताकत बूंद की ताकत बन जाती है।हमारी भी अकेले मनुष्य की कोई ताकत नहीं है पर हम सब भारत के विशाल लोकसागर में विलीन हो जावे तो सारे लोगों की सम्मिलित ताकत हमारी ताकत हो जाती हैं। गांधी ने लोगों को अपने अंदर छिपी लोकशक्ति की ऊर्जा का भान कराया,लोग अपने अंदर छिपे सनातन सत्य अहिंसा और आपसी विश्वास को जाने समझे और माने यही जीवन का सरल सहज व्यवहार है जिसे गांधी ने अपने जीवन में जाना और आजीवन माना भी।यही हम सब के सहज सरल जीवन का व्यवहार बने तो भारत लोकऊर्जा का ऐसा देश बन सकेगा जिसमें न कोई बीमार होगा न हमारे बीच कोई विवाद जन्म लेगा। गांधी के सरलतम विचार और व्यवहार ही हम सबके जीवन का प्राकृतिक, सनातन एवं नित्य नूतन आनन्द है।

गांधी-स्मृति

ध्रुव शुक्ल

लेखक साहित्यकार हैं।

पिता नहीं हैं, मां बहुत परेशान है

महात्मा गांधी के पौत्र दार्शनिक रामचन्द्र गांधी से दिल्ली के करोल बाग में कथाकार निर्मल वर्मा की छपरी में मेरा परिचय हुआ। फिर उनसे आत्मीयता प्रगाढ़ होती चली गयी।

उनसे खूब बातचीत होती रही। वे मानते थे कि अब वह समय नहीं है जिसमें पिता हम सबको बचाये रखते थे। उनको हमने मार डाला और भारत मॉं बहुत परेशान है। हम अतीत के शमशानों में न जाने क्या खोज रहे हैं।

रामचन्द्र गांधी ने ही बीसवीं सदी का अंत आने के बहुत पहले ही हमारी जिन भ्रांतियों की याद दिलायी, उनसे भारत और समूचा विश्व अभी तक बाहर नहीं निकल पा रहा है। वे धार्मिकों और धर्मनिरपेक्षों के बीच कोई तात्विक अंतर नहीं देखते थे और कहते थे कि यह भ्रांत विभाजन है क्योंकि दोनों ही प्रेमविहीन और श्रद्धाशून्य हैं। जो निराकरण वे सुझा गये वह यह कि धार्मिकों की आत्मतुष्टि और धर्मनिरपेक्षों के बौद्धिक अहंकार का हमें एक साथ सामना करना होगा। वे कहते थे कि दुनिया माने बैठी है कि युद्धोन्माद और शान्ति दो अलग चीजें हैं, जबकि दोनों की जड़ में हिंसा है। यह भ्रांति तभी दूर होगी जब सैन्यवाद में निहित अंधेपन और शांतिवाद में निहित स्वार्थ भावना को मानव जाति एक साथ देख सकेगी। उन्हें संघबद्ध अद्वैतवाद और द्वैतवाद भी भ्रांत धारणाएं लगते थे। वे कहते कि इस अज्ञान के निराकरण के लिए विवेकपूर्ण अंतर्दृष्टि से प्रेम की रौशनी में जूझना पड़ेगा क्योंकि दोनों शिविरों में पाखण्डी रूपाकारों को लगातार पनपाने की पूरी गुंजाइश है।

रामचन्द्र गांधी के पास देश में अपना कोई घर नहीं था। दिल्ली में उनके किराये के घर का पता भी बहुत कम लोगों को मालूम था। उन्होंने उन भ्रांतियों की भी याद दिलायी जो भारतीयों को आज भी पीड़ित किये हुए हैं। उनकी दृष्टि में अमीर और ग़रीब दो सत्ताएं नहीं बल्कि दोनों ही दरिद्र हैं। हमें अमीर के आध्यात्मिक और ग़रीब के भौतिक दिवालियेपन को मिटाना होगा। अगर हमें लगता है कि उत्पीड़ित और उत्पीड़क एक-दूसरे से अलग हैं तो यह भी भ्रांति ही है जबकि दोनों ही जकड़बंद और परतंत्र हैं। इसके लिए हमें उत्पीड़ित की आर्थिक-राजनीतिक दासता और उत्पीड़कों की सांस्कृतिक वैचारिक दासता पर एक साथ प्रहार करना होगा।

रामू गांधी (उन्हें सब इसी नाम से पुकारते थे) की दृष्टि में शिक्षित और अशिक्षित दो नहीं, एक ही हैं। वे कहते थे कि इनकी मोहासक्ति, अज्ञान और पाखण्ड को एक साथ मिटाना होगा। स्वास्थ्य और अस्वास्थ्य भी उनकी दृष्टि में दो नहीं, एक ही थे और दोनों ही हमारे समय में व्याधिरूप हैं। यह भ्रांति मिटाने के लिए हमें खासे तनदुरुस्त दिखने वालों के सांस्कृतिक अंधेपन और रोगियों के रोगों को दूर करना पड़ेगा।

मुझे रामू गांधी से मिलते हुए उनमें महात्मा गांधी की आवाज़ ही सुनायी देती रही। अक्सर गांधी विरचित 'हिन्द स्वराज्य' पुस्तक की याद आ जाती जिसमें बापू कहते हैं कि अगर हम हिन्दुस्तान के रोगों के डॉक्टर बनना चाहते हैं तो हमें रोग की जड़ तक पहुँचना होगा। ऊपरी इलाज़ से काम नहीं चलेगा। महात्मा गांधी की दृष्टि में पार्लियामेंट एक विफल स्वास्थ्य केन्द्र बनकर रह गयी है। वह ऐसा राजनीतिक खिलौना है जो देश को भारी खर्च में डाले हुए है। उसके लिए चुने जाने वाले मेम्बर स्वार्थी और दिखावटी होते हैं। अगर कोई अपवाद निकल आये तो उसकी खैर नहीं।

अगर रामचन्द्र गांधी की दृष्टि से विचार करें तो बीते वर्षों में सत्ता और प्रतिपक्ष... दोनों ही अपने-अपने मानस रोगों के कारण देश के तन-मन में फैले अतीत और वर्तमान के राजनीतिक-आर्थिक और सामाजिक रोगों के इलाज में विफल चिकित्सक सिद्ध हुए हैं। अगर जागरूक जन खोज पायें तो उन्हें ही नये डाक्टर खोजने होंगे। अपनी प्राचीन सभ्यता की गहन समीक्षा करते हुए नये राजनीतिक-आर्थिक-सामाजिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य केन्द्रों की व्यावहारिक नूतन परिकल्पना तुरंत करना पड़ेगी।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम के महानायक गांधी जी ने स्वदेशी को महाव्रत और सबकी आत्मा का धर्म कहकर परिभाषित किया था। स्वदेशी व्रत का पालन करते हुए अपनी देह भी परदेसी लगती है क्योंकि वह अपनी कामनाओं से बॅंधी होने के कारण दूसरों से आत्मिक एकता साधने में अनेक बाधायें पैदा करती है। गांधी जी कहते हैं कि सबके साथ प्राणिक एकता साधते हुए स्वदेशी धर्म को जानने और पालने वाला आदमी निर्भय होकर अपनी देह को भी त्यागने के लिए तत्पर रहता है। गांधी जी ने इसी स्वदेशी धर्म को साधते हुए अपने प्राणों की परवाह नहीं की।

गांधी जी ने विचार किया कि सामाजिक रूप से ऐसा कौन-सा स्वदेशी व्रत हो सकता है जिसके सहज पालन से भारत के करोड़ों लोगों को रोजी-रोटी मिल सकती है। तब चरखा और खादी का आंदोलन चला। गांधी जी ने उन खादीधारियों को चेतावनी भी दी कि जो खादी पहनकर बने-ठने तो फिरते हैं पर परदेसी चीज़ों से अपना मोह नहीं छोड़ पाते। उनकी देह को गौर से देखें तो उससे कई परदेसी चीजें चिपकी रहती हैं। उनकी देह पर उनकी कथनी और करनी का अंतर साफ़ दिखता है।

स्वदेशी व्रत का प्रचार वही लोग कर सकते हैं जो अपने देश के साधनों और अपने देश के हुनरमंद कारीगरों के श्रम से बनी चीजों को प्रोत्साहित करके उन्हें खुद अपनायें। अगर स्वदेशी वस्तुओं के निर्माण में कोई कमी हो तो उसमें सुधार करने के राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक उपाय भी करें। अभी बाहरी पूँजी के निवेश की छाया में पनपते 'मेक इन इण्डिया' का मतलब तो यही निकल रहा है कि परदेस से आये सामानों से अपने देश में चीज़ें बनायी जायें। यह तो स्वदेशी की धारणा के अनुरूप नहीं। स्वदेशी का विचार तो तब सफल होगा जब सारे साधन और श्रम अपने ही देश के होंगे और जिसे स्वदेशी धारणा के अनुरूप 'मेड इन इण्डिया' कहा जा सकेगा।

अकेले स्वदेशी व्रत को साध लेने से भी कुछ न हो पायेगा उसके लिए अपरिग्रह का व्रत भी तो साधना होगा। अपरिग्रह में अपनी ज़रूरत से ज़्यादा चीजें नहीं ली जा सकतीं, उन्हें सबकी ज़रूरतों के हिसाब से बरतना पड़ता है। अपरिग्रह में किसी भी तरह की चोरी वर्जित है। यह विषमता को मिटाने का व्रत है। गांधी जी ने तो चटोरेपन से बचने के लिए आस्वाद व्रत भी प्रस्तावित किया है। अगर देश में चटोराटन बढ़ता जायेगा तब स्वदेशी का व्रत नहीं साधा जा सकता। लोग परदेसी वस्तुओं के रंगीन विज्ञापनों से मोहित होकर उन पर ललचाते रहेंगे और चोरी छिपे अपनायेंगे।

स्वदेशी के मार्ग से भटके हुए राष्ट्रीय चित्त की वृत्तियॉं अराजक प्रतियोगिता और हिंसा से भरी होती हैं। इस परिस्थिति में स्वदेशी का व्रत साध पाना तो और भी कठिन है। स्वदेशी की धारणा सर्वोदय के विचार से जुड़ी हुई है और यह तब ही संभव है जब राष्ट्र और राज्य में व्यर्थ की भाग-दौड़ की बजाय शान्तिपूर्ण आपसी सहकार हो। महात्मा गांधी भगवद्गीता के तीसरे अध्याय में प्रवर्तित उस यज्ञ भावना का स्मरण करते हैं जिसमें कहा गया है कि जो व्यक्ति बिना यज्ञ किये खाता है वह चोर है। गांधी जी अपने समय में यज्ञ को नयी परिभाषा देते हैं कि जो व्यक्ति अपनी रोटी नहीं कमाता उसे खाने का क्या हक है? अपने स्थानीय साधनों के बीच अपनी मेहनत की रोटी कमाकर खाने का सहज परिवेश ही स्वदेशी व्रत को साधने में मददगार होगा।

गांधी जी कहते थे कि स्वराज्य और स्वदेशी एक ऐसा तजुर्बा है जिसे बेलगाम लोग नहीं समझ सकते। कर्म को त्यागा नहीं जा सकता, उसे तो अनुकूल-प्रतिकूल विवेक का अनुसरण करते हुए अपना पड़ता है। यह कर्म मनुष्य को किसी देश का मालिक नहीं, न्यासी (संरक्षक) बनाता है और इसी मार्ग पर चलने से हमारी देह त्यागपूर्वक भोगने की कला को पहचानने लगती है। इस कला में ही स्वदेशी का मर्म छिपा हुआ है। जीवन में संयम ही नीति है, बाकी सब अनीति है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

गांधी जयंती

चित्रा माली

सहायक प्रोफेसर गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विवि क्षेत्रीय केंद्र कोलकाता

अपने-अपने महात्मा : साध्य साधन की शुचिता, सत्य और अहिंसा

महात्मा शब्द का अंग्रेजी में सामान्य अनुवाद 'ग्रेट सोल' हो सकता है लेकिन भारतीय संदर्भ में इस शब्द का विशिष्ट महत्व है। महात्मा एक ऐसा सम्मानजनक शब्द है जो हजारों लाखों लोगों में से किसी एक व्यक्ति के लिए प्रयुक्त किया जाता है। यह शब्द आध्यात्मिक शक्ति और नैतिक शुचिता से भी जुड़ा हुआ है। यह सर्वविदित है कि गांधी जी के लिए महात्मा शब्द का सार्वजनिक संबोधन सर्वप्रथम रविंद्रनाथ टैगोर ने किया था लेकिन व्यक्तिगत तौर पर गांधी के मित्र प्राणजीवन मेहता ने गोखले को लिखे पत्र में गांधी जी के लिए महात्मा शब्द का प्रयोग किया था। इसके बाद गांधी जी दक्षिण अफ्रीका से जब भारत वापस लौटे और वे अपने गृह नगर काठियावाड़ पहुंचे तब गोंडल शहर के लोगों ने गांधी दंपत्ति के स्वागत में और दक्षिण अफ्रीका में किए गए कार्यों के सम्मान में प्रीतिभोज का आयोजन किया और उसी आयोजन में वहां के स्थानीय पुजारी जीवराम कालिदास शास्त्री ने गांधी जी को एक कागज का पटका भेंट किया जिस पर उनका नाम 'महात्मा' के तौर पर लिखा हुआ था।

गांधी जी के प्रति भक्ति और आस्था का एक संकेत स्वतः स्फूर्त शब्द 'महात्मा' था जिसका इस्तेमाल गांधी के मित्र सी.एफ.एंड्रयूज भी कर रहे थे। 1919 तक समूचे भारत में गांधी जी के लिए उनके प्रशंसक महात्मा शब्द का प्रयोग करने लगे थे। गांधी जी की देश में लगातार प्रसिद्धि के चलते एक सिगरेट की कंपनी के द्वारा 'महात्मा गांधी सिगरेट' को एक ब्रांड के तौर पर प्रचारित किया। 1921 में इस बात का जब गांधी जी को पता चला तो वे बहुत आहत हुए उनके विचार में धूम्रपान एक महंगी और बुरी आदत है जो श्वास लेने की प्रक्रिया को बाधित करती है,दांतों को खराब करती है और कभी-कभी कैंसर का कारण भी बन जाती है। यंग इंडिया में लिखे अपने स्तंभों में गांधी जी ने सिगरेट की उस कंपनी से आग्रह किया कि वे उनके नाम वाले ब्रांड को बाजार से वापस ले लें। गांधी जी सभी आम और खास लोगों के बीच काफी मशहूर हो गए थे और वे अपने महात्मा के लिए कई चमत्कारिक कहानियां भी गढ़ रहे थे।

उत्तर प्रदेश के एक स्थानीय अखबार संदेश ने कुछ कहानियों को प्रकाशित भी किया था उनमें से एक वकील की कहानी थी जो अपने वकालत छोड़ने के वादे से मुकर गया था और उसके बाद उसका पूरा घर गंदगी से भर गया था। एक साधू ने गांधी जी को अपशब्द कहे तो बिना किसी कारण के उसके पूरे शरीर से बदबू आने लगी थी। एक दूध वाले ने महात्मा के बारे में व्यंग्यात्मक टिप्पणी की तो उसका सारा घी खराब हो गया। एक आम का पेड़ तूफान में बुरी तरह से झुक गया था लेकिन महात्मा की कृपा से वह फिर से सीधा हो गया था। गांधी जी का एक अनुयायी जो अपने गांव के लोगों को जुए की बुरी लत के बारे में समझाता था लेकिन उसकी बात एक व्यक्ति ने नहीं मानी तो उसकी बकरियों को उसी के कुत्ते ने काट लिया। इनके अतिरिक्त किसानों के बीच यह भी धारणा बन गई थी कि जिस जिस गांव में महात्मा गए वहां बारिश और फसलें अच्छी हुई। गांधी जी की ख्याति लगातार बढ़ती जा रही थी उसका एक कारण गांधी की वेशभूषा साधारण-सी धोती जो सादगी और बलिदान की प्रतीक थी सामान्य जन को अधिक अपनी लगती थी और लुभाती थी। गांधी जी के पूर्व व साथ के नेताओं की वेशभूषा संभ्रांतता पूर्ण या तो पश्चिमी या भारतीय कुर्ता और पगड़ी थी। इनके बरक्स गांधी जी के कपड़े घर में बने हुए होते थे। इसके अतिरिक्त गांधी जी का बोलने का विशुद्ध देशी तरीका भी लोगों को आकर्षित करता था। गांधी जी हर प्रदेश में और उनके छोटे गांव,कस्बों और बड़े शहरों में गए वहां उन्होंने जन से संवाद की भाषा का माध्यम हिंदुस्तानी रखा जो उत्तर और पूर्वी भारत के बड़े हिस्सों की आम भाषा थी। जब वे तमिल,बांग्ला,मराठी या तेलगु भाषी इलाके में जाते तो उनके साथ अनुवादक रहते थे जो उन्हीं की भाषा में गांधी की बातों को पहुंचाते थे।

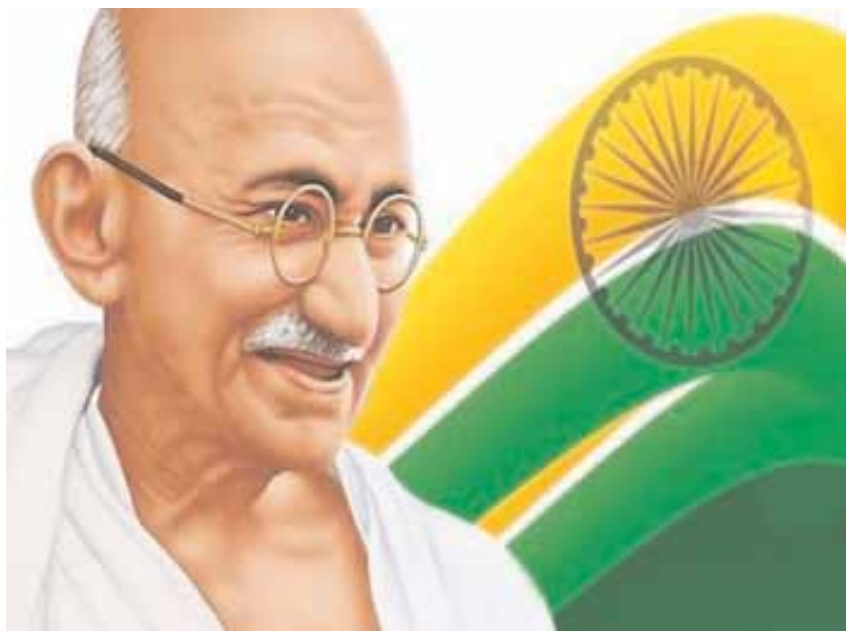

समूचे देश में हर जिले और हर तालुक में ऐसे नौजवान मौजूद थे जिन्होंने गांधी के स्वराज के चारों व्रतों को धारण कर लिया था (अहिंसा,हिंदू-मुस्लिम सद्भाव,स्वदेशी और छुआछूत उन्मूलन)। 2 अक्टूबर 1919 को गांधी जी पचास साल के होने वाले थे लेकिन पचासवें साल के जन्मदिन का जश्न भारतीय कैलेंडर के अनुसार 21 सितंबर को बंबई शहर में बड़े ही व्यापक तौर पर धूमधाम से मनाया गया। इसका आयोजन 'भगिनी समाज' नाम के महिला संगठन के द्वारा किया गया था। इस सार्वजनिक सभा की शुरुआत जुलूस और संगीत के साथ हुई थी। अवंतिका बाई गोखले जो गांधी जी की अनुयायी थी और उन्होंने चंपारण में गांधी जी के साथ काम भी किया था। आत्मा को झकझोरने वाले गीत 'भारत हमारा देश' का गायन किया था। सतारा में गांधी जी की तस्वीर के साथ जुलूस निकाला गया जो एक सभा में तब्दील हो गया था। इस सभा में गांधी जी के जीवन और उनके द्वारा किए गए कार्यों के बारे में भाषण दिए गए। एक वक्ता ने कहा कि 1857 के विद्रोह के बाद गांधी पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने साबित कर दिया है कि सरकार को सत्याग्रह से झुकाया जा सकता है। उन्होंने आगे कहा कि गांधी जी के शानदार सौवें भाग से भी लोग अत्यधिक प्रभावित हो सकते हैं। एक अन्य वक्ता ने दावा किया कि तिलक और अन्य नेताओं ने जो कुछ भी अपने शब्दों में कहा था,गांधी ने उसे जमीन पर उतार दिया है। गांधी के पचासवें जन्मदिन पर उनकी प्रशंसा में 400 पंक्तियों की एक कविता 'गुजरात के संत' शीर्षक से नानालाल डी ने लिखी थी। जिसका अनुवाद बंबई सरकार के पुलिस महकमे के द्वारा किया गया था। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान जब गांधी जेल में थे तब अहमदाबाद में गांधी जी के जन्मदिन के उपलक्ष्य में 2 अक्टूबर से 8 अक्टूबर तक 'गांधी सप्ताह' घोषित किया गया था। इस सप्ताह के आरंभ में और अंतिम दिन नगर के विभिन्न भागों में झंडोत्तोलन कार्यक्रम का आयोजन किया जिसे पुलिस बल ने तितर-बितर कर दिया था। इस सप्ताह में अधिकांश दुकानें और मिल बंद रहे। इसी के साथ ही 2 अक्टूबर के दिन कई जगहों पर जुलूस निकाला गया। बंगाल में ये विरोध प्रदर्शन सबसे सघन थे।

2 अक्टूबर 1942 को एक पर्चा छापा गया जिसमें लिखा हुआ था कि 'आज गांधी जयंती का दिन है। भारत के लोगों से आह्वान किया जाता है कि वे आज उपवास करें और मस्जिदों में,गिरजाघरों में और मंदिरों में हमारे नेता के जीवन और हमारे संघर्ष की सफलता के लिए प्रार्थना करें। सभी दुकानें इस अवसर पर बंद रहें। पूरे शहर में प्रभात फेरी और जुलूस निकाले जाएं'। अंग्रेजों को भारत से बाहर निकालने के गांधी के आह्वान के समर्थन में हजारों-लाखों लोग उनके समर्थन में आ गए थे। जिस प्रकार से गांधी उपवास से नैतिक बल से लोगों के मन में सौहार्द स्थापित करने का प्रयास कर रहे थे उसी प्रकार से सामान्य जन भी उपवास की महत्ता को स्वीकार करते हुए अपने नेता का अनुसरण कर रहे थे। 2 अक्टूबर 1947 स्वतंत्र भारत में गांधी जी का पहला जन्मदिन था और इस दिन लार्ड माउंटबेटन और लेडी माउंटबेटन दोनों गांधी जी को शुभकामनाएं देने पहुंचे थे उनके अतिरिक्त कई अन्य व्यक्ति भी बधाई देने पहुंचे थे। बधाई और शुभकामना संदेशों का तांता लगा हुआ था लेकिन गांधी निराश और हताश थे।

गांधी सवाल पूछ रहे थे कि मुझे आज बधाईयां क्यों दी जा रही हैं? इससे बेहतर होता कि मुझे शोक संदेश भेजे जाते। आज मैंने 125 वर्ष जीने की इच्छा छोड़ दी है और अब मैं अधिक जीना नहीं चाहता। गांधी जी ने प्रार्थना सभा में शामिल लोगों से कहा कि आप सभी आज की प्रार्थना में भगवान से मेरे मरने की दुआ कीजिए। गांधी जी ने अपनी 125 वर्ष जीने की इच्छा का त्याग देश में चहुंओर फैली हिंसा और नफरत (कलकत्ता,बिहार,दिल्ली और पंजाब) के कारण किया था। गांधी जी को महसूस होने लगा था कि उनके द्वारा संचालित सत्य-अहिंसा के सिद्धांत और हिंदू-मुस्लिम सद्भाव की प्रतिबद्धता की आवश्यकता अब लोगों को नहीं रही है और उनका आचरण पाशविक होता जा रहा है। जीने की इच्छा त्यागने के बाद भी साम्प्रदायिक सद्भाव को कायम रखने के लिए गांधी जी ने 13 से 18 जनवरी 1948 को अंतिम उपवास रखा।

महात्मा गांधी के उपवास के संबंध में देश की राजधानी दिल्ली से अधिक आश्चर्यजनक प्रतिक्रिया पाकिस्तान से आई थी। पाकिस्तान के एक राजनेता गजनफर अली खान ने कहा कि गांधी के उपवास के फैसले से दोनों देशों के नेताओं को नजदीक आकर अपने मतभेदों को दूर करने का प्रयास करना चाहिए। पाकिस्तान के दूसरे नेता मुमताज़ दौलताना ने कहा कि 'गांधी ने हिंदू-मुस्लिम एकता के लिए महान काम किया है'। तीसरे नेता फिरोज खान नून ने कहा कि 'कलकत्ता में हाल के दिनों में शांति बहाली के लिए महात्मा गांधी के प्रयास उनकी महान उपलब्धियों का एक छोटा-सा उदाहरण है जो उन्होंने वहां के लोगों में समझदारी की भावना को लौटाने के लिए किया'। गांधी अपनी मृत्यु को भी नजदीक से देख रहे थे। 27 जनवरी को बिड़ला हाउस में वे अमेरिकी पत्रकार विंसेंट शिएन से मिले और चर्चा के दौरान उन्होंने कहा कि 'हो सकता है मेरा मर जाना मनुष्यता के लिए अधिक मूल्यवान हो'। इस चर्चा में द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की स्थिति,लोकतंत्र,सत्ता और भ्रष्टाचार जैसे मुद्दों पर भी बात हुई। गांधी का स्पष्ट जवाब था कि 'साध्य और साधन की शुचिता आवश्यक है। उचित साध्य को अनुचित साधन से प्राप्त नहीं किया जा सकता है और यदि प्राप्त कर भी लिया तो परिणाम अशुभ ही होंगे। गांधी का यह इंटरव्यू अंतिम साबित हुआ। आज गांधी को उनके विचारों को साध्य साधन की शुचिता और सत्य अहिंसा को व्यापक तौर पर समझने की आवश्यकता है। इन्हीं गांधीवादी मूल्यों और आदर्शों से मनुष्यता को बचाया जा सकता है। इस गांधी जयंती पर इन्हीं मूल्यों को आत्मसात कर महात्मा को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करें।'

प्रसंग : वृद्ध दिवस

श्याम यादव

(वरिष्ठ पत्रकार और स्तंभकार)

बढ़ती उम्र और घटती संवेदनाएं

वृद्ध केवल जिम्मेदारी नहीं, बल्कि हमारे जीवन की जड़ों से जुड़ा वह आधार हैं, जिसके बिना कोई भी समाज टिक नहीं सकता। विश्व वृद्ध दिवस हमें यह चेतावनी देता है कि अगर हमने आज संवेदना नहीं दिखाई, तो कल संवेदना हमें भी नहीं मिलेगी। यही सच्चाई है, बढ़ती उम्र के साथ यदि संवेदनाएं घटती जाएं, तो यह केवल बुजुर्गों की नहीं, पूरे समाज की हार होगी। संयुक्त परिवारों के टूटने से बुजुर्ग अतिरिक्त जिम्मेदारी समझे जाने लगे हैं। यही कारण है कि वृद्धावस्था का मतलब अब अक्सर अकेलापन, असुरक्षा और अवसाद बन गया है।

संयुक्त परिवारों के बिखरने के बाद बुजुर्गों का जीवन सम्मान और सहारे से अधिक अकेलेपन और उपेक्षा का प्रतीक बनता जा रहा है। 1 अक्टूबर को मनाया गया 'विश्व वृद्ध दिवस' हमें यह सोचने का अवसर देता है कि क्या हम सचमुच उस पीढ़ी के साथ खड़े हैं, जिसने कभी हमारे लिए अपना सब कुछ न्योछावर किया था। एक अक्टूबर को पूरी दुनिया विश्व वृद्ध दिवस मनाती है। यह तारीख केवल कैलेंडर का हिस्सा नहीं, बल्कि हमारे समाज के सामने खड़े उस आईने की तरह है, जिसमें हम अपनी संवेदनाओं और जिम्मेदारियों को साफ देख सकते हैं। यह दिन पूछता है कि क्या हमने उन लोगों के प्रति अपना दायित्व निभाया है, जिन्होंने कभी परिवार और समाज की नींव अपने परिश्रम और त्याग से मजबूत की थी।

भारत में वृद्धों की स्थिति पर नज़र डालें, तो यह प्रश्न और भी तीखा हो उठता है। पारंपरिक भारतीय समाज की सबसे बड़ी शक्ति माने जाने वाले संयुक्त परिवार अब तेजी से टूट रहे हैं। कभी इन्हीं परिवारों में बुजुर्ग घर के केंद्र में हुआ करते थे। निर्णय लेने वाले, अनुभव साझा करने वाले और आशीर्वाद देने वाले। लेकिन, आधुनिक जीवनशैली, रोजगार की मजबूरियाँ और शहरीकरण की दौड़ ने परिवारों की संरचना को बदल दिया है। अब बुजुर्गों का स्थान घर के आँगन से खिसककर वृद्धाश्रमों और एकाकीपन के कमरों में सिमटता जा रहा है।

संयुक्त परिवारों के टूटने का असर सबसे अधिक वृद्धों पर पड़ा है। परंपरागत व्यवस्था में उनका बुढ़ापा केवल सहारे से नहीं, बल्कि सम्मान से भी भरा होता था। बच्चों के बीच रहते हुए वे अनुभव बाँटते थे, नाती-पोतों को संस्कार देते थे और जीवन की संध्या भी एक जीवंतता के साथ बिताते थे। लेकिन, अब छोटे परिवारों की अवधारणा में बुजुर्ग अतिरिक्त जिम्मेदारी समझे जाने लगे हैं। यही कारण है कि वृद्धावस्था का मतलब अब अक्सर अकेलापन, असुरक्षा और अवसाद बन गया है।

आँकड़े इस बदलाव की कठोर तस्वीर पेश करते हैं। जनगणना और सर्वेक्षण बताते हैं कि भारत में आज लगभग 15 करोड़ लोग साठ वर्ष से अधिक आयु के हैं। 2050 तक यह संख्या दोगुनी होकर 30 करोड़ के पार पहुंचने वाली है। यानी हर पांचवां भारतीय बूढ़ा होगा। इतनी बड़ी आबादी के लिए क्या हमारे पास संवेदनाओं और व्यवस्थाओं का वह तंत्र है, जिसकी उन्हें आवश्यकता है? दुर्भाग्य यह है कि जवाब नकारात्मक मिलता है। गांवों में अब भी आधे से अधिक वृद्ध अपने बच्चों पर आर्थिक रूप से निर्भर हैं। शहरों में स्थिति और जटिल है। वहाँ आर्थिक सुरक्षा तो कुछ हद तक मिल जाती है, लेकिन भावनात्मक सहारा गायब होता जा रहा है। अकेलेपन से जूझते वृद्ध मोबाइल और इंटरनेट की दुनिया में अपने ही घरों में परायापन महसूस करने लगे हैं। वृद्धाश्रमों की बढ़ती संख्या इस कटु सच्चाई की गवाही देती है कि पारिवारिक बंधन टूटने का खामियाजा सबसे पहले बुजुर्ग ही भुगतते हैं।

उनके लिए स्वास्थ्य भी एक बड़ी चुनौती है। वृद्धावस्था अपने साथ कई बीमारियाँ लेकर आती है हृदय रोग, मधुमेह, रक्तचाप और हड्डियों की कमजोरी जैसी समस्याएं लगभग हर परिवार में दिखने लगी हैं। परंतु स्वास्थ्य सेवाओं का ढाँचा इस तेजी से बढ़ती आबादी के लिए तैयार नहीं है। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों से लेकर शहरी अस्पतालों तक बुजुर्गों के लिए विशेष व्यवस्था का अभाव है। सामाजिक सुरक्षा योजनाएं कागजों पर तो मौजूद हैं, लेकिन इनका लाभ केवल एक हिस्से तक ही पहुँच पाता है। आँकड़ों के अनुसार, देश के 40 प्रतिशत से भी कम बुजुर्गों को नियमित पेंशन या सुरक्षा लाभ मिलते हैं। बाकी लोगों के लिए यह जीवन अपने परिश्रम की बजाय दूसरों की कृपा पर निर्भर रहने जैसा हो जाता है।

इस परिस्थिति का सबसे गंभीर पहलू केवल आर्थिक या स्वास्थ्य संबंधी नहीं है। असली संकट भावनाओं का है। बुजुर्गों को सबसे अधिक चोट तब लगती है जब वे अपने ही घरों में अस्वीकार और उपेक्षा महसूस करते हैं। आज की पीढ़ी अपने करियर, स्वतंत्रता और आधुनिक जीवन की भागदौड़ में इतनी उलझी हुई है कि उसे अपने माता-पिता के लिए समय निकालना कठिन लगता है। जिस घर की नींव कभी इन्हीं बुजुर्गों ने अपने त्याग से डाली थी, उसी घर में अब वे बोझ समझे जाने लगे हैं। यही कारण है कि वृद्धावस्था में मानसिक समस्याएँ तेजी से बढ़ रही हैं।

राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य सर्वेक्षण 2023 के अनुसार, 60 वर्ष से ऊपर के लगभग 15 प्रतिशत लोग अवसाद और मानसिक तनाव से जूझ रहे हैं। अकेलापन, उपेक्षा और असुरक्षा का यह घेरा उनके जीवन को और भी कठिन बना देता है। यह स्थिति केवल सामाजिक संरचना की विफलता नहीं, बल्कि हमारी संवेदनाओं के क्षरण का प्रमाण भी है। दुनिया के विकसित देशों ने इस चुनौती का सामना करने के लिए अनेक व्यवस्थाएं विकसित की हैं–घर पर देखभाल की सेवाएं, स्वास्थ्य बीमा, सामुदायिक केंद्र और पेंशन योजनाएँ। भारत में भी ऐसी पहल होनी चाहिए, लेकिन सबसे बड़ी जरूरत मानसिकता बदलने की है। कानून और योजनाएं केवल सहारा दे सकती हैं, लेकिन सम्मान और अपनापन केवल परिवार और समाज ही दे सकते हैं।

विश्व वृद्ध दिवस हमें यह याद दिलाने का अवसर है कि सभ्यता की पहचान केवल उसकी प्रगति से नहीं, बल्कि उसके बुजुर्गों के साथ उसके व्यवहार से होती है। यदि हम अपने बुजुर्गों के अनुभव, ज्ञान और आशीर्वाद को महत्व नहीं देंगे, तो हम केवल अपने अतीत से नहीं कटेंगे, बल्कि अपने भविष्य को भी खो देंगे। भारत आज युवा राष्ट्र कहलाने पर गर्व करता है। लेकिन यह भी सच है कि हर युवा कल वृद्ध होगा। जो व्यवहार हम आज अपने बुजुर्गों के साथ करेंगे, वही हमारे लिए कल लौटकर आएगा। इसलिए यह समय है कि परिवार, समाज और सरकार मिलकर वृद्धों के लिए सम्मानजनक और सुरक्षित जीवन का माहौल बनाएँ।

शास्त्री जयंती

डॉ. मुरलीधर चाँदनीवाला

वे सच्चे अर्थों में भारतीय जीवन के शास्त्री थे

गाँधी, नेहरू, आम्बेडकर की तरह वे पढ़ने के लिये विदेश नहीं गये। उनकी शिक्षा काशी विद्यापीठ में ही पूरी हो गई। यह विद्यापीठ ब्रिटिश सरकार के द्वारा लागू की गई अंग्रेजी शिक्षा पद्धति के प्रतिकार में स्थापित की गई थी। शास्त्री जी ने यहाँ रहकर भारतीय दर्शनशास्त्र और नीतिशास्त्र का अध्ययन किया। उन्हें शास्त्री की उपाधि काशी विद्यापीठ से ही मिली। भारतीय नीतिशास्त्र की शिक्षा उनके बहुत काम आई। वे नीति के पथ से कभी विचलित नहीं हुए। स्वाधीनता के लिये चल रहे संघर्ष के दौरान और सक्रिय राजनीति में प्रवेश करते समय भी भारतीय नीतिशास्त्र से ही उन्हें मदद मिली। वे सच्चे अर्थों में भारतीय जीवन के शास्त्री थे, और इसके साथ ही साथ आम भारतीयों के सच्चे प्रतिनिधि भी।

यह भारतीय लोकतंत्र के अर्जित किये हुए कोई पुण्य ही थे, कि हमें लालबहादुर शास्त्री जैसा विद्वान और निर्मल चित्त वाला प्रधानमंत्री मिला। जैसा उनका फूल की तरह कोमल हृदय था, वैसा ही वज्र की तरह कठोर उनका आत्मविश्वास था। वे साफ नीयत के राजनेता थे, इसलिये निर्भीक थे। वे बहुत शान्त भाव में रहकर भी जटिल समस्याओं का हल खोज लेने के लिये जाने जाते थे। उत्तेजना उनके स्वभाव में नहीं थी। शायद इसीलिये वे अजातशत्रु थे। प्रधानमंत्री के पद पर रहते हुए शास्त्री जी कभी भी विवादों के घेरे में नहीं आये। सबके साथ उनका सामंजस्य बैठ जाता था।

गाँधी, नेहरू, आम्बेडकर की तरह वे पढ़ने के लिये विदेश नहीं गये। उनकी शिक्षा काशी विद्यापीठ में ही पूरी हो गई। यह विद्यापीठ ब्रिटिश सरकार के द्वारा लागू की गई अंग्रेजी शिक्षा पद्धति के प्रतिकार में स्थापित की गई थी। शास्त्री जी ने यहाँ रहकर भारतीय दर्शनशास्त्र और नीतिशास्त्र का अध्ययन किया। उन्हें शास्त्री की उपाधि काशी विद्यापीठ से ही मिली। भारतीय नीतिशास्त्र की शिक्षा उनके बहुत काम आई। वे नीति के पथ से कभी विचलित नहीं हुए। स्वाधीनता के लिये चल रहे संघर्ष के दौरान और सक्रिय राजनीति में प्रवेश करते समय भी भारतीय नीतिशास्त्र से ही उन्हें मदद मिली। वे सच्चे अर्थों में भारतीय जीवन के शास्त्री थे, और इसके साथ ही साथ आम भारतीयों के सच्चे प्रतिनिधि भी।

शास्त्री जी का जन्म 2 अक्टूबर 1904 को तब हुआ, जब काँग्रेस में गरम-दल और नरम-दल का बोलबाला था। शास्त्री जी ने अपनी किशोरावस्था में लोकमान्य बालगंगाधर तिलक का स्वाभिमान देखा था, और महात्मा गांधी का उदयकाल भी। शास्त्री जी ने बहुत निचले पायदान पर खड़े होकर अपने युवा-समय के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को बहुत कठिन संघर्ष करते हुए देखा। वे राजनीति के लिये नहीं, मातृभूमि की अहोरात्र सेवा के लिये मैदान में उतरे थे। न कोई अच्छी आर्थिक पृष्ठभूमि, न किसी तरह के राजनैतिक दाँव-पेंच का अभ्यास। बस, एक जुनून था उनके पास, और एक दृढ़ निश्चय था। नीतिशास्त्र का विद्वान् होने के कारण उनमें जो विनयशीलता थी, उसकी ओर सभी खिंचे चले आते थे।

महात्मा गांधी उनके आदर्श थे। देशभक्ति का पाठ उन्होंने गाँधी जी से ही सीखा, लेकिन उनका व्यक्तित्व सर्वथा मौलिक था। वे सहज रूप से स्वदेशी थे। अपने समय के दूसरे महान् नेताओं की तरह उन्हें स्वयं को स्वदेशी दिखाने के लिये अपनी बनावट नहीं बदलनी पड़ी। वे जैसे शुरू में थे, प्रधानमंत्री पद पर रहते हुए भी वैसे के वैसे ही बने रहे। स्वतंत्रता संग्राम को लेकर शास्त्री जी की तपस्या का कोई मोल नहीं है। यद्यपि उनके समय में वरिष्ठ और समकालीन राजनेताओं के रहते शास्त्री जी का उचित मूल्यांकन नहीं हो पाया। नेहरू, सरदार पटेल, सुभाषचंद्र बोस, कृष्ण मेनन, राजेन्द्र प्रसाद, राधाकृष्णन, अम्बेडकर के अवदान की जैसी चर्चा होती थी, उसके मुकाबले शास्त्री जी की बहुत कम।

शास्त्री जी अपने आचरण से ही सब लोगों पर जादू कर देने की योग्यता रखते थे। भारतीय जनता पर उनके आचरण का इतना असर होता था, कि उनके केवल एक आह्वान पर लोगों ने प्रत्येक सोमवार को एक बार भोजन करने की आदत डाल ली थी। जैसे वे थे, वैसा उनका अपना परिवार था। कम से कम साधनों में अधिक से अधिक प्रेम और सामंजस्य का उत्पादन। सच तो यह, कि भौतिक वस्तुओं का अभाव शास्त्री जी का शृंगार बन चुका था। उनकी जीवनशैली चमक-दमक से बहुत दूर इस तरह की थी, कि उनके रास्ते पर बाद का कोई भी राजनेता चल नहीं पाया। सबको रुतबा चाहिए था, रसूख चाहिए था, असीमित अधिकार चाहिए थे।

1921 के असहयोग आन्दोलन में शास्त्री जी जेल गये, नमक सत्याग्रह के दौरान उन्होंने ढाई साल की सजा भोगी। भारत छोड़ो आन्दोलन में सक्रिय भाग लेते हुए उन्होंने पूरे चार साल जेल में बिताये। लोगों के बीच शास्त्री जी की छबि एक ईमानदार और अनुशासित देशभक्त की थी। इसीलिये उस दौर में, जब 'नेहरू के बाद कौन?' सवाल बार-बार उठा करता था, तब शास्त्री जी से बेहतर कोई विकल्प नहीं था। प्रधानमंत्री रहते हुए शास्त्री जी ने निर्भीक होकर असम्भव को सम्भव कर दिया। लोग कहने लगे थे कि 'जो काम नेहरू जी सत्रह वर्षों में नहीं कर पाये, वह शास्त्री जी ने सत्रह महीने में कर दिखाया।' लेकिन शास्त्री जी को इस बात का कोई गुमान नहीं था। उनके मन में नेहरू जी से ऊपर दिखने का सोच भी पैदा नहीं हुआ। वे अपने से वरिष्ठ नेताओं के प्रति हमेशा कृतज्ञ ही बने रहे।

प्रायः कहा जाता है कि महात्मा गांधी का जीवन सत्य और अहिंसा पर आधारित होने के कारण हमेशा उनके बताये रास्ते पर चलना कठिन ही नहीं, असम्भव है। न नेहरू उनके रास्ते पर शुरू से अंत तक चल सके, न दूसरे गाँधीवादी नेता। गांधी जी का रास्ता काँटों से भरा हुआ है, और वहाँ सीधे-सीधे लाभ की बजाय हानि होने का ही खतरा बना रहता है। लेकिन लालबहादुर शास्त्री ने गांधीजी का हाथ पकड़ लेने के बाद फिर कभी नहीं छोड़ा। उन्होंने गांधी जी के सिद्धांतों को अपने ऊपर लागू करके दिखाया, वे पूरी तरह सफल भी हुए। उन्होंने साबित किया कि गांधी जी के रास्ते पर चलने में ही भारत की जीत है।

प्रधानमंत्री रहते हुए भी वे साधारण धोती पहनकर पूरा भारत घूम आते थे। पूरी तरह से फट चुके कुर्ते में से रुमाल सिलवाकर उपयोग में ले लेते थे। विदेश गये, तो वे कभी सूट पहने हुए नहीं देखे गये। धोती-कुर्ता और बहुत जरूरी हुआ तो अचकन पहन लेते थे। एक बार मंत्री रहते हुए जब वे विदेश गये, तो नेहरू जी ने अपनी अचकन उतारकर उन्हें पहनने के लिये दी। शास्त्री जी के जीवन के कई मशहूर किस्से हैं, जिनसे प्रेरणा ली जा सकती है। प्रधानमंत्री रहते हुए उन्होंने एक कार कर्ज लेकर खरीदी। शास्त्री जी पूरा कर्ज चुकाने से पहले ही प्रयाण कर गये। बाद में यह कर्ज उनकी पत्नी श्रीमती ललिता शास्त्री ने चुकाया। आज कोई भरोसा भी नहीं कर सकता, कि वे आखिरी तक किराये के मकान में रहे।

1965 का भारत-पाक युद्ध हमने शास्त्री जी के नेतृत्व में ही लड़ा। उस समय शास्त्री जी की भूमिका विश्व भर में सराही गई। उनके द्वारा दिया गया 'जय जवान जय किसान' के नारे ने मंत्र जैसा असर किया। शास्त्री जी के बाद कई नारे उछले, और प्रसिद्ध भी हुए, लेकिन 'जय जवान जय किसान' उन सब को लांघ कर आज भी अमर है। यह नारा किसानों और नौजवानों का हौंसला बढ़ाने के लिये बहुत कारगर हुआ।

2 अक्टूबर को महात्मा गांधी और लालबहादुर शास्त्री के जन्मदिन आपस में ऐसे घुल-मिल गये हैं, कि कोई उन्हें अलग नहीं कर सकता। महात्मा गांधी और लालबहादुर शास्त्री दो नहीं, एक ही हैं। एक जैसा विचार, एक जैसा आचरण इन दोनों युग-पुरुषों को आपस में मिलाये रखता है। यह भी कहा जा सकता है कि गांधी जी के सिद्धांतों को व्यावहारिक धरातल पर देखना हो, तो शास्त्री जी से अच्छा कोई उदाहरण नहीं है। हमारे देश में प्रधानमंत्री आते-जाते रहेंगे, लेकिन शास्त्री जी जैसा निर्विकार प्रधानमंत्री अब शायद ही नसीब में हो।

मुनिराज विभंजन सागरजी के सानिध्य में श्रद्धालय वृद्धाश्रम धार में अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस मनाया गया

धार। दिगम्बर जैन संत परम पूज्य उपाध्याय श्री विभंजन सागर जी मुनिराज के पावन सानिध्य में धार स्थित श्रद्धालय वृद्धाश्रम में दिगंबर जैनसमाज धार द्वारा वृद्धजन दिवस मनाया। कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रियंका बांझल द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत कर किया। दीप प्रज्वलन संस्था संचालक दीपेंद्र शर्मा, समाज अध्यक्ष श्रेणिक गंगवाल, नरेश गंगवाल, विनय छाबड़ा ने किया। पूज्य गुरुदेव के पाद प्रक्षालन व शास्त्र भेट दीपेन्द्र शर्मा एवं आश्रम के वद्धजनों द्वारा किया गया। समाज द्वारा सभी वृद्धजनों का सम्मान किया गया। समाज के सभी उपस्थित परिवारजनों ने दैनिक उपयोग में आने वाली वस्तुओं एवं पुरुषों के लिए शर्ट, टॉवल नैपकिन रोजमर्रा की वस्तुएं, दवाइयां, ड्राई फ्रूट सभी वृद्ध महिलाओं के लिए साड़िया,कपड़े आदि भेट किए ।

वृद्धजन अपना जीवन धर्म आराधना, प्रभु भक्ति करते हुए आत्मा का कल्याण करने में लगाए- मुनिश्री - गुरुदेव द्वारा अपने मंगल उपदेश में कहा कि आप पहले अपने सीमित छोटे से परिवार के साथ रहते किसी कारण वश आप यहाँ अपना शेष जीवन व्यतीत करने के लिए रह रहे है आप अब इसे ही अपना परिवार ही माने व शेष जीवन धर्म आराधना - साधना प्रभु भक्ति करते हुए अपनी आत्मा का कल्याण करने में लगाए । मुनिश्री ने श्रद्धालय का अवलोकन किया तथा वहाँ की समुचित व्यवस्था सुचारू रूप से संचालित करने के लिये संचालक दीपेन्द्र शर्मा व पूरी संचालक समिति को एवं सभी वृद्धजनों को अपना आशीर्वाद प्रदान किया। तत्पश्चात गुरुदेव वृद्ध आश्रम से विहार कर लक्ष्मी गौशाला में गए वहां पर मूक पशुओं के बारे में संचालक से बातें की। मूक प्राणियों का ध्यान रखने के लिए कहा और मूक प्राणियों को आशीर्वाद दिया। कार्यक्रम में किशोर जैन, मौसम झांझरी, डॉ कमल जैन, पारस गंगवाल, रूपेश बड़जात्या आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन पूर्व अध्यक्ष वीरेंद्र जैन ने किया। संस्था का आभार व्यक्त श्रेणिक गंगवाल ने किया। महिला मंडल अध्यक्ष नेहा छाबड़ा, शिवानी रावका ,महिला महासमिति अध्यक्ष ममता गंगवाल संपूर्ण कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित थी। जानकारी मीडिया प्रभारी संजय गंगवाल ने दी।

भव्य आतिशबाजी के साथ किला मैदान पर होगा रावण दहन

धार। सार्वजनिक दशहरा उत्सव समिति, नौगांव द्वारा प्रति वर्षानुसार इस वर्ष भी रंगारंग आतिशबाजी के साथ रावण का दहन होगा। किला मैदान पर आयोजित इस समारोह में 51 फीट ऊंचा चारो तरफ घूमता हुआ रावण आकर्षण का मुख्य केंद्र रहता है। लगभग 30 से 35 हजार जनसमूह की उपस्थिति इस आयोजन की सफलता का प्रमाण है। विगत 46 वर्ष से निर्विघ्न रूप से सम्पन्न इस आयोजन की विशेषता यह भी है कि आयोजन का आर्थिक वहन समिति सदस्यों द्वारा ही किया जाता है। बाहर से कभी भी चंदा नहीं उगाया जाता है। इसके अलावा आमंत्रितों के सुव्यवस्थित बैठक व्यवस्था भी रहती है। पुलिस प्रशासन, नगर पालिका परिषद, विद्युत विभाग, लोक निर्माण विभाग आदि का भी सराहनीय सहयोग रहता है। इस वर्ष आयोजन के मुख्य अतिथि द्वारकाधीश राठोड़, अध्यक्ष राधेश्याम सेन तथा विशेष अतिथि घनश्याम मेरवानी रहेंगे। आयोजन समिति के अध्यक्ष कुलदीप सिंह डंग, उपाध्यक्ष लोकेश मकवाना, सचिव मनीष भार्गव तथा सहसचिव संजय उपाध्याय सर्वानुमति से चुने गए। संयोजक भगतसिंह चौहान, संरक्षक जगन्नाथ माली, सत्यशील राव पवार, पर्वत सिंह चौहान, कुलदीप सिंह बुंदेला तथा डॉ. श्रीकांत द्विवेदी ने शहर तथा आसपास के नागरिकों से निवेदन किया है कि अधिकाधिक संख्या में उपस्थित होकर आयोजन को सफल बनाएं। जानकारी समिति के मीडिया प्रभारी मनोज चौहान ने दी।

धार गायत्री शक्तिपीठ पर 2 अक्टूबर को पंचकुंडीय यज्ञ और कन्या भोज के साथ सम्पन्न होगा शारदीय नवरात्रि उत्सव

धार। धार गायत्री शक्तिपीठ पर शारदीय नवरात्रि पर्व श्रृद्धा, भक्ति और हर्षउल्लास के साथ मनाया जा रहा है। नवरात्रि उत्सव का समापन, 2 अक्टूबर, गुरुवार, विजयदशमी को पूर्णाहुति और कन्या भोज के साथ संपन्न होगा। धार गायत्री शक्तिपीठ के मुख्य ट्रस्टी रमेश चंद्र सचान ने बताया कि गुरुवार को प्रातः 9:30 बजे से पंचकुंडीय यज्ञ का क्रम प्रारंभ होंगा। यज्ञ की पूर्णाहूति के पश्चात 12 बजे से कन्या भोज और भोजन प्रसादी का आयोजन होगा। सभी गायत्री परिजनो से आग्रह है कि धार शक्तिपीठ पर आयोजित पंचकुंडीय यज्ञ में शामिल होने के साथ कन्या भोज और भोजन प्रसादी का भी लाभ लेवें।

पुलिस ने किया अंतरराज्यीय गिरोह का पर्दाफाश, दो आरोपी गिरफ्तार

बैतूल। सरकारी नौकरी का झांसा देकर लगभग 27 लाख की ठगी करने वाले अंतरराज्यीय गिरोह के दो लोगों को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। पुलिस जनसंपर्क अधिकारी से मिली जानकारी अनुसार पंकज नायक पिता शेषराम नायक, उम्र 41 वर्ष, निवासी चन्द्रशेखर वार्ड, बैतूल ने पुलिस को रिपोर्ट दी कि आरोपी अश्विन पिता दिनेश धोटे (32), निवासी गोठी कॉलोनी चक्कर रोड बैतूल ने स्वयं को उच्च अधिकारियों से संबंध रखने वाला बताकर सरकारी नौकरी दिलाने का भरोसा दिलाया। अश्विन ने भरोसा दिलाकर कहा कि वह उसकी पत्नी पूनम नायक जो कि वकील है, को शासकीय एडीपीओ की नौकरी लगवा देगा। इस विश्वास में फरियादी ने अपने व रिश्तेदारों से राशि एकत्र कर आरोपी को शुरुआत में लगभग 5 लाख रुपये दिए। रुपए लेने के बाद आरोपी ने कहा कि चयन हेतु और पैसे लगेंगे एवं अन्य लोगों की भी नौकरी लगाने के नाम पर 26 अक्टूबर 2021 से 22 अप्रैल 2024 की अवधि में अलग-अलग किस्तों में कुल लगभग

सरकारी नौकरी का झांसा देकर करते थे ठगी

27 लाख रुपये फरियादी ने आरोपी के बताए बैंक खातों में जमा किए। आरोपी ने चयन पत्र और ज्वाइनिंग लेटर भी प्रदान किए तथा मेडिकल परीक्षण हेतु भोपाल भेजने की बात कही। आरोपी ने अन्य लोगों से भी शासकीय विभाग एनएचएम, पोस्ट आफिस, रेलवे, महिला बाल विकास अधिकारी, फारेस्ट विभाग, पटवारी एवं एसबीआई बैंक आदि को फर्जी नौकरी लगाने के नाम पर रुपये ठगे थे। चयन पत्र और ज्वाइनिंग लेटर भी प्रदान किए तथा मेडिकल परीक्षण के लिए भोपाल भेजने की बात कही।

चयन पत्र और ज्वाइनिंग लेटर निकले फर्जी .....

आरोपी द्वारा दिए गए चयन पत्र और जॉइनिंग लेटर फर्जी व अवैध निकलने पर फरियादी द्वारा आरोपी से जब पैसे लौटाने की मांग की तो आरोपी ने टालमटोल करते हुए धमकी दी कि पुलिस भी मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकती। स्वयं को ठगा हुआ महसूस करने एवं धोखाधड़ी का शिकार होने पर फरियादी ने 24 सितंबर 2025 को गंज थाना पहुंचकर सूचना दर्ज करवाई गई। विवेचना के दौरान ज्ञात हुआ कि आरोपी अश्विन पिता दिनेश धोटे, निवासी गोठी कॉलोनी, चक्कर रोड, बैतूल द्वारा छिंदवाड़ा जिले में भी नौकरी लगने के नाम पर लोगों से लगभग 13 लाख रुपए की धोखाधड़ी की गई है। पुलिस की प्रारंभिक जांच में यह तथ्य सामने आया कि आरोपी ने नौकरी लगवाने के नाम पर योजनाबद्ध तरीके से धोखाधड़ी कर ठगी की वारदात को अंजाम दिया हैं। जिस पर गंज थाना पुलिस ने आरोपी के विरुद्ध धारा 420 भादवि के तहत प्रकरण दर्ज कर विवेचना प्रारंभ कर दी है।

दो अन्य सहयोगी के साथ मिलकर करता था ठगी .....

प्रकरण के आरोपी अश्विन धोटे पिता दिनेश धोटे (32) निवासी गोठी कॉलोनी चक्कर रोड, बैतूल को पुलिस अभिरक्षा में लिया जाकर पूछताछ की गई, आरोपी ने पूछताछ में बताया कि उसके साथ दो सहयोगी अभिजीत उर्फ वेद प्रकाश निवासी भोपाल एवं आशीष उर्फ मानव निवासी पटना है। आरोपी ने फरियादी पंकज नायक से उसकी पत्नी पूनम नायक को शासकीय एडीपीओ बनाने के नाम से कुल 27 लाख रुपए का ट्रांजैक्शन करने की बात स्वीकार की। आरोपी ने बताया कि मानव उर्फ आशीष ने उसे संचालनालय नगरीय प्रशासन एवं विकास मध्य प्रदेश भोपाल की चयनित लिस्ट दिया था, जिसमें पूनम का नाम पांचवें नंबर पर था। बाद उसे संजय एवं श्रीकांत त्रिपाठी ने भी नौकरी लगने के लिए पैसे दिए थे। उसके बाद आरोपी मानव कुमार पिता स्वर्गीय अर्जुन सिंह (36) निवासी पटना को पटना से अभिरक्षा में लिया जाकर पूछताछ की गई जो आरोपी द्वारा जुर्म करना स्वीकार किया गया। माननीय में पेश किया गया है। प्रकरण में अन्य आरोपी घटना दिनांक से फरार चल रहे हैं जिनकी गिरफ्तारी की जावेगी।

आपका राशन आपका अधिकार के अंतर्गत विशेष ग्राम सभा आयोजित

बैतूल। मध्यप्रदेश शासन, खाद्य नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण विभाग के निर्देशानुसार मुख्यमंत्री अन्न सेवा जागरूकता कार्यक्रम के तहत आपका राशन आपका अधिकार अभियान का आयोजन किया जा रहा है। इसके अंतर्गत जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में संचालित 609 शासकीय उचित मूल्य की दुकानों के विक्रेता 02 अक्टूबर को विशेष ग्राम सभाओं में उपस्थित होकर ग्रामीण हितग्राहियों को राशन वितरण प्रक्रिया के प्रति जागरूक करेंगे। कार्यक्रम के दौरान उचित मूल्य की दुकानों से संलग्न ग्राम पंचायतों में पात्र परिवारों की सूची का वाचन किया जाएगा। इसके साथ ही राशन आवंटन, उठाव और वितरण की पूरी जानकारी ग्राम सभा में साझा की जाएगी, जिससे वितरण प्रक्रिया और अधिक पारदर्शी बने। यह भी निर्देश दिया गया है कि यदि सूची में किसी हितग्राही के परिवार सदस्य की मृत्यु, विवाह या अन्य कारणों से परिवार में निवास न करने के कारण वह पात्र नहीं हैं, तो पंचायत सचिव/विक्रेता द्वारा उन्हें विशेष ग्राम सभा में चिन्हित कर एम-राशन मित्र पोर्टल से विलोपन हेतु प्रस्तावित किया जाएगा। इस पहल का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में राशन वितरण व्यवस्था को पारदर्शी बनाना और राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम 2013 के अंतर्गत पात्र हितग्राहियों को उनके अधिकारों की जानकारी सुनिश्चित करना है।

कलेक्टर ने नेशनल हाईवे बैतूल-भोपाल पर मरम्मत कार्य का किया औचक निरीक्षण

बैतूल। कलेक्टर नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी ने गुरुवार को नेशनल हाईवे बैतूल-भोपाल पर सड़क मरम्मत कार्य का सघन भ्रमण कर निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने प्रमुख रूप से बरेठा घाट में निर्माणाधीन मरम्मत कार्य को देखकर संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। इसके पश्चात कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने धार बैरियर तक सड़क का अवलोकन किया उन्होंने प्रोजेक्ट डायरेक्टर श्री मनीष मीणा को निर्देशित किया कि क्षतिग्रस्त हाईवे की शीघ्र मरम्मत कराई जाए और यातायात को सुगम बनाया जाए। साथ ही उन्होंने स्पष्ट किया कि सड़क सुरक्षा और जनहित के मामलों में लापरवाही बरतने वाले अधिकारियों के विरुद्ध कार्यवाही की जाएगी। इस अवसर बैतूल एसडीएम श्री अभिजीत सिंह, लोक निर्माण विभाग ईई श्रीमती प्रीति पटेल, शाहपुर टीआई सहित एनएचआई के अन्य अधिकारी उपस्थित रहे। विदित है कि लगातार बारिश के चलते हाईवे के कई हिस्सों में गड्ढे और क्षतिग्रस्त स्थिति बन गई थी, जिससे आवागमन प्रभावित हो रहा था और आए दिन जाम की स्थिति निर्मित हो रही थी। हाईवे की इस स्थिति को लेकर केंद्रीय मंत्री श्री दुर्गादास ऊईके, विधायक श्री हेमंत खंडेलवाल और विधायक श्रीमती गंगाबाई ऊईके ने हाल ही में आयोजित बैठक में राष्ट्रीय राजमार्ग के अधिकारियों पर असंतोष जाहिर किया था। जनप्रतिनिधियों ने प्रोजेक्ट डायरेक्टर पर असंतोष व्यक्त करते हुए तत्काल सुधार कार्य सुनिश्चित करने के निर्देश दिए थे।

बुजुर्ग हमारी धरोहर : जिला पंचायत उपाध्यक्ष

● वृद्धजन दिवस का हुआ शुभारंभ

बैतूल। आनंद धाम भारत भारती में मेरा युवा भारत बैतूल युवा कार्यक्रम खेल मंत्रालय भारत सरकार द्वारा बुधवार को ग्रीन लाइफ सेवा युवा मंडल के सहयोग से तीन दिवसीय वृद्धजन दिवस कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम जिला पंचायत के उपाध्यक्ष हंसराज धुर्वे, सरपंच जामठी पूनाराम वाडिवा व उप संचालक सामाजिक न्याय विभाग रोशनी वर्मा, शैलेंद्र बनकर, प्रबंधक आनंद धाम के आतिथ्य में और मेरा युवा भारत धनंजय सिंह ठाकुर की अध्यक्षता में किया गया। इस मौके जिला पंचायत उपाध्यक्ष हंसराज धुर्वे ने कहा कि हम सबका दायित्व बनता है कि इन बुजुर्गों की सेवा व सहयोग हम सब मिलकर करें। उन्होंने कहा कि बुजुर्ग हमारे समाज की धरोहर हैं। महेश गुंजेले ने गीतों के माध्यम से अपनी बात रखी। रोशनी वर्मा ने सामाजिक न्याय विभाग द्वारा वृद्धजनों को दी जाने वाली विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी। धनंजय सिंह ठाकुर ने बताया कि यह कार्यक्रम 3 अक्टूबर तक विभिन्न गतिविधियां के रूप में मनाया जाएगा जिसमें जिसके अंतर्गत पौधा रोपण संगोष्ठी गीत चर्चा आदि आयोजन किए जाएंगे। कार्यक्रम के अंत में नशा मुक्ति की सामूहिक शपथ उपसंचालक रोशनी वर्मा सामाजिक न्याय विभाग द्वारा दिलाई गई, पौधों का रोपण भी किया गया। कार्यक्रम का संचालन सुशील उदयपुरे ने व आभार हुकुमचंद कालभोर ने व्यक्त किया। इस अवसर पर सुशील उदयपुरे हुकुमचंद कलभोर, अशोक यादव, जीवन उच्चसरे, जितेंद्र रावत, अंकित गावडे, सहित मंडल के पदाधिकारी उपस्थित रहे।

आवारा कुत्तों से परेशान लोग, नगर पालिका नहीं चला रही अभियान

आवारा कुत्तों के डर से लोगों का रात में बाहर निकलना मुश्किल, स्वच्छता अभियान की उड़ा रहे धज्जियां

बैतूल। जिला मुख्यालय सहित जिले के अन्य क्षेत्र में आवारा कुत्ते एक बड़ी समस्या बनते जा रहे हैं। शायद ही ऐसा कोई मोहल्ला या फिर गली होगी, जहां कुत्तों का झुंड न हो। रात के समय कुत्ते ज्यादा हमलावर हो जाते हैं और झुंड बनाकर लोगों पर हमले करते हैं। इसके अलावा जगह-जगह गंदगी भी फैलाते है। कुछ क्षेत्रों में आवारा कुत्तों का इतना आतंक है कि लोग रात के समय गली मोहल्लों में बाहर निकलने में डर रहे हैं, लेकिन नगरपालिका द्वारा शहर में आवारा कुत्तों को पकडने की मुहिम पिछले लंबे अर्से से नहीं चलाई जा रही है। कुत्तों की समस्या पर काबू पाने के लिए नगरपालिका के पास न तो कोई कारगार योजना है, न रोकने के लिए कोई अभियान चलाया जा रहा है। शहर के चंद्रशेखर वार्ड में आवारा कुत्तों का आतंक सबसे ज्यादा देखा जा रहा है। पिछले एक पखवाड़े में यहां एक पागल कुत्ते ने तीन लोग को काटा। रात के समय शहर के अधिकांश चौराहों, कॉलोनियों के चौराहों व गलियों में कुत्ते समूह बनाकर बैठे रहते। इस दौरान सड़क पर दोपहिया वाहन या पैदल निकलने वाले लोगों पर ये दौड़कर अचानक हमला कर देते हैं। ऐसे में दुर्घटना का भय भी बना रहता है। जिन क्षेत्रों में कुत्तों की संख्या ज्यादा है, वहां के रहवासी, रात में बच्चों को भी अकेला नहीं निकलने देते।

आवारा कुत्तों की संख्या पर नियंत्रण नहीं- शहर में कुत्तों की तेजी से संख्या बढ़ रही है। विश्वसनीय सूत्रों के मुताबिक शहर में आवारा कुत्तों की संख्या एक हजार से अधिक होने का अनुमान है। पिछले कुछ समय में कुत्तों की संख्या में लगातार इजाफा हुआ, जिसकी मुख्य वजह नपा द्वारा कुत्तों की संख्या पर नियंत्रण नहीं किया जाना है। नगरपालिका के पास शहर में आवारा कुत्तों का कोई आंकड़ा नहीं है। और उनकी जनसंख्या सीजन दर सीजन बढ़ते ही जा रहे हैं। लोगों ने बताया कि कुत्ते झुंड में सड़क पर घूमते हैं। पैदल चलने वालों पर झुंड द्वारा हमला किया जाता हैं। इससे लोगों के जान पर बन आती है।

आवारा कुत्तों से छोटे बच्चों के लिए बड़ा खतरा- छोटे बच्चों के लिए आवारा कुत्ते ज्यादा बड़ा खतरा हैं। कुत्तों के लिए छोटे बच्चे आसान शिकार होते हैं। पिछले दिनों शहर के कई क्षेत्रों से आवारा पागल कुत्तों द्वारा छोटे बच्चों को काट लेने की खबरें आई, इसके बाद भी नपा ने अब तक आवारा कुत्तों को पकडने के लिए दल गठित नहीं किया है। जिसके कारण कुत्तों की संख्या लगातार बढ़ते जा रही है। जिला अस्पताल की बात करे, तो रोजाना औसतन दो से तीन केस डॉग बाइट के पहुंच रहे है। जिन्हें एंटी रैबीज के इंजेक्शन लग रहे है। जिला चिकित्सालय सिविल सर्जन डॉ. जगदीश घोरे का कहना है कि कुत्ते के काटने पर एंटी रैबीज के इंजेक्शन लगवाना पड़ता है। जिला अस्पताल में यह टीका निःशुल्क लगाया जाता है।

पशुपालक भी करते है लापरवाही- जानकार बताते है कि आवारा कुत्तों में रैबिज का खतरा अधिक रहता है। ऐसे कुत्ते यदि किसी इंसान को काट ले और उसका समय पर इलाज न कराया जाये तो यह जानलेवा भी साबित हो सकता है। इधर कुछ पशुपालक भी कुत्तों को पालते जरूर है, लेकिन उन्हें समय पर टीका नहीं लगवाते है। इस तरह की लापरवाही न सिर्फ अन्य लोगों के लिए घातक साबित होती है, बल्कि पालतू पशुओं, कुत्तों के लिए भी घातक है। जानकार बताते है कि यदि कुत्तों को समय-समय पर वैक्सीन लगाया जाये और इसके बाद कुत्ते किसी को काटते भी है तो रेबीज का खतरा कम रहता है। इसलिए पशुपालक को समय-समय पर टीका लगवाना चाहिए, अन्यथा पालतू कुत्तों के काटने की घटना बाद पीड़ित इसकी शिकायत या पुलिस में मामला भी दर्ज करवा सकता है।

इनका कहना है -

दशहरा के बाद आवारा कुत्तों को पकड़ने का अभियान तेज किया जाएगा। नगरपालिका द्वारा इसका टेंडर आगे बढ़ाकर आवारा कुत्तों को पकडने के लिए प्रशिक्षित कर्मचारियों को लगाया जाएगा।

-श्रीमती पार्वतीबाई बारस्कर, अध्यक्ष, नगरपालिका बैतूल

झुंड बनाकर करते हैं पशुओं पर हमला, नगर परिषद नहीं चला रही अभियान

आवारा कुत्तों के आतंक से लोग परेशान

भैंसदेही शहर में आवारा कुत्तों का आतंक इस कदर बढ़ गया कि लोगों का घर से बाहर निकलना मुश्किल हो गया है। आवारा कुत्ते लोगों को काटकर घायल कर रहे है। इसके बाद भी नगर परिषद इन कुत्तों से लोगों को राहत दिलाने की कोई पहल नहीं की है। हालात यह है कि इन दिनों भैंसदेही नगर के वार्डो में आवारा कुत्तों की संख्या इतनी ज्यादा बढ़ चुकी है कि जिधर देखो उधर आवारा कुत्ते ही नजर आते है। जब लोग शाम के समय भोजन के बाद टहलने निकलते है तो यह कुत्ते लोगों पर भोंकते है या काटने के लिए दौडते है। सबसे ज्यादा कुत्तों की संख्या शीतला माता चौक से अटल बिहारी स्टेडियम चौक से लेकर पीएमश्री कन्या शाला मार्ग पर रहती है। यह कुत्ते पशुओं पर झुंड बनाकर हमला भी करते है। जिससे लोगों में दहशत है। हालात यह है कि कुत्तों के भय से लोगों के हाथ में डंडा होने के बाद भी चेहरे पर भय की लकीरें स्पष्ट दिखाई पड़ती है, वहीं आवारा कुत्तों के हमले के भय से छोटे बच्चों का बाहर खेलना भी बंद हो गया है। लोगों ने बताया कि आवारा कुत्तों की अचानक झुंड टूट पडने से बच्चों का भी घर के बाहर खेलना और घूमना बंद हो गया है। कुत्ते जानवरों के अलावा लोगों को भी शिकार बना रहे है। जिससे रात के समय लोग घर से सड़कों पर टहलने निकलने से भी कतराने लगे है। आवारा कुत्तों को पकडने या शहर से बाहर भेजने के लिए नगर परिषद भैंसदेही द्वारा कोई अभियान नहीं चलाया जा रहा है। जिसके कारण लोगों में नप की कार्यप्रणाली को लेकर नाराजगी बढ़ गई है। लोगों का कहना है कि अभी त्योहारी सीजन चल रहा है। नवरात्रि में लोग देर रात तक देवी दर्शन सहित सांस्कृतिक कार्यक्रमों में आते-जाते है। ऐसे में रात्रि के समय कुत्तों की वजह से उन्हें हमेशा डर बना रहता है कि कहीं कुत्ते उन पर हमला न कर दे। आवारा कुत्तों की वजह से सबसे ज्यादा छोटे बच्चों की सुरक्षा को लेकर पालक चिंतित रहते है। कुत्तों की वजह से लोग बच्चों को बाहर तक नहीं निकलने देते है।

इनका कहना

आवारा कुत्तों को पकड़ने के लिए नगर परिषद द्वारा पिंजरे का इंतजाम कर लिया गया है। नवरात्र के बाद में उनको पकडकर बाहर छोड़ जाएगा।

- मनीष सोलंकी अध्यक्ष नगर परिषद, भैंसदेही

सम्मान

लोकेन्द्र सिंह

(लेखक माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में सहायक प्राध्यापक हैं।)

स्वयंसेवकों के परिश्रम, त्याग, समर्पण और सेवा की कमाई है यह सिक्का

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के प्रसंग पर भारत सरकार ने विशेष डाक टिकट और 100 रुपये का सिक्का जारी किया है। यह साधारण सिक्का नहीं है, जो प्रसंगवश जारी किया गया है। संघ के स्वयंसेवकों ने यह सिक्का अपने परिश्रम, त्याग, समर्पण और राष्ट्र की सेवा से कमाया है। हिन्दू धर्म, हिन्दू संस्कृति और हिन्दू समाज का संरक्षण कर देश की स्वतंत्रता एवं सर्वांगीण उन्नति का व्रत लेकर चलने वाले स्वयंसेवकों ने संघ रूपी राष्ट्रीय आंदोलन को यशस्वी बनाने में अपना जीवन खपाया है, तब जाकर यह अवसर आया है। अपनी स्थापना के प्रारंभ से ही संघ ने अनेक कठिनाइयों एवं अवरोधों का सामना किया। सत्ता के हठ से भी स्वयंसेवक टकराए। लेकिन, किसी के प्रति बैर भाव रखे बिना स्वयंसेवक राष्ट्र की साधना में समर्पित रहे। अपने कार्य की सिद्धि से स्वयंसेवकों ने उनका हृदय भी जीता, जो कभी संघ को समाप्त कर देना चाहते थे। इसलिए यह सिक्का केवल शताब्दी वर्ष का स्मृति चिह्न नहीं है अपितु संघ की वास्तविक कमाई का प्रतिनिधित्व है। सर्व समाज का विश्वास, अपनत्व, प्रेम और सहयोग, यही संघ की वास्तविक कमाई है। अपने संघ की 100 वर्ष की यात्रा में स्वयंसेवक सबको अपना बनाते हुए संघ यहाँ तक आ पहुँचे हैं कि समाज बाँहें फैलाकर उनका स्वागत कर रहा है। संस्कृति मंत्रालय की ओर से डॉ. अम्बेडकर अंतरराष्ट्रीय केंद्र, दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की '100 वर्षों की गौरवपूर्ण यात्रा का स्मरणोत्सव' में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी यही बात दोहरायी कि 'संघ के स्वयंसेवकों ने कभी कटुता नहीं दिखाई। चाहे प्रतिबंध लगे, या साजिश हुई हो। सभी का मंत्र रहा है कि जो अच्छा है, जो कम अच्छा, सब हमारा है'। उन्होंने कहा कि संघ के स्वयंसेवक लगातार देश सेवा में जुटे हैं। समाज को सशक्त कर रहे हैं, इसकी भी झलक इस डाक टिकट में है। मैं इसके लिए देश को बधाई देता हूं।

संघ शताब्दी वर्ष पर जारी विशेष डाक टिकट पर एक लोगो अंकित है, जिस पर लिखा है- 'राष्ट्र सेवा के 100 वर्ष (1925-2025)'। इसके साथ ही लोगो के नीचे लिखा है- राष्ट्रभक्ति, सेवा और अनुशासन। संघ की 100 वर्ष की यात्रा की झलक दिखाने के लिए दो चित्र भी डाक टिकट पर दिखायी देते हैं- पहला, 1963 की गणतंत्र दिवस में शामिल स्वयंसेवक और दूसरा, सेवा एवं राहत कार्य करते स्वयंसेवक। इन दोनों ही चित्रों का विशेष महत्व है। यह सबको ज्ञात है कि भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू पूर्व में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को लेकर पूर्वाग्रहों से ग्रसित थे, जिसके कारण वे संघ को समाप्त करने की इच्छा भी व्यक्त कर चुके थे। लेकिन 1962 में चीन के साथ हुए युद्ध में कम्युनिस्टों की गद्दारी देखकर उनका गहरा धक्का लगा। वहीं, जिस संगठन के प्रति उनके मन में सद्भाव नहीं था, वही संगठन युद्ध के समय सरकार के साथ सहयोगी के तौर पर खड़ा था। राजधानी से लेकर सीमारेखा तक, संघ के स्वयंसेवक सहायता कर रहे थे। सैनिकों की सहायता हो या नागरिक अनुशासन, संघ ने अपना सर्वश्रेष्ठ दिया। इसी बात से प्रभावित होकर प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने गणतंत्र दिवस की परेड में शामिल होने के लिए आरएसएस को आमंत्रित किया। संघ के तीन हजार स्वयंसेवक इस राष्ट्रीय परेड में शामिल हुए। प्रधानमंत्री मोदी ने भी अपने भाषण में इस प्रसंग का उल्लेख किया। जब भी देश में संकट का वातावरण बना है, स्वयंसेवक सबसे आगे खड़े मिले हैं। याद हो, 1965 में जब भारत-पाकिस्तान के बीच युद्ध प्रारंभ हुआ, तब तत्कालीन

प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने भी संघ के सरसंघचालक माधव सदाशिवराव गोलवलकर उपाख्या श्रीगुरुजी को रणनीतिक बैठक में आमंत्रित करके महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां सौंपी थी। इसी, डाक टिकट पर दूसरा चित्र बताता है कि देश में कहीं भी आपदा आती है, तब स्वयंसेवक आगे बढ़कर सेवाकार्य करते हैं। भारत विभाजन की विभीषिका से लेकर अभी हाल में आई वैश्विक महामारी कोरोना में संघ के स्वयंसेवकों का समाजसेवा का जज्बा दुनिया ने देखा। देशभर में कहीं भी बाढ़, सूखा, भूकंप या अन्य हादसे होते हैं, तो बिना देरी किए संघ के कार्यकर्ता अपने सामर्थ्य के अनुरूप सहयोग करने के लिए जुट जाते हैं। संघ के सेवाभाव को देखकर अकसर विरोधी भी खुलकर प्रशंसा करने से स्वयं को रोक नहीं पाते हैं। स्वयंसेवक की संकल्पना की कितनी सुंदर और सटीक परिभाषा प्रधानमंत्री मोदी ने दी है- 'हमने देश को ही देव माना है और देह को ही दीप बनाकर जलना हमने सीखा है'।

इसी प्रकार, 100 रुपये के स्मृति सिक्के पर एक ओर भारत का राष्ट्रीय चिह्न अंकित है। जबकि दूसरी ओर, सिंह के साथ वरद मुद्रा में भारत माता की सांस्कृतिक छवि और भारत माता को नमन करते स्वयंसेवकों को उकेरा गया है। प्रधानमंत्री मोदी कहते हैं कि स्वतंत्र भारत में पहली बार ऐसा हुआ है जब भारत की मुद्रा पर भारत माता की तस्वीर अंकित हुई है। सिक्के पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और संघ कार्य को अभिव्यक्त करनेवाला ध्येय वाक्य- 'राष्ट्राय स्वाहा, इदं राष्ट्राय, इदं न मम' लिखा हुआ है। संघ के स्वयंसेवक 'प्रसिद्धि परांगमुख भाव' से समाजहित में कार्य करते हैं। सेवा कार्यों को उपकार की तरह देखने की अपेक्षा स्वयंसेवक सेवा को करणीय कार्य के तौर पर देखते हैं। इसलिए संघ के स्वयंसेवक को श्रेय, यश की लालसा नहीं होती, उसके लिए राष्ट्रहित ही सर्वोपरि होता है। कहना होगा कि यह डाक टिकट एवं सिक्का, स्वयंसेवकों की अहं से वयं की यात्रा को अभिव्यक्त करते हैं।

इस प्रसंग पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने संघ की व्यापक दृष्टि को ऐतिहासिक उदाहरण देकर स्पष्ट किया। संघ के अधिकारी अकसर कहते हैं कि संघ संपूर्ण समाज को अपना मानता है। यही कारण है कि संघ ने अपने पर हुए हमलों को भुलाते हुए सबको गले लगाया है। प्रधानमंत्री मोदी उल्लेख करते हैं कि 'राष्ट्र साधना की यात्रा में ऐसा नहीं कि संघ पर हमले नहीं हुए, स्वतंत्रता के बाद भी संघ को मुख्यधारा में आने से रोकने के लिए षड्यंत्र हुए।

पूज्य गुरुजी को जेल तक भेजा गया। जब वे बाहर आए तो उन्होंने कहा था कि कभी-कभी जीभ दांतों के नीचे आकर दब जाती है, कुचल जाती है, लेकिन हम दांत नहीं तोड़ देते, क्योंकि दांत भी हमारे हैं, जीभ भी हमारी है'। नि:संदेह, संघ की यही दृष्टि उसको व्यापक बनाती है। संघ की 100 वर्ष की यशस्वी यात्रा के पीछे यही दृष्टिकोण है।

संघ को रोकने के लिए उस पर तीन-तीन बार प्रतिबंध लगाए गए, कार्यकर्ताओं को प्रताड़ित किया गया लेकिन इसके बाद भी संघ ने सबके साथ आत्मीय भाव से संवाद जारी रखा। उसका परिणाम भी आया, अनेक लोगों के हृदय परिवर्तन हुए। जो कभी संघ को कोसते थे, बाद में संघ में आए, संघ कार्य को आगे बढ़ाया और संघ की प्रशंसा भी की। प्रधानमंत्री मोदी उचित ही कहते हैं कि 'जिन रास्तों में नदी बहती है, उसके किनारे बसे गांवों को सुजलाम् सुफलाम् बनाती है। वैसे ही संघ ने किया। जिस तरह नदी कई धाराओं में अलग-अलग क्षेत्र में पोषित करती है, संघ की हर धारा भी ऐसी ही है।'

जयंती विशेष

डॉ. ब्रह्मदीप अलूने

(गांधी है तो भारत है,किताब के लेखक)

इस रावण से तो बापू भी हार गए...!

बापू बहुत आसान थे लिहाजा उनका जीवन भी बहुत आसान हो गया था। वे स्वयं की बुनी हुई खादी की साधारण धोती और साधारण चप्पल पहनते थे। सर्दियों में वे साधारण ऊनी शॉल का उपयोग करते थे,उनका भोजन फल,मूंगफली और बकरी का दूध था। लंदन में एक पत्रकार ने पूछा,आप इतने बड़े नेता होकर केवल एक धोती क्यों पहनते हैं? बापू बोले,मुझे तो पूरी दुनिया को ढकने की चिंता है,अपने शरीर को नहीं। असल में बापू ने अपने वस्त्रों को भारत की जनता के साथ एकरूपता के रूप में चुना। वे कहते थे कि जब तक भारत का गरीब किसान या मजदूर आधा नंगा है,तब तक मुझे भी अधिक कपड़े पहनने का कोई अधिकार नहीं। एक बार ट्रेन से सफर के दौरान बापू की एक चप्पल गिर गई। उन्होंने दूसरी भी उतारकर वहीं फेंक दी। जिससे किसी गरीब को दोनों चप्पलें मिल जाएँगी। बापू हमेशा तीसरे दर्जे में सफर करते। वे कहते थे कि मैं वही वर्ग चुनता हूँ जिसमें भारत के सबसे ज़्यादा लोग सफर करते हैं। भोजन को लेकर भी उनका साफ दृष्टिकोण था कि जिस देश में करोड़ों लोग भूखे हैं,वहां मुझे अधिक खाने का कोई अधिकार नहीं। धोती पहनना उनके लिए गरीब और मजदूरों के प्रति सम्मान और स्वदेशी का प्रचार था। आज़ादी के राजनीतिक आंदोलन के प्रणेता होकर भी बापू सामाजिक न्याय की स्थापना के लिए सदैव प्रयत्नशील रहे। वे रावण से बड़ा राक्षस अस्पृश्यता को मानते थे,बापू के तमाम प्रयासों के बाद भी भारतीय समाज से इस राक्षस का अंत नहीं हो पाया।

हिंद स्वराज में, महात्मा गांधी ने लिखा कि अगर स्वतंत्रता के साथ सामाजिक प्राथमिकताओं में व्यापक बदलाव नहीं आया तो यह निरर्थक होगी। बापू खुले तौर पर अंतर्जातीय भोज और अंतर्जातीय विवाह का समर्थन करते थे। बापू के लिए अंतर्जातीय भोज और विवाह केवल व्यक्तिगत विकल्प नहीं थे,बल्कि वे इन्हें सामाजिक सुधार का सबसे व्यावहारिक और साहसी साधन मानते थे। बापू के विचार में जब तक लोग एक-दूसरे के साथ बैठकर रोटी नहीं खाएँगे और पारिवारिक रिश्तों में जुड़ाव नहीं होगा,तब तक जाति-भेद केवल नारेबाज़ी से समाप्त नहीं होगा।

आज की स्थिति देखें तो राजनीतिक दल और नेता इस दिशा में सक्रिय पहल करने से बचते हैं। इसका कारण स्पष्ट है कि जातिगत समीकरण उनके वोट बैंक की राजनीति की रीढ़ हैं। यदि वे खुलकर अंतर्जातीय विवाह या भोज का समर्थन करेंगे तो उन्हें परंपरागत समर्थकों की नाराज़गी झेलनी पड़ सकती है। दूसरी ओर, समाज में भी अभी तक उतना सामूहिक साहस विकसित नहीं हो पाया है कि लोग इन प्रथाओं को सामान्य रूप से स्वीकार कर लें। व्यक्तिगत स्तर पर तो कई लोग आगे आ रहे हैं, लेकिन सामूहिक अभियान की कमी है। यही अंतर गांधी के समय और आज के समय को अलग करता है। बापू ने सामाजिक साहस को राजनीति से ऊपर रखा,जबकि आज राजनीति ही सामाजिक साहस को दबा देती है।

बापू ने जीवनभर जातिवाद और अस्पृश्यता को भारतीय समाज की सबसे बड़ी बुराई माना। उनके लिए मंदिर-प्रवेश,अंतर्जातीय भोज और विवाह केवल प्रतीकात्मक सुधार नहीं थे बल्कि सामाजिक क्रांति के व्यावहारिक साधन थे। इसी दृष्टि से 1946 में उन्होंने घोषणा की कि सेवाग्राम आश्रम में विवाह केवल उन्हीं जोड़ों का होगा,जिनमें से एक अस्पृश्य कहे जाने वाले समुदाय से हो। बापू का उद्देश्य जातिवाद पर सीधा प्रहार करके विवाह संबंध जातियों के बीच की दूरी खत्म करने का सबसे प्रभावी माध्यम है। बापू चाहते थे कि सेवाग्राम आश्रम सिर्फ उपदेश देने की जगह न रहे, बल्कि समाज-परिवर्तन की एक जीवंत प्रयोगशाला बने। बापू का पारंपरिक हिंदू समाज के कई वर्गों ने इसका विरोध किया। यह कहा गया कि गांधी समाज की प्राकृतिक व्यवस्था को तोड़ रहे हैं। यह नियम प्रतीकात्मक रूप से बहुत शक्तिशाली था,क्योंकि गांधी जैसी राष्ट्रीय और नैतिक प्राधिकार वाली शख्सियत ने इसे लागू किया था। इसने समाज में यह संदेश दिया कि समानता केवल उपदेश से नहीं,बल्कि व्यक्तिगत जीवन और रिश्तों में उतरनी चाहिए। बापू का यह निर्णय उस दौर में अत्यंत साहसिक था। स्वतंत्रता की लड़ाई के बीच भी उन्होंने जातिवाद को उतना ही बड़ा शत्रु माना जितना विदेशी शासन को। उनकी यह सोच आज भी प्रासंगिक है,क्योंकि सामाजिक असमानता केवल राजनीतिक आज़ादी से नहीं मिटती बल्कि रोज़मर्रा के रिश्तों और व्यवहारों में समानता स्थापित करने से मिटती है।

बापू न केवल अपने बेटे रामदास को एक अलग जाति से विवाह करने की अनुमति दी,बल्कि अपने दूसरे बेटे देवदास ने भी ऐसा ही किया। बापू ने अपनी दत्तक पुत्री लक्ष्मी,जो एक 'अछूत' थी,का

विवाह भी एक ब्राह्मण लड़के से किया। इसके अलावा, बापू ने अपनी जाति के लिए निषिद्ध कई कार्यों में महारत हासिल करने की कोशिश की। उन्होंने खुद मेहतर,नाई,धोबी,मोची और दर्जी के रूप में काम किया। तत्कालीन समाज की दृष्टि में ये सभी अशुद्ध काम थे। उन्होंने अपने परिवार को जूते बनाने,चमड़े का काम करने,शौचालय साफ करने जैसे कामों में लगाकर जाति आधारित काम की वर्जनाओं को तोड़ने के लिए भी मजबूर किया। बापू अपने आश्रम में बदलाव लाने में कामयाब रहे लेकिन आज़ाद भारत का संविधान उन बदलावों को लाने की अब भी बांट जोह रहा है। सुप्रीम कोर्ट ने बीते वर्ष अक्टूबर को एक ऐतिहासिक फ़ैसला सुनाया था। इस फ़ैसले में राज्य सरकारों और केंद्र सरकार को जेल के अंदर व्याप्त जातिगत भेदभाव ख़त्म करने का निर्देश दिया गया। दरअसल संविधान में समानता को मौलिक अधिकार बनाने के बाद भी जेल में जाति आधारित कार्य व्यवस्था को व्यवस्थागत तौर पर लागू करने की चेष्टा देखी गई।

एक उन्नीस बीस वर्ष का बिहार का रहने वाला युवक काम करने के लिए राजस्थान चला गया था। वह आईटीआई से डिप्लोमा कर चुका था। जेल जाने से पहले वह एक इलेक्ट्रीशियन के तौर पर काम कर रहा था। वह एक छोटी वर्कशॉप में काम कर रहा था,वहां चोरी की एक घटना हुई थी। उस युवक को हिरासत में ले लिया गया और गिरफ़्तार कर लिया गया। जेल में प्रवेश करते ही क़ैदी से उसकी जाति पूछी जाती है। इस युवक से भी उसकी जाति पूछी गई और उसने बता दी। उसने बताया कि वह अनुसूचित जाति में आता है,जिसके बाद उसे सफ़ाई का काम दिया गया। शुरुआत में उसे एहसास नहीं हुआ कि उसे उसकी जाति के कारण नौकरी दी गई थी। उसने बताया कि उसे लगा कि यह वही सज़ा होगी जो नए क़ैदियों को दी जाती है। लेकिन धीरे-धीरे उसे एहसास हुआ कि वह जो काम कर रहा था और जो लोग उसके साथ सफ़ाई कर रहे थे वे भी अनुसूचित जाति से थे। एक दिन जेल में सेप्टिक टैंक टूट गया। फिर उसे शौचालय का सेप्टिक टैंक साफ़ करने को कहा गया। युवक ने पहले कभी ऐसा नहीं किया था। जेल जाने से पहले वह इलेक्ट्रीशियन का काम करता था इसलिए उसे यह भी नहीं पता था कि उस टैंक में क्या करना है। वह ऐसा काम दिए जाने से सदमे में था। महाराष्ट्र,उत्तर प्रदेश,बिहार,पंजाब और तमिलनाडु जैसे राज्य जिनमें दलितों की एक बड़ी आबादी है। इन राज्यों में भी दलितों के अंतिम संस्कार रोक दिए जाने के मामले सामने आते रहते हैं। देश के पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद और उनकी पत्नी 18 मार्च 2018 को जगन्नाथ मंदिर गए थे। जहां उनके साथ दुर्व्यवहार किया गया था। इस मामले में राष्ट्रपति भवन के द्वारा असंतोष जाहिर करने के बाद भी कुछ नहीं हुआ।

आज़ादी के आठवें दशक का जश्न मना रहे भारत के पास अब बापू जैसा कोई नेता नहीं है जो राजनीतिक नेतृत्व करके अपने आचरण और व्यवहार से सामाजिक क्रांति और बदलावों का अग्रदूत बने और जिसमें परम्परावादी समाज को चुनौती देना का व्यापक साहस हो।

लिहाजा समाज का वंचित वर्ग सामाजिक न्याय को अदालतों से प्राप्त करना चाहता है। डॉ. भीमराव आंबेडकर का मानना था कि केवल ब्रिटिश शासन से आज़ादी पर्याप्त नहीं है। जब तक समाज में जातिगत भेदभाव,असमानता और छुआछूत जैसी बुराइयां बनी रहेंगी,तब तक आमजन के लिए आज़ादी का कोई वास्तविक अर्थ नहीं होगा। उन्होंने साफ़ कहा था कि राजनीतिक स्वतंत्रता का कोई मूल्य नहीं है यदि सामाजिक और आर्थिक समानता नहीं मिलती। इसीलिए वे संविधान सभा में भी लगातार चेताते रहे कि अगर सामाजिक लोकतंत्र स्थापित नहीं हुआ तो राजनीतिक लोकतंत्र भी टिक नहीं पाएगा। आंबेडकर ने यह भी कहा था कि जो दिशा पसंद है उस ओर जाइये लेकिन जाति दैत्य है जो हर जगह आपके आड़े आते रहेगी। हमारे देश में क़ानून तो बहुत हैं लेकिन समस्या सामाजिक मूल्यों की है। देश में अब भी दलितों और आदिवासियों को गैर बराबरी का सामना करते हुए कई समस्याओं से जूझना पड़ता है जबकि समाज का कथित प्रभावी तबका वंचितों को मनुष्यों का और बराबरी का दर्जा देने के लिए तैयार नहीं हैं। इसमें परिवर्तन हो रहा है लेकिन वो बहुत धीमा है। बापू अस्पृश्यता को समाज का राक्षस कहते थे। उन्होंने कई बार कहा था कि अगर भारत जातिवाद से मुक्त नहीं हुआ तो राजनीतिक आज़ादी अधूरी रहेगी।

ताहिर अली के 71वें जन्म-दिवस 3 अक्टूबर पर विशेष

सुरेश गुप्ता

पूर्व अपर संचालक, जनसंपर्क

तारीफ यही है कि वे ताहिर भाई हैं

जनसम्पर्क शैली ने बनाई पत्रकारों, राजनेताओं और प्रशासनिक अमले में पहचान

सैयद ताहिर अली संक्षेप में टी.ए. आज 71 वर्ष पूरे कर 72वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। प्रसंग जन्म-दिवस का है तो मित्र और सहकर्मियों द्वारा बधाई और शुभकामनाएँ देने के साथ ही व्यक्तित्व और कृतित्व के बारे में भी बात की जाना चाहिये।

जनसम्पर्क विभाग में ताहिर भाई ने विभिन्न पदों पर रहकर संयुक्त संचालक के पद से सेवानिवृत्ति तक 34 वर्ष बिताये। उनके सेवाकाल, जनसम्पर्क अधिकारी के रूप में उनकी दक्षता, कार्य-कुशलता के बारे में बात करने से पहले व्यक्ति ताहिर भाई को जान लें।

3 अक्टूबर, 1954 को भोपाल में उच्च शिक्षित और संस्कारित परिवार में जन्में ताहिर भाई ने विनम्र, सौम्य और व्यवहार कुशल व्यक्ति के रूप में जो पहचान बनायी है, वह बहुत कम लोगों को नसीब होती है। वे गंगा-जमुनी तहजीब को जीते रहे हैं और जी रहे हैं। अपनी इस पहचान और गुण से उन्होंने शासकीय जनसम्पर्क जैसे जटिल और दुरूह कार्य को भी इतना आसान बना लिया कि देखते ही बनता है। शायद ही कभी ऐसा हुआ होगा कि वे अपने जनसम्पर्कीय दायित्व के निर्वहन में (संकटकाल में भी) सफल नहीं रहे हों। नये जनसम्पर्क अधिकारी उनसे व्यवहार कुशलता और मीडियाकर्मियों से स्नेही संबंध तो सीख ही सकते हैं।

कभी-कभी अकेले व्यवहार कुशलता और मृदभाषी होना आपको हँसी का पात्र भी बना देता है परंतु ताहिर भाई के साथ ऐसा नहीं हुआ तो वह इसलिये कि संबंधों के निर्वहन में भी उनका कोई सानी नहीं है। दो-तीन उदाहरणों से इसे समझा जा सकता है- वे सन 1987 में छिंदवाड़ा में जिला जनसम्पर्क अधिकारी थे, कलेक्टर थे आईएएस श्री अंटोनी डिसा। सभी पीआरओ के कलेक्टर से अच्छे संबंध बन जाते हैं खासतौर से उनके जो जरा से भी काबिल हों। ताहिर भाई के श्री डिसा से संबंध उनके मुख्य सचिव बल्कि रेरा चेयरमेन बनने तक बरकरार रहे और आज भी हैं। कई और वरिष्ठ आईएएस से उनके साथ काम करने की वजह से ताहिर भाई के आत्मीय संबंध हैं। भारत के पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त श्री ओ.पी. रावत से भी संबंध और सम्पर्क बरकरार हैं। दूसरा जो मुझे याद आता है लंबे समय से प्रदेश मंत्रि-मण्डल के कई वरिष्ठ मंत्रियों के साथ उन्होंने काम किया जो उनसे जुड़े रहे।

वर्तमान उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल तक (जिनके साथ वे सेवानिवृत्ति के बाद भी उनके मीडिया सलाहकार के रूप में कार्य कर रहे हैं), ये श्रंखला जो 21 वर्ष है और बहुत लम्बी और संबंधों के निर्वहन की मिसाल भी है। ताहिर भाई एक बार जिसके हो गये तो हो गये फिर वे पूरे तन-मन-कर्म से उसके साथ हैं। आज कई तरह के इन्फ्लुएंसर विचरण कर रहे हैं पर मेरे मत में ताहिर भाई के आगे सब फीके हैं। उनके सामाजिक, राजनैतिक, शासकीय सम्पर्कों का इन्फ्लुएंस उनके साथ रहकर, उनके साथ काम करते हुए या उन्हें काम सौंपकर ही जाना जा सकता है। कहा तो यह भी जाता है कि उन्हें काम सौंपकर निश्चिंत हुआ जा सकता है। एक हद तक यह सही भी है। ताहिर भाई शासकीय सेवा से पहले क्या ओढ़ते-बिछाते थे, पता नहीं। शायद आम इंसानों की तरह चादर-रजाई ओढ़ते होंगे और सोने के लिये दरी-गद्दा बिछाते होंगे पर शासकीय सेवा में वे अपने काम को ही ओढ़ते-बिछाते रहे हैं, जिसका लाभ उन्हें कुशल जनसम्पर्क अधिकारी के तमगे के रूप में मिला है। वे परिश्रमी हैं तो कार्य-कुशल भी, कर्मठता को उन्होंने जिया है और जी रहे हैं। यह सही है कि ताहिर भाई आज दक्ष जनसम्पर्क अधिकारी माने जाते हैं और हैं भी। परंतु हमेशा ऐसा नहीं था, तो फिर सवाल उठता है कि फिर वे इतने लोकप्रिय और दक्ष कैसे हो गये। इसका जवाब है उनकी सीखने की, सहयोग लेने की, हमेशा अपने को एक पायदान नीचे रखकर, एक पायदान ऊँचे परिणाम देने की मनोवृत्ति। अच्छा काम करने, अच्छे परिणाम प्राप्त करने में सबका सहयोग लेने और सहयोग करने वाले का अकेले में नहीं हर उपयुक्त जगह और समय पर आभार जताने में ताहिर भाई ने कभी गुरेज नहीं किया। यही गुण उन्हें बड़ा और बिरला बनाता है। वे सीखकर अपना आज बना पाये हैं, विरासत से नहीं। पत्रकार भाइयों से आत्मीय संबंध रखने वाले ताहिर भाई यारबाज हैं, पुरलुफ्त हैं और हैं खुशदिल। शायद ही वे कभी उदास होते हों। यारबाजी तो कोई उनसे सीखे। साथ ही हिन्दू-मुस्लिम सभी त्यौहारों का, मांगलिक अवसरों का (घर-परिवार के साथ ही अपने नियर-डीयर) का जैसा लुत्फ वे लेते हैं, लुत्फ दिलाते हैं, बहुत कम लोग कर पाते हैं। अब तो अपने इकलौते पुत्र आसिम को भी उन्होंने अपनी इस रवायत का वारिस बना लिया है। अब जरा ताहिर भाई की पारिवारिक पृष्ठभूमि की बात कर लें, तो जनाब मशहूर शिक्षाविद् और इतिहासकार मरहूम डॉ. सैयद अशफाक अली के चश्म-ओ-चिराग हैं।

वहीं डॉ. अशफाक अली जो सेफिया कॉलेज के उरूज के समय 18 वर्ष कॉलेज के प्रिंसिपल रहे। उन्होंने भोपाल के इतिहास का सबसे पहला दस्तावेजीकरण Bhopal Past and Present लिखकर किया। ताहिर भाई ने जिस तरह विरासत और वर्तमान को साधा है, वह उन्हें नेकनीयत, पुरलुत्फ और यारबाज बनाने में मददगार रहा है और रहेगा। वे दीर्घायु हों, यही कामना है। भोपाल आज नहीं तो कल जरूर उन्हें अपने मरकज़ का हीरा मानेगा, इसी उम्मीद के साथ। अंत में तारीफ यही है कि वे ताहिर भाई हैं।

स्वच्छता और प्रकरणों के निराकरण के लिये विशेष अभियान आज से

लोक सेवा प्रबंधन को बनाया गया अभियान का नोडल विभाग

भोपाल (नप्र)। प्रदेश में सरकारी कार्यालयों में स्वच्छता को संस्थागत रूप देने और शासकीय कार्यालयों में लंबित प्रकरणों के निराकरण के लिये 2 अक्टूबर गांधी जंयती से 31 अक्टूबर 2025 तक विशेष अभियान चलाने का निर्णय लिया गया है। इस संबंध में सामान्य प्रशासन विभाग ने समस्त अपर मुख्य सचिव, विभागाध्यक्ष, संभाग आयुक्त, कलेक्टर और समस्त मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत को पत्र जारी कर निर्देश दिये हैं। केन्द्र सरकार के प्रशासनिक सुधार एवं लोक शिकायत विभाग ने 2 अक्टूबर से 31 अक्टूबर तक स्पेशल कैम्पेन 5.0 चलाने का निर्णय लिया है।

सेवा भाव और जवाबदेही को सुदृढ़ करना

इस अभियान का उद्देश्य सरकारी कार्यालयों में लंबित प्रकरणों, फाइलों और अपीलों का त्वरित और पारदर्शी निपटारा, कार्यालयों में स्वच्छता, कचरे का निस्तारण तथा ई-कचरे के वैज्ञानिक प्रबंधन को बढ़ावा देना है। विशेष अभियान के माध्यम से अधिकारी-कर्मचारियों में सेवा भाव तथा जवाबदेही को सुदृढ़ करना है, जिससे योजनाओं और सेवाओं की सुगम और पारदर्शी प्रक्रिया से सरकारी योजनाओं से लाभान्वितों की संख्या में वृद्धि की जा सके। अभियान में स्वच्छता और ई-कचरे के वैज्ञानिक निस्तारण से स्वच्छ व हरित शासन व्यवस्था स्थापित होगी। इस अभियान में विभागों, अधीनस्थ कार्यालयों, स्वायत्त निकायों, निगम मंडल और आयोग को शामिल किया गया है।

कार्यवाही के बिंदु

विशेष अभियान में सभी सरकारी कार्यालयों में सीएम हेल्पलाइन में लंबित शिकायतों का प्राथमिकता से निराकरण, कार्यालय परिसरों की सफाई और अनावश्यक वस्तुओं का निस्तारण, शासन निर्देशों के तहत पुराने रिकार्ड का डिजिटलीकरण और विनिष्टिकरण, लंबित विधानसभा प्रश्न, आश्वासन, शून्य काल, लोक लेखा समिति प्रकरणों, मुख्यमंत्री मॉनिट, मुख्य सचिव मॉनिट के निराकरण में तेजी लाये जाने के लिये भी कहा गया है। सरकारी कार्यालयों में ई-कचरे को अधिकृत एजेंसी मध्यप्रदेश राज्य इलेक्ट्रॉनिक विकास निगम के माध्यम से निस्तारित किया जाएगा। सरकारी कार्यालयों के अधिकारी-कर्मचारी अपने कार्यस्थल को साफ और व्यवस्थित रखें, इसकी जिम्मेदारी सुनिश्चित की जायेगी। शासकीय कार्यालयों में जनसुविधा में सुधार, वेटिंग एरिया में स्वच्छ वातावरण, पीने के पानी की सुविधा एवं इससे जुड़ी व्यवस्था को सुदृढ़ किया जायेगा।

लंबित प्रकरणों के लिये विशेष प्रयास

मुख्यमंत्री से मिले जर्मनी जाने वाले विचारपुर के 5 फुटबॉल खिलाड़ी

सीएम ने खिलाड़ियों को शुभकामनाएं देकर भेंट की फुटबॉल किट

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से बुधवार को मुख्यमंत्री निवास पर शहडोल जिले के मिनी ब्राजील के रूप में विख्यात ग्राम विचारपुर के 5 फुटबॉल खिलाड़ियों ने सौजन्य भेंट की। ये 5 फुटबॉल खिलाड़ी खेल एवं युवा कल्याण विभाग के माध्यम से अपनी महिला प्रशिक्षक के साथ जर्मनी के प्रतिष्ठित फुटबॉल क्लब एफसी स्र्रष्ट ढ्ढठ्ठद्दश्च्द्मह्लड्डस्त्रह्म 04 वर्ल्ड क्लास प्रशिक्षण के लिए जर्मनी जा रहे हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सभी खिलाड़ियों को बधाई देकर उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि यह देश और प्रदेश के लिए कुछ कर दिखाने का मौका है। इस स्वर्णिम अवसर का भरपूर लाभ उठाएं। मुख्यमंत्री ने सभी खिलाड़ियों को फुटबॉल किट भेंट की। उल्लेखनीय है कि प्रशिक्षक सुश्री लक्ष्मी सहीस के नेतृत्व में कुमारी सानिया कुण्डे (14 वर्ष), कुमारी सुहानी कोल (15 वर्ष), प्रीतम कुमार (14 वर्ष), वीरेन्द्र बैगा (16 वर्ष) और श्री मनीष घसिया (16 वर्ष) प्रशिक्षण लेने जर्मनी जा रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव से फुटबॉल खिलाड़ियों की भेंट के दौरान प्रमुख सचिव खेल एवं युवा कल्याण श्री मनीष सिंह, संचालक खेल श्री राकेश कुमार गुप्ता सहित खेल विभाग के अधिकारी उपस्थित थे।

गांधी जयंती पर भोपाल की 222 पंचायतों में होंगी सभाएं

पीएम आवास-भावांतर पर करेंगे चर्चा आयुष्मान के बारे भी बताएंगे

भोपाल (नप्र)। गांधी जयंती के मौके पर गुरुवार को भोपाल जिले की कुल 222 ग्राम पंचायतों में ग्राम सभाएं होंगी। इनमें पीएम आवास, भावांतर समेत कई योजनाओं के बारे में ग्रामीणों को जानकारी दी जाएगी। वहीं, दशहरा मिलन समारोह भी मनेगा। अगले दिन यानी, 3 अक्टूबर को हर गांव में सभाओं का आयोजन होगा। सभा को लेकर बुधवार को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए अफसरों को निर्देश दिए गए। भोपाल में कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह कॉन्फ्रेंस में शामिल हुए। वहीं, ग्राम पंचायतों में सभाओं को लेकर तैयारियां शुरू की गई। कलेक्टर सिंह ने बुधवार को संबंधित अधिकारियों की बैठक भी ली। नोडल अधिकारी संदीप कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि ग्राम सभा के आयोजन के दौरान संबंधित अधिकारी और जनप्रतिनिधि भी मौजूद रहेंगे। वहीं, गांवों में भी सभाएं होंगी।

इन विभागों की योजनाओं के बारे में देंगे जानकारी

*वन विभाग- 5 वर्ष की अवधि पूरी कर चुकी वन समितियों के पुनर्गठन पर चर्चा।

*खाद्य विभाग- खाद्यान्न वितरण समेत अन्य योजना के बारे में ग्रामीणों को बताएंगे।

पंचायत- पंचायत में ओएसआर सृजन बढ़ाने पर चर्चा होगी। अटल ई-सेवा केंद्र और ई-कोर्ट की स्थापना के बारे में बताया जाएगा। सिकल सेल एनीमिया पर चर्चा और श्मशान स्थलों को लेकर निर्देश जारी किए जाएंगे। इसके अलावा महिला सभा को मजबूत बनाने, नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देने पर जोर दिया जाएगा। पीएम आवास की जानकारी दी जाएगी।

राज्य रोजगार गारंटी परिषद- महिला श्रमिकों की भागीदारी बढ़ाने और जल गंगा संवर्धन अभियान एवं अमृत सरोवर 2.0 पर चर्चा होगी। लखपति दीदी इनिशिएटिव अंतर्गत वर्ष 2024-25 में लखपति श्रेणी में आई एवं सीएलएफ से सत्यापित लखपति दीदी की सूची का वाचन किया जाएगा।

सामाजिक न्याय विभाग- नशामुक्त भारत अभियान, पेंशन भोगी हितग्राही, दिव्यांगजनों के अधिकारों के बारे में भी बताया जाएगा।

स्वास्थ्य विभाग- आयुष्मान आरोग्य मंदिरों के जरिए दी जा रही 12 प्रकार की स्वास्थ्य सुविधाओं पर चर्चा होगी। पैथोलॉजिकल जांचें, औषधियां, जन आरोग्य समिति, स्वास्थ्य स्वच्छता समिति आदि के बारे में भी बताया जाएगा।

जिला पदाधिकारियों को वार्ड, मंडलम का प्रभारी बनाने का सुझाव

दिग्विजय ने उठाया सवाल, बोले- अब तक पीसीसी की एक्जिक्यूटिव कमेटी की ही बैठक नहीं हुई

भोपाल (नप्र)। भोपाल में प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में भोपाल जिला कांग्रेस की समन्वय समिति की बैठक हुई। इस बैठक में पूर्व सीएम दिग्विजय सिंह, भोपाल कांग्रेस के शहर अध्यक्ष प्रवीण सक्सेना, ग्रामीण अध्यक्ष अनोखी पटेल, अमित सक्सेना, अवनीश भार्गव, राजकुमार सिंह सहित जिले की समन्वय समिति के तमाम सदस्य मौजूद थे।

शहर की टीम में 105 और ग्रामीण में 56 से ज्यादा कार्यकर्ता नहीं होंगे- बैठक में कांग्रेस की जिला कार्यकारिणी अक्टूबर के महीने में घोषित करने और ब्लॉक अध्यक्ष घोषित करने को लेकर चर्चा हुई। भोपाल शहर की कार्यकारिणी में सदस्यों सहित 105 से ज्यादा कार्यकर्ता नहीं होंगे। वहीं भोपाल ग्रामीण जिला कांग्रेस की कार्यकारिणी में 56 से ज्यादा कार्यकर्ता शामिल नहीं होंगे।

प्रदेश कार्यकारिणी की ही बैठक नहीं हुई

समन्वय समिति की बैठक में एक सदस्य ने सुझाव दिया कि जिला कांग्रेस कमेटी की कार्यकारिणी के पदाधिकारियों को वार्ड और मंडलम का प्रभारी बनाया जाना चाहिए। इससे माइक्रो लेवल तक जिला स्तर के नेता निगरानी कर सकेंगे। इस पर बैठक में मौजूद पूर्व सीएम दिग्विजय सिंह ने कहा- अभी पीसीसी की एग्जिक्यूटिव कमेटी की मीटिंग तो अब तक हुई नहीं हैं। पीसीसी में कार्य विभाजन नहीं हुआ है। वैसे डीसीसी के सदस्यों को वार्ड, मंडलम की जिम्मेदारी देने का सुझाव ठीक है।

इन मुद्दों पर भी हुई चर्चा

जिला कांग्रेस कार्यालय के लिए गुरबख्श की तलैया में पहले से आवंटित जमीन को लेकर कहा गया कि उस जगह की देखरेख न होने के कारण वहां अवैध कब्जा हो गया है। नगर निगम ने वहां टंकी बना दी है। राजस्व अमले से चर्चा करके जिला कांग्रेस कार्यालय की जमीन का सीमांकन कराना चाहिए।

वोटर लिस्ट पर भी निगरानी रखें

बैठक में दिग्विजय सिंह ने कहा- वोटर लिस्ट सबसे महत्वपूर्ण है। मतदाता पुनरीक्षण के काम में कार्यकर्ताओं को सजगता से निगाह रखनी चाहिए। बीएलओ से संपर्क करके यह देखा जाना चाहिए कि कहां कितने फर्जी वोटर जुडे हैं।

आजीविका मिशन से जुड़ी महिलाओं ने प्राकृतिक पेंट बनाकर की अनूठी पहल : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

पर्यावरण-संरक्षण और आर्थिक सशक्तिकरण की मिसाल

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'लोकल फॉर वोकल' के मंत्र और महिला सशक्तिकरण संकल्प को प्रदेश की महिलाओं ने सार्थक कर दिखाया है। ग्वालियर की आजीविका मिशन से जुड़ीं महिलाओं ने बडी, पापड़, अगरबत्ती और अचार से भी आगे बढ़कर अब गोबर से प्राकृतिक पेंट निर्माण की अनूठी पहल कर महिला सशक्तिकरण का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया है।

गोबर से प्राकृतिक पेंट- ग्वालियर जिले के भितरवार विकासखंड की खेड़ापति स्व-सहायता समूह की सक्रिय सदस्यों ने एकजुट होकर गोबर से प्राकृतिक पेंट बनाने का कार्य प्रारंभ किया। उनके द्वारा किए गए नवाचार को न केवल सराहा गया, बल्कि उन्हें आर्थिक संबल भी मिला। उनका यह कार्य पर्यावरण-संरक्षण की दिशा में भी एक अनुकरणीय पहल है।

आजीविका मिशन से जुड़ी महिलाओं ने प्राकृतिक पेंट बनाकर एक अनोखी और सफल पहल की है। इस पहल से महिलाओं को न केवल अतिरिक्त आय का साधन मिला है बल्कि पर्यावरण-संरक्षण की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान हुआ है। यह पेंट गोबर से बनाया जाता है।

इसमें किसी भी प्रकार के हानिकारक केमिकल का उपयोग नहीं होता। इस कारण यह स्वास्थ्य और पर्यावरण के लिए पूरी तरह सुरक्षित है और दीवारों को आकर्षक रंग भी प्रदान करता है। साथ ही मात्र 4 घंटे में दीवार पर लगा ये पेंट सूख भी जाता है।

कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान ने समूह की महिलाओं को इस कार्य के लिए प्रेरित कर तकनीकी प्रशिक्षण एवं विपणन (मार्केटिंग) में भी आवश्यक सहयोग उपलब्ध कराया। जिले के भितरवार ब्लॉक के ग्राम करहिया में गठित खेड़ापति स्व-सहायता समूह के सक्रिय सदस्यों ने आजीविका मिशन के माध्यम से आत्मनिर्भर की सच्ची मिसाल पेश की है। प्राकृतिक पेंट का उत्पादन स्थानीय स्तर पर रोजगार के साथ पर्यावरण-अनुकूल विकल्प साबित हो रहा है। और समूह की महिला सदस्य आर्थिक रूप से सशक्त हो रही हैं। समूह की सदस्य श्रीमती संध्या कहती हैं कि हम पहले केवल घर तक सीमित थे, लेकिन अब अपने हाथों से बने पेंट को बेचकर अच्छा मुनाफा प्राप्त कर रहे हैं। इससे बच्चों की पढ़ाई और घर के खर्च में मदद मिल रही है। प्राकृतिक पेंट बनाने की ट्रेनिंग से हमें नया हुनर मिला है। लोग हमारे पेंट की सराहना कर रहे हैं, जिससे हमें आगे और काम करने की प्रेरणा मिलती है। प्रशासन अब इस उत्पाद को सरकारी कार्यालयों एवं संस्थानों में भी उपयोग हेतु बढ़ावा देने की दिशा में कदम उठा रहा है।

मुख्यमंत्री निवास में हुआ कन्या पूजन

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कन्याओं को तिलक लगाकर, चुन्नी ओढ़ाकर स्नेह पूर्वक कराया भोज

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शारदीय नवरात्र की महानवमी पर बुधवार को मुख्यमंत्री निवास में कन्या-पूजन कर भोजन कराया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कन्याओं का तिलक कर पांव पखारे। उन्होंने कन्याओं को चुनरी ओढ़ाकर आरती की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कन्याओं से संवाद कर उन्हें दुलार भी किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कन्या-पूजन के बाद कन्याओं को स्वयं अपने हाथों से भोजन परोसा और बड़े मनुहार से कन्याओं की रूचि के अनुरूप खीर, पूरी और मिष्ठान भी खिलाये। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कन्या भोज के बाद सभी कन्याओं को उपहार देकर उनका शुभाशीष लिया।

आपदा में सबसे पहले खड़े होते हैं स्वयं सेवक: हितानंद

आरएसएस की शताब्दी यात्रा ; शिक्षा, समाज सेवा, संस्कृति और राजनीति में है भूमिका

भोपाल (नप्र)। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश संगठन महामंत्री हितानंद शर्मा ने कहा कि देश में प्राकृतिक आपदा या किसी संकट के समय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक सबसे पहले सेवा कार्य के लिए खड़े रहते हैं। 1925 में नागपुर से शुरू हुआ यह संगठन आज विश्व का सबसे बड़ा संगठन बन चुका है। स्वयंसेवकों की तपस्या और समर्पण ने इसे मजबूत बनाया है।

शर्मा ने बताया कि स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर आज तक संघ ने व्यक्ति निर्माण और राष्ट्र निर्माण का कार्य किया है। शिक्षा, समाज सेवा, संस्कृति और राजनीति के क्षेत्र में इसकी भूमिका महत्वपूर्ण रही है। संगठन ने जम्मू-कश्मीर से धारा 370 हटाने और अयोध्या में राम मंदिर निर्माण जैसे महत्वपूर्ण राष्ट्रीय संकल्पों में भी सक्रिय योगदान दिया।

उन्होंने कहा कि संघ की शाखाएं व्यक्ति निर्माण की नर्सरी हैं, जहां अनुशासन, नेतृत्व और कर्तव्यनिष्ठा सिखाई जाती है। उन्होंने कहा कि ताब्दी वर्ष में संघ पंच-परिवर्तन के माध्यम से स्वदेशी, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक समरसता और परिवार प्रबोधन का संदेश जन-जन तक पहुंचा रहा है। हितानंद ने कहा कि 2026 में संघ के शताब्दी वर्ष के पूर्ण होने पर हर भारतीय राष्ट्रयज्ञ में अपनी भूमिका निभाए और भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने में योगदान दे।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की 100 वर्षों की यात्रा वास्तव में राष्ट्र जागरण की ध्येय यात्रा है। वर्ष 1925 में विजयादशमी के दिन नागपुर के मोहिते बाड़ा में रोपा गया राष्ट्र साधना का छोटा-सा बीज आज एक विशाल वटवृक्ष बन चुका है। राष्ट्र प्रथम के एकनिष्ठ भाव के साथ किए जा रहे सतत और अनथक प्रयासों के कारण संघ आज विश्व का सबसे बड़ा संगठन बन गया है।

राष्ट्र, संस्कृति, धर्म एवं समाज के हित में सर्वस्व अर्पण करने वाले स्वयंसेवक भारत के पुनरुत्थान की साधना में निरंतर लगे हुए हैं। संघ का शताब्दी वर्ष 'चरैवेति-चरैवेति' के मंत्र के साथ बढ़ते हुए उसके वैचारिक अधिष्ठान का एक महत्वपूर्ण सोपान है।

संघ के आद्य सरसंघचालक, परम पूजनीय डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार द्वारा स्थापित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का उद्देश्य भारत को स्वाधीन बनाने के साथ-साथ स्वबोध की चेतना से युक्त एक संगठित समाज का निर्माण करना था। मां भारती को परम वैभव पर आसीन करने की यह शताब्दी यात्रा सरल नहीं रही। अनेक कठिनाइयों, विरोधों और बाधाओं को मार्ग बनाते हुए संघ ने भारत माता की सेवा में व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण का कार्य निरंतर जारी रखा है।

संघ ने समाज को देश की सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ने का कार्य किया- स्वतंत्रता संग्राम और स्वतंत्रता के पश्चात संघ ने समाज को देश की सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ने का कार्य किया। जब स्वतंत्रता के बाद भी औपनिवेशिक मानसिकता से प्रेरित, गुलाम पीढ़ी तैयार करने वाली मैकाले शिक्षा पद्धति जारी रही, तब संघ की प्रेरणा से 1952 में विद्या भारती की स्थापना की गई। यह संस्था आज शिक्षा और संस्कार देने वाला विश्व का सबसे बड़ा अशासकीय शैक्षणिक संगठन बन चुकी है।

युवाओं को राष्ट्रीय विचारों से जोड़ने के लिए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, श्रमिकों के हित में भारतीय मजदूर संघ, किसानों के लिए भारतीय किसान संघ, सेवा कार्यों के लिए सेवा भारती, और कला-संस्कृति के लिए संस्कार भारती जैसे अनेक संगठनों की स्थापना संघ की प्रेरणा से हुई। 1936 में स्थापित राष्ट्र सेविका समिति के साथ मिलकर संघ ने महिलाओं की भूमिका को भी समान महत्व दिया। आज विचार परिवार के प्रत्येक संगठन में महिला नेतृत्व की सशक्त उपस्थिति इसी दृष्टिकोण का प्रतिफल है।

हम सब भी इस राष्ट्र यज्ञ में अपने कर्तव्यों रूपी समिधा अर्पित करें

'पूर्ण विजय संकल्प हमाराअनथक, अविरत साधना।निषिदिन, प्रतिपल चलती आयीराष्ट्रधर्म आराधना।'

आज जब भारत नए आत्मविश्वास और स्वाभिमान के साथ वैश्विक मंच पर खड़ा है, तब संघ की यह सौ वर्षीय यात्रा केवल एक संगठन की कथा नहीं, बल्कि उस विचार की गौरवगाथा है जिसने राष्ट्र को आत्मबोध, संगठन और संस्कृति की शक्ति से जोड़ा है।

इस अवसर पर प्रत्येक स्वयंसेवक और नागरिक को यह संकल्प लेना चाहिए कि वह भारत माता को परम वैभव पर आसीन करने हेतु अपना समर्पण सुनिश्चित करेगा।संघ शताब्दी वर्ष की समस्त स्वयंसेवकों और देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं।

बीजेपी ने किए ऐतिहासिक काम

स्वतंत्रता के पश्चात जब भारतीय राजनीति अपने मूल और दिशा से भटकने लगी और देश की संप्रभुता संकट में पड़ी, तब पंडित दीनदयाल उपाध्याय और डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने भारतीय जनसंघ की स्थापना की। यह जनसंघ आगे चलकर भारतीय जनता पार्टी के रूप में विकसित हुआ, जो वर्तमान में विश्व का सबसे बड़ा राजनीतिक संगठन है। इस संगठन ने जम्मू-कश्मीर से धारा 370 की समाप्ति, अयोध्या में भव्य राम मंदिर का निर्माण और भारत की वैश्विक प्रतिष्ठा को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने जैसे ऐतिहासिक कार्य किए हैं। संघ की सौ वर्षों की यात्रा कठिन चुनौतियों से भरी रही है। आरंभिक काल से ही संघ को अपनों के विरोध, आक्रमण, उपहास और अपमान का सामना करना पड़ा। महात्मा गांधी की हत्या का मिथ्या आरोप, दो बार लगाए गए प्रतिबंध, आपातकाल की असहनीय यातनाएं इन सभी के बावजूद संघ अपने संकल्पों पर अडिग रहा। इस साधना की यज्ञवेदी पर असंख्य स्वयंसेवकों ने अपनी आहुति दी है। स्वयंसेवकों की तपस्या और प्रचारकों के समर्पण ने संघ को उस ऊँचाई तक पहुँचाया है जहाँ आज विश्वभर में लोग संघ को जानना और उससे जुड़ना चाहते हैं।

भारत के गौरवशाली स्वर्णिम इतिहास, संस्कृति और ज्ञान-परंपरा की संघरूपी वटवृक्ष की जड़ें बहुत गहराई तक फैली हुई हैं। संघ की शाखाएं संगठन की आत्मा हैं। आज यह वाक्य आम हो चुका है कि संघ को समझना है तो शाखा में जाना होगा। शाखा को व्यक्ति निर्माण की नर्सरी कहा जाता है। इसके माध्यम से स्वयंसेवकों का शारीरिक, मानसिक और चारित्रिक विकास होता है। खेल, गीत, अनुशासन और बौद्धिक कार्यक्रमों के द्वारा उन्हें नेतृत्व, बंधुत्व, अनुशासन और कर्तव्यनिष्ठा की प्रेरणा मिलती है।

शाखाओं के माध्यम से समाज का ऐसा संगठन खड़ा हुआ है कि देश में कहीं भी आपदा, संकट या विदेशी आक्रमण की स्थिति हो- संघ के स्वयंसेवक सबसे पहले सेवा कार्य के लिए उपस्थित होते हैं। गुजरात के भुज में आए भूकंप से लेकर हाल की भीषण बाढ़ और कोरोना महामारी तक, स्वयंसेवकों ने भोजन, दवाइयाँ, परिवहन, रक्तदान से लेकर अंतिम संस्कार तक में निःस्वार्थ भाव से सेवा दी है। इससे पूर्व स्वतंत्रता संग्राम, गोवा मुक्ति आंदोलन, कश्मीर के भारत में विलय और 1962 के चीन आक्रमण जैसे ऐतिहासिक क्षणों में भी संघ की भूमिका उल्लेखनीय रही है।

शताब्दी वर्ष संघ की संकल्प यात्रा को और अधिक गति देने का अवसर है। वर्तमान में संघ 'पंच परिवर्तन' के माध्यम से स्वदेशी, पर्यावरण संरक्षण, नागरिक कर्तव्यों, सामाजिक समरसता और परिवार प्रबोधन जैसे विषयों को जन-जन तक पहुँचा रहा है। शताब्दी वर्ष पर कोई भव्य आयोजन करने के बजाय संघ हर नागरिक तक पहुँचकर उसे अपने परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रति कर्तव्यों का बोध कराने में जुटा है।

ट्रेन से कटे सगे भाई, मौत

छोटे भाई को सुसाइड से बचाने गया बड़ा भाई, मौत देखकर छोटा भाई भी मालगाड़ी के नीचे आया

शहडोल (नप्र)। शहडोल में मुड़ना पुल रेलवे ट्रैक पर मालगाड़ी से कटकर दो भाइयों की मौत हो गई। छोटा भाई आत्महत्या के इरादे से ट्रैक पर लेटा था, बड़ा उसे बचाने पहुंचा था। इसी दौरान मालगाड़ी आ गई और बड़ा भाई ट्रेन की चपेट में आ गया।

यह देखकर छोटा भाई भी मालगाड़ी के पहियों के नीचे कूद गया। वह गंभीर रूप से घायल हो गया। जबलपुर ले जाते समय रास्ते में उसकी मौत हो गई। घटना मंगलवार-बुधवार की दरमियानी रात करीब 3 बजे की है।

जीआरपी ने बताया कि मृतकों की पहचान पुरानी बस्ती निवासी सुरेश सोनी (32) और सचिन सोनी (35) के रूप में हुई है। सुरेश सोनी मेडिकल कॉलेज शहडोल के साइकिल स्टैंड में पर्ची काटने का काम करता था। वहीं सचिन भी दिहाड़ी का काम करता था। सुरेश की इसी साल 20 अप्रैल को शादी हुई थी।

पत्नी से विवाद, भाई से कहा- जीना नहीं चाहता- जीआरपी थाना प्रभारी आरएम झरिया ने बताया कि मंगलवार रात को सुरेश का पत्नी से विवाद हो गया था। घर पर झगड़े के बाद वह दुर्गा पंडाल में आकर बैठ गया। यहां उसका बड़ा भाई सचिन भी मौजूद था। उससे कहा- मैं अब जीना नहीं चाहता। आत्महत्या कर लूंगा। ये सुनकर सचिन ने उसे समझाने की कोशिश की, लेकिन वह नहीं माना। सुसाइड के इरादे से रेलवे ट्रैक की ओर चल दिया। उसके पीछे-पीछे सचिन भी मुड़ना नदी पुल के ऊपर स्थित रेलवे ट्रैक पहुंच गया। यहां जान देने के इरादे से सुरेश ट्रैक पर लेट गया।

ट्रैक से उठने के लिए आवाज दी, वह नहीं उठा- सचिन ने सुरेश को ट्रैक से उठने के लिए आवाज दी, लेकिन वह नहीं उठा। इस बीच, कटनी की तरफ से गुड्स ट्रेन (मालगाड़ी) आ गई। सचिन ने ट्रैक से सुरेश को खींचकर बाहर कर दिया। इस दौरान वह खुद ट्रेन की चपेट में आ गया। उसकी मौके पर मौत हो गई।यह देखकर सुरेश भी चलती ट्रेन के पहियों के बीच कूद पड़ा।